कोंपल

भाग– 3

पाँचवीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक

Developed by: ABSOL www.absol.in

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), शिक्षा विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

सर्व शिक्षा अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत
पाठ्य-पुस्तकों का निःशुल्क वितरण।
क्रय-विक्रय दण्डनीय अपराध।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

सर्व शिक्षा अभियान : 2013-14 - 28,15,503

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800001 द्वारा प्रकाशित तथा मणी प्रिण्टर्स, बबुआगंज, पटना 800 007 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोभ टेक्स्ट पेपर (वाटर मार्क) तथा एच.पी.सी. के 130 (ह्वाईट) आवरण पेपर पर कुल **11,53,518** प्रतियाँ 18 x 24 सेमी साइज में मुद्रित।

प्राक्कथन

शिक्षा विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा IX हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इस क्रम में शैक्षिक सत्र 2010-11 के लिए वर्ग I, III, IV एवं X की सभी भाषायी एवं गैर भाषायी पाठ्य पुस्तकें नए पाठ्यक्रम के अनुरूप लागू की गयीं। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग X की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग I, III, VI एवं X की सभी अन्य भाषायी एवं गैर भाषायी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की गयीं। इस सिलसिले की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए शैक्षिक सत्र 2011-12 के लिए वर्ग-II, IV एवं VII तथा शैक्षिक सत्र 2012-13 के लिए वर्ग V एवं VIII की नई पाठ्य-पुस्तकें बिहार राज्य के छात्र/छात्राओं के लिए उपलब्ध करायी गयीं। साथ-ही-साथ वर्ग I से VIII तक की पुस्तकों का नया परिमार्जित रूप भी शैक्षिक सत्र 2013-14 के लिए एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के सौजन्य से प्रस्तुत किया जा रहा है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार, शिक्षा मंत्री, श्री पी०के० शाही एवं शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव, श्री अमरजीत सिन्हा के मार्ग दर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

जे. के. पी. सिंह, भा.रे.का.से.
प्रबन्ध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लि०

दिशा -बोध-सह-पाठ्यपुस्तक विकास समन्वय समिति

- **श्री राहुल सिंह**, राज्य परियोजना निदेशक, बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना
- **श्री रामशरणागत सिंह**, संयुक्त निदेशक, शिक्षा विभाग, बिहार सरकार विशेष कार्य पदाधिकारी, बी.एस.टी.बी.सी., पटना
- **श्री अमित कुमार**, सहायक निदेशक, प्राथमिक शिक्षा निदेशालय, बिहार सरकार
- **डॉ. श्वेता सांडिल्य**, शिक्षा विशेषज्ञ, यूनिसेफ, पटना
- **श्री हसन वारिस**, निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **श्री मधुसूदन पासवान**, कार्यक्रम पदाधिकारी बिहार शिक्षा परियोजना परिषद, पटना
- **डॉ. एस.ए. मुईन**, विभागाध्यक्ष एस.सी.ई.आर.टी., पटना
- **डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी**, प्राचार्य मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

विषय विशेषज्ञ :

- **डॉ० उषा शर्मा,** एसोसिएट प्रोफेसर, एन० सी० ई० आर० टी०, नई दिल्ली
- **डॉ० निरंजन सहाय,** एसोसिएट प्रोफेसर, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी (उ० प्र०)
- **श्री विरेन्द्र सिंह रावत,** शिक्षाशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

लेखक सदस्य :

- **श्री आदित्य नाथ ठाकुर,** सहायक शिक्षक, रा० माउंट एवरेस्ट मध्य विद्यालय कंकड़बाग, पटना
- **श्री उमा शंकर सिंह,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय मस्तपुरा, बोधगया, गया
- **श्री क्रीत प्रसाद,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय चंडासी, नूरसराय, नालन्दा
- **श्रीमती कुमारी प्रेमलता,** सहायक शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय करोड़ीचक, फुलवारीशरीफ, पटना
- **श्री मनीष कुमार राय,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय कनवा पाड़ा, कस्बा, पूर्णिया
- **श्री मनीष रंजन,** सहायक शिक्षक, प्राथमिक विद्यालय मित्तनचक मुसहरी, सम्पतचक, पटना
- **श्रीमती माधुरी लता,** मध्य विद्यालय हथसारगंज, हाजीपुर, वैशाली
- **श्री सुमन कुमार सिंह,** सहायक शिक्षक, मध्य विद्यालय कौड़िया वसंती, भगवानपुरहाट, सिवान
- **श्री पुष्पराज,** विद्या भवन, उदयपुर
- **श्री कुमार अनुपम मिश्र,** विद्या भवन, उदयपुर

समन्वयक :

- **डा० अर्चना, व्याख्याता,** एस० सी० ई० आर० टी०, पटना

समीक्षक :

- **डा० कलानाथ मिश्र,** हिंदी विभाग, ए० एन०, कॉलेज, पटना
- **डा० सच्चिदा कुमार 'प्रेमी',** प्राचार्य, टिकारी राज इण्टर विद्यालय, टिकारी (गया)

आरेखन एवं चित्रांकन :

- **श्री सदानंद सिंह,** धंधुआ, वैशाली

आभार : यूनिसेफ, बिहार

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 और बिहार की पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2008 के आलोक में निर्मित ''कोंपल, भाग-3'', नवीन पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार की गई है। पाठ्यचर्याओं का मानना है कि शिक्षार्थी के स्कूली जीवन और स्कूल के बाहर के जीवन में अंतराल नहीं होना चाहिए। किताब और किताब से बाहर की दुनिया आपस में गुँथी हुई होनी चाहिए। इस पुस्तक के विकास में इस बात का ध्यान रखा गया है कि 'शिक्षा का मतलब बिहार के स्कूली शिक्षार्थियों को इतना सक्षम बना देना है कि वे अपने जीवन का सही-सही अर्थ समझ सकें, अपनी समस्त योग्यताओं का समुचित विकास कर सकें, अपने जीवन का मकसद तय कर सकें और उसे प्राप्त करने हेतु यथासंभव सार्थक एवं प्रभावी प्रयास कर सकें और साथ ही साथ इस बात को भी समझ सकें कि समाज के दूसरे व्यक्ति को भी ऐसा ही करने का पूर्ण अधिकार है।'

भाषा सीखने-सिखाने का मुख्य उद्देश्य है- विभिन्न संदर्भों में भाषा का प्रभावी प्रयोग करना। प्रयोग से उपजी इस भाषायी आदत को सुदृढ़ करने का कार्य करती है - शिक्षाशास्त्रीय पद्धतियाँ और सामग्री। जिनमें से पाठ्य-पुस्तक एक महत्त्वपूर्ण सामग्री मानी जाती है। ''कोंपल, भाग-3'', का समस्त कलेवर इस तरह से रचा बुना गया है जिससे बच्चों को हिंदी भाषा की विभिन्न रंगतों से परिचित होने का अवसर मिल सके और भाषा-प्रयोग का भी। जहाँ तक भाषा प्रयोग का सवाल है, उसके लिए महत्त्वपूर्ण है - परिचित और सार्थक संदर्भ। इस पाठ्य-पुस्तक में बच्चों के परिवेश और अनुभवों को विशिष्ट स्थान दिया गया है। यह कोशिश की गई है कि बच्चों की दुनिया की भाषा और पाठ्य-पुस्तक की भाषा में गहरी खाई न हो। साथ ही बिहार की स्थानीय भाषाओं के साथ अन्य भारतीय भाषाओं की रचनाएँ भी इस पुस्तक में शामिल की गई हैं। अन्य भाषाओं से अनूदित पाठ भारत की सामासिक संस्कृति से परिचित कराते हैं।

बच्चों के जीवन की विभिन्न संवेदनाओं, छवियों, रंगतों से सराबोर इस पाठ्यपुस्तक की विषय वस्तु के रंग भी अनंत है । जहाँ कुछ रचनाएँ बच्चों को अपने परिवेश को समझने, चिंतन करने सोचने-समझने के लिए अवसर देती है। वहीं दूसरी ओर हास्य के पुट वाली रचनाएँ बच्चों को किताब के पन्ने पलटने के लिए प्रेरित करती है । इस पुस्तक के माध्यम से साहित्य की विभिन्न विधाओं-कहानी, कविता, पत्र, नाटक, जीवनी आदि से जुड़ने का अवसर मिलता है। बाल मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए चुनी गई रचनाएँ बच्चों को रोचक लगेंगी ।

इस पाठ्यपुस्तक में दिए गए अभ्यास यह अवसर प्रदान करते हैं कि बच्चे पाठ के साथ-साथ उससे आगे जाकर भी चिंतन, तर्क, कल्पना, अनुमान आदि क्षमताओं का विकास कर सकें ।

शिक्षकों को यह ध्यान में रखना होगा कि पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास भाषा सीखने सीखाने से जुड़े कक्षायी अभ्यासों का हिस्सा बन सकते हैं। इन अभ्यासों को केवल पाठ के अंत में ही स्थान देने की प्रवृत्ति से बचना होगा। बिहार के बहुभाषिक संदर्भ को ध्यान में रखते हुए बच्चों को अलग-अलग भाषायी रंगों की सराहना करने और अपनी भाषा में अभिव्यक्ति करने का अवसर देते हैं । कल्पना, सृजन से जुड़े अभ्यास बच्चों के सौंदर्यबोध और कलात्मकता को विकसित करने में सहायक होंगे ।

भाषायी संदर्भ से उपजा व्याकरण बच्चों को हिन्दी भाषा से जुड़े नियमों का अवलोकन करने, समझने और संदर्भयुक्त प्रयोग करने की कुशलता प्रदान करेंगे। इसके साथ ही भाषा के आधारभूत कौशलों – सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना–को विकसित करने की भरपूर गुंजाइश इस पुस्तक में है। सवाल करने की संस्कृति को बढ़ावा देते हुए शिक्षक बच्चों को पाठ पर आधारित सवाल बनाने के लिए प्रेरित करें। रोचक गतिविधियाँ बच्चों की उत्सुकता को बढ़ाएँगी और तनावमुक्त रीति से पढ़ते हुए आनन्द लेने का अवसर देंगी। जीवन को बेहतर तरीके से जीने के लिए आवश्यक जीवन–कौशलों जैसे – समस्या –समाधान, निर्णय लेने की क्षमता, तार्किक–चिंतन, सृजनात्मक चिंतन, तदनुभूति आदि के विकास की अपार संभावनाएँ इस पाठ्यपुस्तक में यहाँ–वहाँ फैली हुई हैं। जरूरत है तो इस बात की कि शिक्षक इन संभावनाओं की पहचान करते हुए बच्चों में इनके विकास के लिए प्रयासरत हों।

इस पुस्तक में बच्चों द्वारा सवाल करने और उनका उत्तर ढूँढ़ पाने के मौलिक अधिकार का समुचित संरक्षण और उसे रचनात्मक दिशा देने की कोशिश की गयी है। साथ ही बच्चों को न सिर्फ पूरा भागीदार माना गया है बल्कि उन्हें भागीदार बनाने के पर्याप्त मौके भी दिए गए हैं।

हिन्दी पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना में विभागीय पदाधिकारियों, संकाय सदस्यों, विषय विशेषज्ञों, भाषा कार्यशालाएँ एवं प्रारंभिक शिक्षकों की विभिन्न कार्यशालाएँ आयोजित की गयीं। इसमें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् बिहार, यूनिसेफ, बिहार, विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर (राजस्थान), एकलव्य (भोपाल) एवं अन्य महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों से प्रकाशित पुस्तकों का अध्ययनकर राज्य के प्रारंभिक स्तर के शिक्षक समूह द्वारा पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार की गई। परिषद् इन सबके प्रति आभार प्रकट करती है। विकसित पुस्तक को पाठ्यपुस्तक विकास समिति से जुड़े प्रारंभिक शिक्षकों द्वारा विद्यालयों एवं संकुल स्तरीय शैक्षिक गोष्ठियों में ट्रायल के पश्चात प्राप्त सुझावों में विषय विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों द्वारा समीक्षोपरांत पुस्तक कोंपल भाग–3 परिष्कृत स्वरूप में प्रस्तुत है।

हम पाठ्यपुस्तक के विकास में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सम्बद्ध शिक्षकों, विषय विशेषज्ञों, सुप्रसिद्ध साहित्यकारों, जिनकी रचनाएँ इस पुस्तक में शामिल की गई हैं, उनके प्रति आभार प्रकट करते हैं।

माननीय शिक्षकों एवं बुद्धिजीवियों से जो महत्त्वपूर्ण सुझाव हमें प्राप्त हुए उन्हें इस पुस्तक में यथास्थान संशोधित कर दिया गया है। पुनश्च, उत्तरोत्तर बेहतरी हेतु आपके सुझावों की प्रतीक्षा में।

हसन वारिस

निदेशक,

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् पटना

1. हिंद देश के निवासी

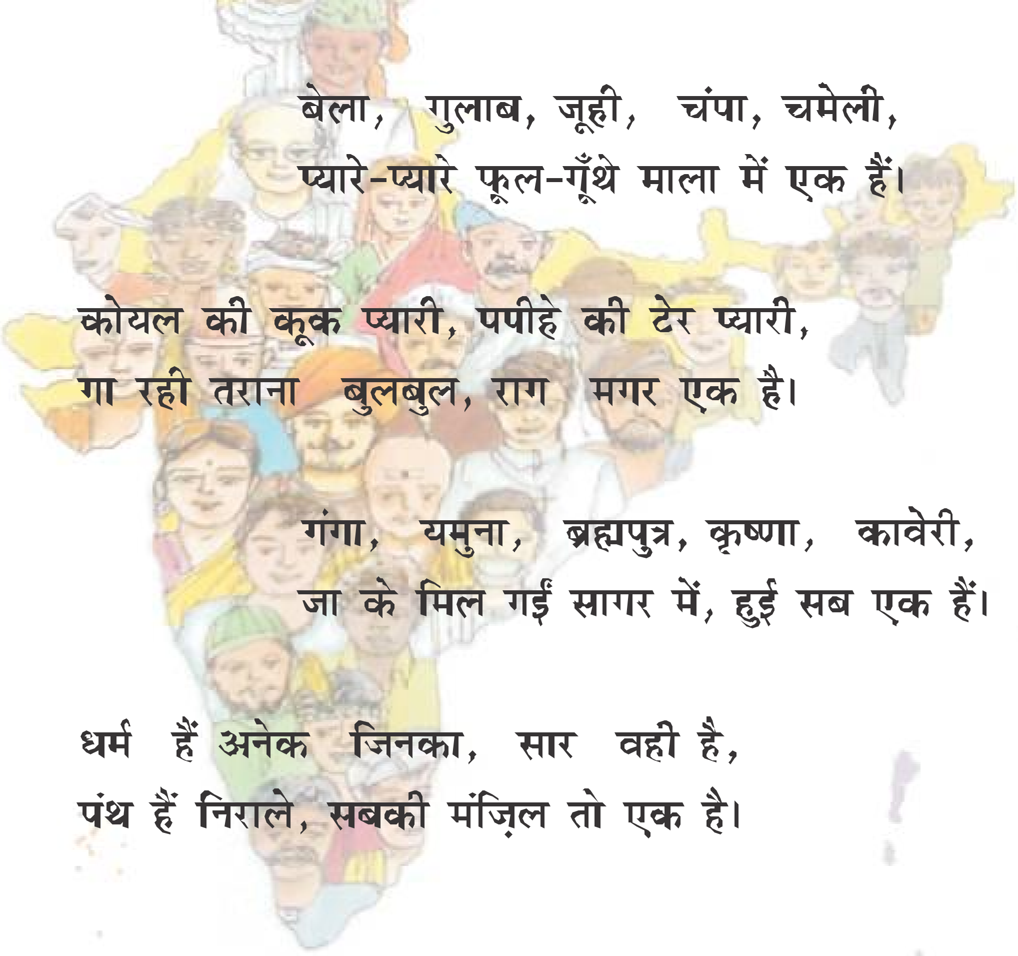

हिंद देश के निवासी सभी जन एक हैं,
रंग, रूप, वेश, भाषा चाहे अनेक हैं।

बेला, गुलाब, जूही, चंपा, चमेली,
प्यारे-प्यारे फूल-गूँथे माला में एक हैं।

कोयल की कूक प्यारी, पपीहे की टेर प्यारी,
गा रही तराना बुलबुल, राग मगर एक है।

गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र, कृष्णा, कावेरी,
जा के मिल गईं सागर में, हुई सब एक हैं।

धर्म हैं अनेक जिनका, सार वही है,
पंथ हैं निराले, सबकी मंज़िल तो एक है।

Developed by: ABSOL www.absol.in

शब्दार्थ

जन	–	लोग
टेर	–	तान
तराना	–	राग, गीत
राग	–	विशिष्ट गान प्रकार जैसे पंचम, सप्तम, भैरवी आदि
सार	–	मुख्य बात
पंथ	–	रास्ता
निराला	–	अनोखा
मंज़िल	–	लक्ष्य

आपका पन्ना

1. आप अपने गाँव, शहर या राज्य को किस रूप में देखना चाहते हैं? दिए गए स्थान पर चित्र बनाइए या लिखिए –

2. भारत के नक्शे में इसके सभी राज्यों के नाम लिखिए। अपने राज्य के नक्शे में अपना मनपसंद रंग भरिए –

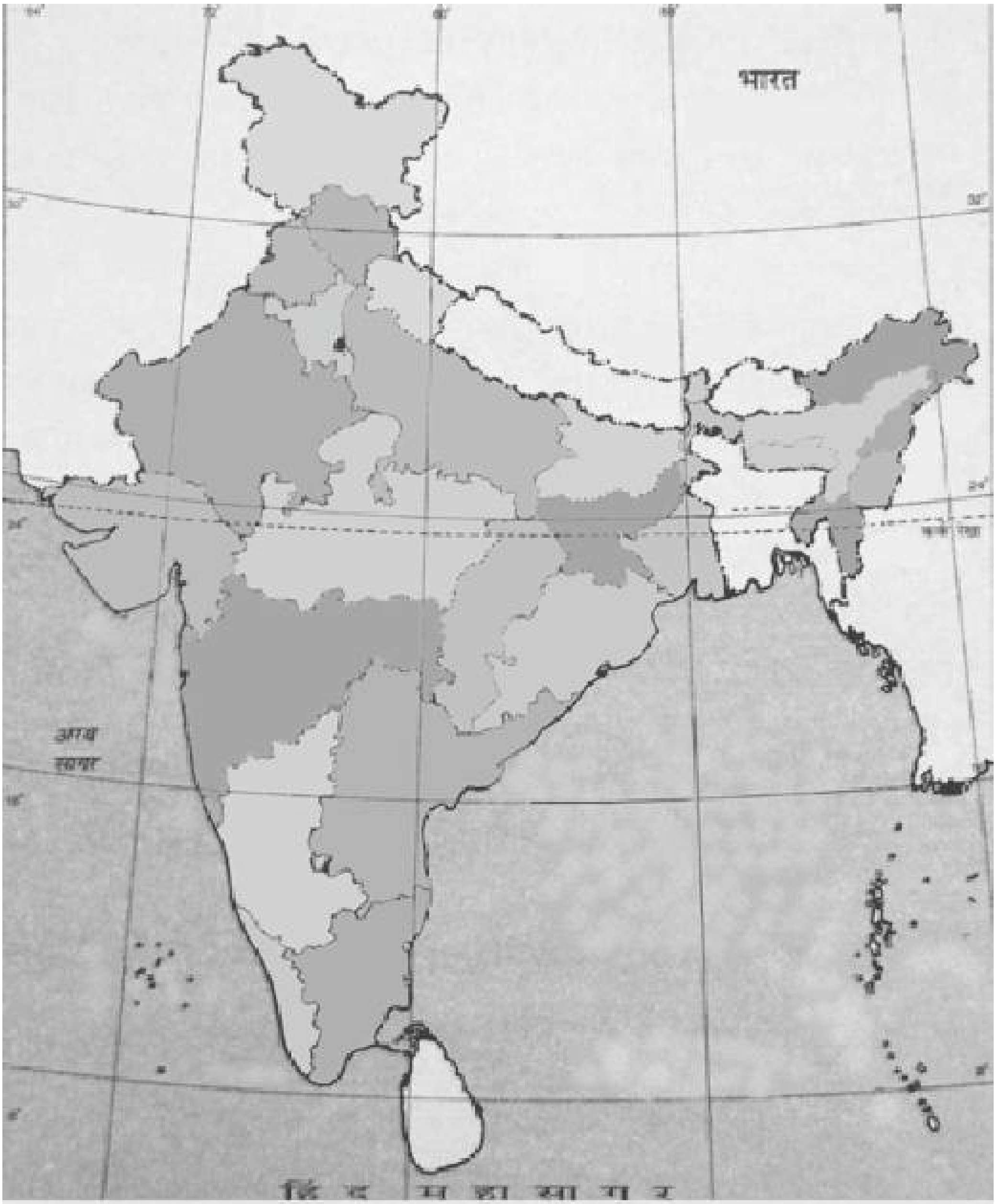

3. अपने शिक्षक की सहायता से नीचे दिए गए राज्यों के बारे में खास बातें लिखते हुए तालिका को भरिए –

क्र०सं०	राज्य	प्रसिद्ध पकवान	वेश-भूषा	भाषा	एक प्रसिद्ध जगह
1.	बिहार				
2.	तमिलनाडु				
3.	पंजाब				
4.	असम				
5.	गुजरात				

4. निम्नलिखित नदियाँ किन-किन राज्यों से होकर गुज़रती हैं? आप अपने शिक्षक या परिवार के किसी सदस्य की सहायता से बताइए –

नदियाँ	राज्यों के नाम
गंगा	
ब्रह्मपुत्र	
कावेरी	

5. देशभक्ति से जुड़े एक-दो गीत कक्षा में सुनाइए।

6. आपको अपने गाँव, शहर, राज्य या देश की कौन-सी एक बात बहुत अच्छी लगती है? बताइए।

2. टिपटिपवा

भुवन रोज़ रात को सोने से पहले दादी से कहानी सुनता। दादी रोज़ उसे तरह-तरह की कहानियाँ सुनातीं।

एक दिन मूसलाधार बारिश हुई। ऐसी बारिश पहले कभी नहीं हुई थी। सारा गाँव बारिश से परेशान था। दादी की झोंपड़ी में पानी जगह-जगह से टपक रहा था– टिपटिप-टिपटिप। इस बात से बेख़बर पोता दादी की गोद में लेटा कहानी सुनने के लिए मचल रहा था। दादी खीझकर बोलीं, "अरे बचवा, का कहानी सुनाएँ? इस टिपटिपवा से जान बचे तब न!"

पोता उठकर बैठ गया। "दादी, ये टिपटिपवा कौन है? टिपटिपवा क्या शेर-बाघ से बड़ा होता है?" उसने पूछा।

दादी छत से टपकते हुए पानी की तरफ देखकर बोलीं, "हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बघवा के डर। डर त डर, टिपटिपवा के डर।"

संयोग से मुसीबत का मारा एक बाघ बारिश से बचने के लिए झोंपड़ी के पीछे बैठा था। बेचारा बाघ बारिश से घबराया हुआ था। दादी की बात सुनते ही वह और डर गया ।

"अब यह टिपटिपवा कौन-सी बला है? ज़रूर यह कोई बड़ा जानवर है। तभी दादी शेर-बाघ से ज़्यादा टिपटिपवा से डरती हैं। इससे पहले कि वह बाहर आकर मुझ पर हमला करे, मुझे ही यहाँ से भाग जाना चाहिए।"

वाघ ने ऐसा सोचा और झटपट वहाँ से दुम दबाकर भाग चला।

उसी गाँव में भोला भी रहता था। वह भी बारिश से परेशान था। आज सुबह से उसका गदहा गायब था। सारा दिन वह बारिश में भींगता रहा और जगह-जगह गदहे को ढूँढ़ता रहा, लेकिन वह कहीं नहीं मिला।

भोला की पत्नी बोली, "जाकर गाँव के पंडित जी से क्यों नहीं पूछते? वे बड़े ज्ञानी हैं। आगे-पीछे, सबके हाल की उन्हें खबर रहती है।"

भोला को पत्नी की बात जँच गई। अपना मोटा लट्ठ उठाकर वह पंडित जी के घर की तरफ चल पड़ा। उसने देखा कि पंडित जी घर में जमा बारिश का पानी उलीच-उलीचकर फेंक रहे थे।

"महाराज, मेरा गदहा सुबह से नहीं मिल रहा है। ज़रा पोथी बाँचकर बताइए तो वह कहाँ है?" भोला ने बेसब्री से पूछा।

सुबह से पानी उलीचते-उलीचते पंडित जी थक गए थे। भोला की बात सुनी तो झुँझला पड़े और बोले, "मेरी पोथी में तेरे गदहे का पता-ठिकाना लिखा है क्या, जो आ गया पूछने? अरे, जाकर ढूँढ़ उसे किसी गढ़ई-पोखर में।" और पंडित जी लगे फिर पानी उलीचने।

भोला वहाँ से चल दिया। चलते-चलते वह एक तालाब के पास पहुँचा। तालाब के किनारे ऊँची-ऊँची घास उग आई थी। भोला घास में गदहे को ढूँढ़ने लगा। किस्मत का मारा बेचारा बाघ टिपटिपवा के डर से वहीं घास में छिपा बैठा था। भोला की नज़र बाघ पर पड़ी। अँधेरा और बारिश के कारण साफ दिखाई नहीं दे रहा था। भोला को लगा कि बाघ ही उसका गदहा है। उसने आव देखा न ताव और लगा बाघ पर मोटा लट्ठ बरसाने। बेचारा बाघ इस अचानक हमले से एकदम घबरा गया। "लगता है यही टिपटिपवा है। आखिर इसने मुझे ढूँढ़ ही लिया। अब अपनी जान बचानी है तो यह जो कहे चुप-चाप करते जाओ।" बाघ ने मन ही मन सोचा।

"आज तूने बहुत परेशान किया है, मार-मार कर मैं तेरा कचूमर निकाल दूँगा"— ऐसा कहकर भोला ने बाघ का कान पकड़ा और उसे खींचता हुआ घर की तरफ चल दिया। बाघ बिना चूँ-चपड़ किए भींगी बिल्ली बना भोला के पीछे-पीछे चल दिया। घर पहुँचकर भोला ने बाघ को खूँटे से बाँध दिया और सो गया।

सुबह जब गाँववालों ने भोला के घर के बाहर खूँटे से एक बाघ को बँधा देखा तो उनकी आँखें खुली की खुली रह गईं।

शब्दार्थ

खीझकर	–	कुढ़कर, चिढ़कर, झुंझलाकर
बला	–	आपत्ति, आफत
दुम	–	पूँछ
गढ़ई	–	छोटा गड्ढा
उलीचना	–	उपछना, बाहर फेंकना

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. आप भी कहानी सुनने के लिए मचलते होंगे। आपको कहानी कौन-कौन सुनाते हैं?
2. 'टिपटिपवा' कौन है? बाघ उसका नाम सुनकर क्यों डर गया था?
3. पंडित जी बारिश का जमा पानी कैसे उलीच रहे थे?
4. कहानी में भोला किस पोथी को बाँचने की बात करता है?
5. दादी ने ऐसा क्यों कहा कि टिपटिपवा का डर शेर-बाघ से भी बड़ा होता है?
6. पंडित जी के घर जाते समय भोला ने मोटा लट्ठ साथ में क्यों लिया होगा?

कहानी में से

1. भोला पंडित जी के पास क्यों गया?
2. बाघ टिपटिपवा के डर से कहाँ छिप गया?
3. गाँववालों की आँखें खुली की खुली क्यों रह गईं?

बारिश ही बारिश

'बारिश में दादी की झोंपड़ी में पानी जगह-जगह टपक रहा था।'

1. दादी ने बारिश से बचने के लिए क्या किया होगा?
2. आप या आपके गाँव/मोहल्ले के लोग बारिश से बचने के लिए क्या-क्या करते हैं?
3. **इस कहानी में बारिश से कई लोग परेशान हुए। बताइए कि निम्नलिखित लोगों को बारिश के कारण क्या परेशानी हुई-**

व्यक्ति	क्या परेशानी हुई
दादी	-------------------
पंडित जी	-------------------
बाघ	-------------------
भोला	-------------------

कहानी की दुनिया

1. **कहानी में पहले क्या हुआ, फिर उसके बाद क्या हुआ? घटनाओं के आधार पर क्रम में अंक दीजिए-**

☐ भोला ने बाघ को गदहा समझकर उसे खूँटे से बाँध दिया।

☐ दादी ने कहा, "टिपटिपवा तो बाघ से भी बड़ा होता है।"

☐ गाँववाले हैरानी से बाघ को देखने लगे।

☐ दादी की झोंपड़ी में बारिश का पानी टपक रहा था।

☐ भोला अपने गदहे का पता पूछने पंडित जी के पास गया।

☐ बाघ टिपटिपवा के डर से तालाब के किनारे घास में छिप गया।

2. कहानी में शेर और बाघ की बात आई है। नीचे दिए गए चित्र में बताएँ कि कौन बाघ है और कौन शेर?

3. बाघ चुपचाप भोला के पीछे क्यों चलने लगा। सही उत्तर पर (✓) निशान लगाइए –

(क) बाघ भोला से डर गया था। ☐

(ख) बाघ ने सोचा कि भोला उसे टिपटिपवा से बचाएगा। ☐

(ग) बाघ ने मोटे लट्ठ को टिपटिपवा समझ लिया। ☐

कहानी और आप

1. 'सुबह से पानी उलीचते-उलीचते पंडित जी थक गए थे। भोला की बात सुनी तो झुँझला पड़े।'
बताइए, आप कब थक जाते हैं और कब झुंझला पड़ते हैं? निम्नलिखित लोगों के बारे में भी पता कर लिखिए –

व्यक्ति	थक जाते हैं	झुँझला पड़ते हैं
आप	----------	-----------
माँ	----------	-----------
पिताजी	----------	-----------
बहन	----------	-----------
भाई	----------	-----------
दोस्त	----------	-----------

2. 'पोता दादी की गोद में लेटा कहानी सुनने के लिए मचल रहा था।'

(क) यहाँ मचलने का क्या मतलब है?

(ख) आप किन-किन चीज़ों/कामों के लिए मचलते हैं?

(ग) क्या कभी ऐसा हुआ है कि किसी चीज़ के लिए मचलने पर आपको डाँट पड़ी हो? बताइए।

भाषा के रंग

1. 'सुबह से पानी उलीचते-उलीचते पंडित जी थक गए थे।'

इसी तरह सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए–

उलीचना	पटाना	फेंकना
डालना	फेरना	देना

- सुनील खेतों को पानी से ---------------- रहा था।
- अंकित ने जल्दी से पैरों पर पानी ----------------और पैर साफ किया।
- अरे तुमने तो मेरे किए कराए पर पानी ---------------- दिया।
- सभी नाव से पानी ---------------- लगे।
- गिलास में मक्खी गिर गई थी इसलिए मामाजी को सारा पानी ------------ पड़ा।
- एक गिलास पानी ------------------।

2. नीचे दिए गए मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ बताइए–

चूँ-चपड़ न करना – --

भींगी बिल्ली बनना – --

आव देखा न ताव – --

दुम दबाकर भागना - ------------------------------

आँखें खुली की खुली रहना - --------------------------

----

3. नीचे दिए गए कथनों को अपनी क्षेत्रीय भाषा (मातृभाषा) में बोलिए-

- टिपटिपवा क्या शेर-बाघ से भी बड़ा होता है?
- अरे, जाकर ढूँढ़ उसे किसी गढ़ई-पोखर में।
- लगता है, यही टिपटिपवा है।

4. नीचे दिए गए कथनों को हिंदी में बोलिए-

अरे बचवा, का कहानी सुनाएँ? ई टिपटिपवा से जान बचे तब न।

हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बघवा के डर। डर त डर, टिपटिपवा के डर।

5. इससे पहले कि बाहर आकर वह मुझ पर हमला करे, मुझे ही यहाँ से भाग जाना चाहिए।

आप भी 'इससे पहले कि' का प्रयोग करते हुए तीन वाक्य बनाइए-

इससे पहले कि - --

इससे पहले कि - --

इससे पहले कि - --

6. निम्नलिखित शब्द स्त्रीलिंग हैं या पुँल्लिंग ? (✓) निशान लगाइए-

बारिश	-	स्त्रीलिंग / पुँल्लिंग
झोपड़ी	-	स्त्रीलिंग / पुँल्लिंग
पानी	-	स्त्रीलिंग / पुँल्लिंग
लट्टू	-	स्त्रीलिंग / पुँल्लिंग
पोथी	-	स्त्रीलिंग / पुँल्लिंग

7. (क) नीचे दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए–

- भोला वहाँ से चल दिया।
- दादी पोते को कहानी सुना रही थीं।
- और पंडित जी लगे फिर पानी उलीचने।
- धोबी को लगा कि बाघ ही उसका गदहा है।

(ख)

पहले वाक्य में 'भोला' एक व्यक्ति विशेष का नाम है, यह व्यक्तिवाचक संज्ञा है। किसी व्यक्ति, वस्तु, प्राणी, स्थान के ख़ास नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

नीचे दिए गए वाक्यों में व्यक्तिवाचक संज्ञा के नीचे रेखा खींचिए–

- राधिका ने गीत गाया।
- हम गोलघर देखने गए थे।
- पटना सुंदर शहर है।
- सुमित ने पौधा लगाया।

कुछ करने के लिए

आपने अब तक कई कहानियाँ पढ़ी होंगी। अपनी पसंद की कोई कहानी सुनाइए।

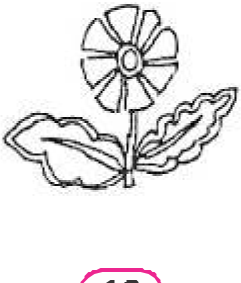

3. हुआ यूँ कि...

मैं चौथी कक्षा में पढ़ता था जब स्कूल में खेले गए एक नाटक में पहली अदाकारी की। नाटक का नाम श्रवण कुमार था और मैं ही श्रवण कुमार की भूमिका निभा रहा था। निर्देशक नौवीं कक्षा का एक छात्र था। मेरे लिए उसकी योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि वह आँखों पर चश्मा लगाए हुए था। मंच-सज्जा के लिए उसके हुक्म पर हम सभी अदाकार अपने-अपने घर से माँ-बहनों की धोतियाँ-साड़ियाँ उठा लाए थे—मंच पर बहती नदी दिखाने के लिए, जहाँ गहरी रात गए श्रवण कुमार अपने अंधे माँ-बाप के लिए पानी लेने जाता है। एक ओर पानी की बाल्टी रख दी गई थी। दो लड़के श्रवण कुमार के अन्धे माँ-बाप की भूमिका निभा रहे थे। उन्हें हिदायत दी गई थी कि सारा वक्त आँखें बन्द किए रहें। निर्देशक महोदय ने उन्हें मंच के ऐन बीचोंबीच दर्शकों की ओर मुँह किए साथ-साथ बैठा दिया था। उनमें से एक बोधराज, माँ की भूमिका निभा रहा था। वह अपनी माँ की ही धोती पहने हुए था, जिसका पल्लू बार-बार सिर पर से खिसक जाता था।

पर्दा उठा, मेरे अंधे माँ-बाप बोले, "बेटा श्रवण कुमार, बहुत प्यास लगी है।" मैंने लोटा उठाया, चरण वंदना की और नदी की ओर चल पड़ा। उधर राजा दशरथ उछलता, पैतरें बदलता और अपनी मूँछों को ताव देता हुआ पर्दे के पीछे से मंच पर उतरा, पीठ पर बंधे तरकश में से तीर निकाला और यह कहते हुए कि कोई जानवर नदी के जल को गंदा कर रहा है, अपना तीर चला दिया।

तीर को मैंने सीधा ऊपर की ओर जाते देखा, पर मैंने उसी क्षण लोटा फेंका और चारों खाने चित स्टेज पर लेट गया और सप्तम स्वर में गाने लगा–

"मैंने जालिम तेरा क्या बिगाड़ा,
तीर सीने में क्यों तूने मारा?
क्या खता थी वता, मेरी आखिर;
क्यों अभागे को जल भरते मारा?"

मेरी आवाज सप्तम् स्वर में चल रही थी जिस कारण हॉल में सन्नाटा छा गया। मैं बराबर गाए जा रहा था पर गीत इतना लंबा था कि खत्म ही नहीं हो पा रहा था। उधर राजा दशरथ, एक पैर आगे एक पीछे रखे, पोज वनाए, बिना हिले-डुले, मूर्तिवत् खड़ा था। इस इंतजार में कि मैं गाना खत्म करूँ और उसे संवोधित करूँ। उसका तीर–कमान मेरी दिशा में स्थिर हो गया था। अगर वह एक और तीर तरकश में से निकालकर मेरी ओर चला देता तो बात बन जाती पर उसे 'डायरेक्टर' ने एक ही तीर चलाने को कहा था और वह चल चुका था। मेरा गीत अभी आधा भी नहीं गाया गया था कि मेरी आवाज फटने लगी। किसी-किसी वक्त मुझे लगने लगा जैसे हॉल में बैठे दर्शक हँसने लगे हैं। उधर श्रवण कुमार के अंधे माँ-बाप आँखें बंद किए बैठ ही नहीं पा रहे थे, कभी एक तो कभी दूसरा, आँखें खोल देता जिसे देखकर दर्शक हँसने लगे थे। "वह देख, उसने फिर आँखें खोली हैं।"

सहसा हॉल में ठहाका हुआ। बोधराज के सिर पर से, जो अंधी माँ की भूमिका में था, धोती का पल्लू खिसक आया था और नीचे से उसका घुटा हुआ सिर निकल आया था। फिर किसी ने ऊँची आवाज़ में कहा "वह देख, फिर से देख रहा है। उसने फिर से आँखें खोल दी हैं।"

हॉल में बार-बार ठहाके उठने लगे। फिर बार-बार तालियाँ बजने लगीं। फिर जब मैंने गीत समाप्त करके, तड़पकर मरने का अभिनय किया तो हॉल में सीटियाँ बज रही थीं। मेरी कक्षा के एक अध्यापक मेरे भाई बलराज से कह रहे थे; "यह तेरा भाई क्या कर रहा है?"

मेरी मृत्यु के बाद अभी और संवाद बोले जाने थे—बूढ़े माँ-बाप के साथ राजा दशरथ के संवाद, अंधे माँ-बाप को अभी श्राप देना था पर नाटक का शेष भाग मैं भूल गया और झट से उठ बैठा। इससे हॉल में हँसी के फव्वारे फूट उठे। किसी ने आवाज़ कसी, "लेटा रह ! लेटा रह !"

पर मैं इतना बेसुध हो गया था कि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करूँ। मुझे और तो कुछ नहीं सूझा, मैं फिर लेट गया जिस पर ऐसी तालियाँ बजने लगीं कि थमने में नहीं आ रही थीं। सीटियाँ, तालियाँ, ठहाके तरह-तरह की आवाज़ें देर तक चलती रहीं।

यह मेरी पहली अदाकारी थी।

–भीष्म साहनी

शब्दार्थ

निर्देशक	–	निर्देश देने वाला, बतलाने वाला या समझाने वाला
अदाकारी	–	अभिनय
हिदायत	–	अनुदेश, रास्ता दिखाना, निर्देश
तरकश	–	जिसमें तीर रखा जाता है
जालिम	–	अत्याचारी, क्रूर
मूर्तिवत	–	मूर्ति के जैसा
दर्शक	–	देखने वाले
बेसुध	–	अचेत, बेहोश

अभ्यास

पहली अदाकारी

1. श्रवण कुमार की भूमिका किसने निभाई?
2. वोधराज को किसकी भूमिका निभाने में क्या परेशानी हो रही थी?
3. दशरथ मंच पर मूर्ति की तरह क्यों खड़ा था?
4. तीर लगने के बाद कौन-सा गीत गाया गया?
5. श्रवण कुमार के माता-पिता बने लड़कों को क्या हिदायत दी गई थी?
6. दर्शक तालियाँ क्यों बजाने लगे?

नाटक की दुनिया

1. नाटक में निर्देशक क्या काम करता है?
2. बच्चे अपने घर से धोती-साड़ियाँ क्यों उठा लाए थे?
3. नाटक खेलते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

4. **मंच पर इन्हें दिखाने के लिए किन चीज़ों का प्रयोग किया जा सकता है?**

(क) पेड़ – --

(ख) कुआँ – --

(ग) साँप – --

4. आपके अनुसार नाटक की सफलता में किसकी भूमिका सबसे ज्यादा होती है—अभिनेता की, निर्देशक की, नाटक लिखने वाले की या मंच सज्जा करने वाले की? अपने उत्तर का कारण भी बताएँ।

5. **'श्रवण' कुमार नाटक खेलने के लिए बच्चों को किस-किस सामान की जरूरत पड़ी होगी? एक सूची बनाइए—**

जरूरी सामान – --------------- --------------- ---------------

----------------- ----------------- ----------------- -----------------

----------------- ----------------- ----------------- -----------------

आपकी बात

1. क्या आपको किसी नाटक में अदाकारी का मौका मिला है? उसके बारे में बताइए।
2. क्या आपके मुहल्ले, गाँव या शहर में नाटक होते हैं? उनके बारे में बताइए।
3. **मेरे लिए उसकी योग्यता का सबसे बड़ा प्रमाण यही था कि वह आँखों पर चश्मा लगाए हुए था।**

   (क) क्या चश्मा लगाने से व्यक्ति योग्य बन जाता है?

   (ख) आपके अनुसार योग्य होने के लिए क्या जरूरी है?

   (ग) आप अपनी कक्षा, परिवार और गाँव में किस-किस को बड़ाई के योग्य मानते हैं और क्यों?
4. **अगर आपको 'श्रवण कुमार' नाटक में अभिनय करने का अवसर मिले तो—**

   (क) आप किस पात्र की भूमिका निभाना चाहेंगे और क्यों?

   (ख) आपको किस पात्र की भूमिका निभाने में कठिनाई होगी और क्यों?

अनुमान लगाइए

1. श्रवण कुमार के माता-पिता वने लड़के आँखें बंद करके क्यों नहीं बैठ पा रहे थे?
2. लेखक की आवाज़ क्यों फटने लगी थी?
3. अध्यापक ने ऐसा क्यों कहा कि यह तेरा भाई क्या कर रहा है।

खोजबीन

पाठ में से उन अंशों को खोजकर बताइए जिनसे दर्शकों को नाटक में मज़ा आ रहा था।

भाषा के रंग

1. क्या है 'गहरा' ?

'**जहाँ गहरी रात** गए श्रवण कुमार अपने अंधे माँ-बाप के लिए पानी लेने जाता है।' इस वाक्य में 'गहरी रात' का अर्थ 'बहुत रात होना' है। नीचे दिए वाक्यों में रेखांकित अंशों के अर्थ बताइए-

(क) इसमें एक <u>गहरा राज</u> है। --

(ख) यह नदी <u>बहुत गहरी</u> है। --

(ग) रमा को <u>गहरा हरा</u> रंग पसंद है। ----------------------------------

(घ) मास्टर जी ने आज एक <u>गहरी बात</u> समझाई। ---------------------

2. सही का चिह्न (✓) लगाइए-

i. सप्तम स्वर में गाने का मतलब है-

(क) धीमी आवाज़ में गाना (ख) ऊँचे स्वर में गाना

(ग) रो-रो कर गाना (घ) सुर मिलाना

ii. हॉल में 'सन्नाटा छा गया।' मतलब है-

(क) हॉल में खुशी छा गई (ख) हॉल में तंबू छा गया

(ग) हॉल में खामोशी छा गई (घ) हॉल में अँधेरा छा गया

iii. 'घुटा हुआ सिर' का मतलब है–

(क) सिर पर एक भी बाल न होना (ख) छोटा सिर

(ग) छोटे बालों वाला सिर (घ) कटा हुआ सिर

3. दिए गए शब्द-समूह में से सही शब्द पर घेरा ⬭ लगाइए–

1.	साड़ीयाँ	साड़ियां	साड़ियाँ
2.	मूंछ	मूँछ	मुँछ
3.	मूर्ति	मूर्ती	मुर्ति
4.	दशर्क	दर्शक	र्दशक

4. 'हॉल' का 'हाल'

'हॉल' में बैठे दर्शक हँसने लगे।' शब्द में 'हा' के ऊपर आधा चाँद बना है। इसका प्रयोग ज्यादातर अंग्रेजी से आए शब्दों में होता है। अब नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए। क्या कोई अंतर नज़र आया?

हाल	-	हॉल	काफ़ी	-	कॉफी
बाल	-	बॉल	डाली	-	डॉली

5. इन शब्दों को भी बोल-बोल कर पढ़िए–

डॉक्टर, कॉलेज, कॉपी, फ्रॉक

6. नीचे दिए गए वाक्यों को सही शब्द से पूरा कीजिए–

(क) मुझे ------------- कटवाने जाना है। (बॉल / बाल)

(ख) रोहित ने ऐसा बल्ला घुमाया कि ------------- दीवार के पार चली गई। (बॉल / बाल)

(ग) आपका का क्या ------------- है? (हॉल / हाल)

(घ) यह खाना बीस बच्चों के लिए ------------- रहेगा। (कॉफी / काफी)

(ङ) यह ------------- बहुत गर्म है। (कॉफी / काफी)

शब्दों की दुनिया

1. निम्नांकित शब्दों से वाक्य में दिए गए खाली स्थानों को भरिए –

पर, में, के, ने, को

(क) दर्शक हॉल ------------------ बैठे थे।
(ख) बोधराज ------------------ कुछ समझ में नहीं आया।
(ग) हम सभी मंच ------------------ खड़े थे।
(घ) माता–पिता ------------------ अपनी आँखें खोल दीं।
(ङ) श्रवण कुमार ------------------ माता–पिता उसे बहुत प्यार करते थे।

2. 'मानसरोवर' के अक्षरों से नए शब्द बनाइए –

जैसे– मानस ------------------ ------------------ ------------------

3. नाटक की दुनिया से जुड़े शब्दों की सूची को आगे बढ़ाइए–

जैसे–अदाकारी -------------- -------------- -------------- --------------
-------------- -------------- -------------- --------------
-------------- -------------- -------------- --------------

संवाद और अभिनय

1. 'अगर वह एक और तीर तरकश में से निकालकर मेरी ओर चला देता तो मेरा काम बन जाता।' अगर दशरथ तीर चला देता तो दशरथ और श्रवण कुमार के बीच क्या वातचीत होती? उनके संवाद लिखिए और फिर अभिनय भी कीजिए–

श्रवण कुमार – हाय ! मार डाला ।
दशरथ – अरे, यह क्या हो गया? मैंने तो सोचा था कि कोई जानवर होगा।
श्रवण कुमार – --
दशरथ – --

2. श्रवण कुमार पर आधारित नाटक का मंचन कीजिए।

***

4. चाँद का कुर्ता

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
"सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का, मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह, यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफर और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का।"

बच्चे की सुन बात, कहा माता ने,"अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ।
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी को भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।

अब तू ही यह वता, नाप तेरी किस रोज़ लिवायें,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ वदन में आये?"

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

शब्दार्थ

हठ	- ज़िद
झिंगोला	- ढीला-ढाला वस्त्र
भाड़े का	- किराये का
1 फुट	- 12 इंच की लंबाई

अभ्यास

चाँद की बात

1. चाँद ने ऊन का मोटा झिंगोला सिलवाने की बात क्यों की ?
2. चाँद की माँ को उसका झिंगोला सिलवाने में क्या परेशानी है ?
3. चाँद में किस तरह के बदलाव आते हैं ?
4. चाँद ने कौन-सी यात्रा पूरी करने की बात की है ?
5. आप चाँद के लिए कैसा झिंगोला बनाएँगे ?

किराया-भाड़ा

'न हो अगर तो ला दो कुर्ता ही कोई भाड़े का ।'

कविता की इस पंक्ति में रेखांकित शब्द 'भाड़े का' का अर्थ है – किराए का।

1. क्या आपने कभी कोई चीज़ भाड़े पर ली है ? कौन-कौन सी, बताइए।
2. किराए पर चीज़ें क्यों ली जाती हैं?
3. **आप अपनी जरूरत की कौन-कौन सी चीज़ें किराए पर ले सकते हैं? घेरा लगाइए ।**

पेंसिल	कॉपी	कुर्ता	किताब	कंबल
कंघा	मकान	बस्ता	रोटी	जूते

4. किन्हीं पाँच चीज़ों के नाम बताइए जो किराए पर नहीं ली जा सकतीं –

------------ ------------- ------------- ----------- ------------

5. चाँद ने भाड़े पर कुर्ता लाने की बात क्यों की ?

6. चाँद के लिए भाड़े पर कितने कुर्ते लाने की ज़रूरत पड़ेगी?

चंदा मामा दूर के

1. **'एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ ।'** क्या चाँद की माँ की यह वात ठीक है? कैसे ?

2. **'घटता – बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,**
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है ।'
चाँद के घटने-बढ़ने पर जो उसका आकार बनता है उसे चाँद की कलाएँ कहते हैं । नीचे चाँद की कलाएँ दी गई हैं। इन्हें ध्यान से देखिए और चाँद के घटने-बढ़ने से पूर्णिमा, अमावस्या को समझिए।

बातचीत के लिए

1. चाँद की माँ उसे 'सलोने' कहकर बुलाती है । आपको लोग क्या कहकर बुलाते हैं –

व्यक्ति	बुलाने का नाम
माँ	----------------
पिताजी	----------------
बहन	----------------
भाई	----------------
दोस्त	----------------

2. **बच्चे की सुन बात कहा माता ने, "अरे सलोने !**
कुशल करे भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने ।"

चाँद की माँ यह प्रार्थना करती है कि भगवान उसके बच्चे की रक्षा करें, उसे जादू-टोने से बचाए रखें । क्या आपकी माँ, दादी, नानी या कोई और भी आपके लिए ऐसी प्रार्थना करते हैं ? लिखिए -

कौन करते हैं?	क्या कहते हैं?
---------------	---------------
---------------	---------------
---------------	---------------
---------------	---------------

3. आपके अनुसार जादू-टोना क्या है ?

4. क्या आप ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं ? क्यों ?

5. क्या आपके परिवार के सदस्य ऐसी बातों पर विश्वास करते हैं? क्या आप उनसे सहमत हैं?

भाषा के रंग

1. **'जाड़े-भाड़े' शब्दों की लय समान है। आप इन शब्दों की समान लय वाले शब्द लिखिए।**

(क) झिंगोला ---------
(ख) बात ---------
(ग) ऊन ---------
(घ) हवा ---------

2. **नीचे दिए गए वाक्यों को ध्यान से पढ़िए –**

- <u>ठिठुर</u> कर यात्रा पूरी करता हूँ ।
- <u>ठिठुर – ठिठुरकर</u> यात्रा पूरी करता हूँ ।

दोनों वाक्यों में ठंड लगने की बात की गई है ।

(क) फिर कवि ने 'ठिठुर' और 'ठिठुर-ठिठुरकर' का अलग-अलग प्रयोग क्यों किया है ?

(ख) किस वाक्य में ज़्यादा ठंड लगने की बात है ?

यहाँ एक ही शब्द एक साथ दो बार प्रयोग करने से उसके अर्थ में तीव्रता आती है। यानी उस पर बल पड़ता है । वह 'बहुत' के अर्थ में आया है।

(ग) अब आप नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि वाक्य का रेखांकित अंश क्या अर्थ दे रहा है –

(i)
- पत्ते **<u>ज़ोर से</u>** हिल रहे थे ।
- पत्ते **<u>ज़ोर-ज़ोर से</u>** हिल रहे थे ।

(ii)
- अरे बच्चो ! **<u>जल्दी</u>** चलो ।
- अरे बच्चो ! **<u>जल्दी-जल्दी</u>** चलो ।

(iii)
- **<u>देखो</u>**, बच्चा बाल्टी उठा रहा है ।
- **<u>देखो-देखो</u>** बच्चा बाल्टी उठा रहा है ।

3. 'घटता – बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है' पंक्ति में '**<u>घटता-बढ़ता</u>**' शब्द – जोड़ा है जिसमें चाँद के घटने और बढ़ने की बात की गई है । दोनों शब्द एक-दूसरे का विपरीत अर्थ देते हैं। नीचे दिए गए शब्द जोड़ों को पूरा कीजिए –

(क) ऊपर	------------	बाहर
(ख) अंदर	------------	गर्म
(ग) ठंडा	------------	जाना
(घ) कम	------------	रात
(ङ) आना	------------	ज़्यादा
(च) दिन	------------	नीचे

4. चाँद पर आधारित नीचे दी गई कविता को पढ़िए ।

गोल हैं खूब मगर
आप तिरछे नज़र आते हैं ज़रा।
आप पहने हुए हैं कुल आकाश
तारों-जड़ा;
सिर्फ़ मुँह खोले हुए हैं अपना
गोरा-चिट्टा
गोल-मटोल,
अपनी पोशाक को फैलाए हुए चारों सिम्त[1]।
आप कुछ तिरछे नज़र आते हैं जाने कैसे
- खूब हैं गोकि!
वाह जी, वाह!
हमको बुद्धू ही निरा समझा है!
हम समझते ही नहीं जैसे कि
आपको बीमारी है;
आप घटते हैं तो घटते ही चले जाते हैं,
और बढ़ते हैं तो बस यानी कि
बढ़ते ही चले जाते हैं-
दम नहीं लेते हैं जब तक बिलकुल ही
गोल न हो जाएँ,
बिलकुल गोल।
यह मरज़ आपका अच्छा ही नहीं होने में...
आता है।

1. सिम्त - दिशा

- शमशेर बहादुर सिंह

आपकी कलम और कल्पना

1. 'चाँद का कुर्ता' कविता को कहानी के रूप में लिखिए ।
2. आप भी चाँद पर अपनी एक कविता बनाइए ।

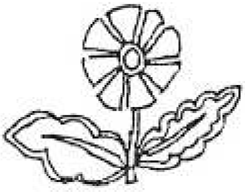

कुछ तो खास है

7. **'ननकू' कहानी में कई जगह खास तरह की भाषा/शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनके अर्थ बताइए –**

- घुप्प अँधेरा – ------------------------------------
- झिड़की खाना – ------------------------------------
- धौल खाना – ------------------------------------
- हुलसना – ------------------------------------
- परसिडेंट – ------------------------------------

आपकी बात

1. **ननकू ने अपने साहस भरे कारनामों से अपनी और दादाजी की जान बचाई।** आप भी किसी ऐसी घटना के बारे में बताएँ जब आपने किसी की जान बचाई हो या किसी ने आपकी जान बचाई हो।

2. ननकू के साहस भरे कारनामों के बारे में बताते हुए अपने नानाजी या दोस्त को पत्र लिखिए –

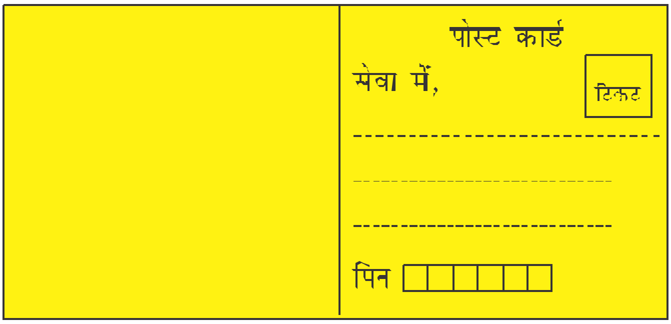

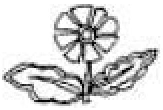

9. ममता की मूर्ति

बहुत साल पहले की बात है। एक बार अमरीकी अधिकारी कैनेडी ने भारत में स्थित सेवा शिविरों का दौरा किया । एक शिविर में उन्होंने देखा कि एक रोगी उल्टी, दस्त और खून से लथपथ पड़ा था । एक महिला पूरे मन से रोगी की सेवा और सफाई में लगी थी । यह दृश्य देख कैनेडी की आँखें खुली की खुली रह गईं । उन्होंने महिला की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "क्या मैं आपसे हाथ मिला सकता हूँ।" महिला अपने हाथों को देखकर बोलीं, "ओह ! अभी नहीं, अभी ये हाथ साफ नहीं हैं । "कैनेडी बोले," नहीं–नहीं इन्हें गंदे कहकर इनका अपमान मत कीजिए । ये बहुत पवित्र हैं। इन्हें तो मैं अपने सिर पर रखना चाहता हूँ ।'' यह कहते हुए कैनेडी ने उनके हाथों को अपने सिर पर रख लिया।

ये पवित्र हाथ मदर टेरेसा के थे, जो सचमुच गरीब, असहाय, रोगी, अपाहिज आदि लोगों की माँ थीं। इनका जन्म 27 अगस्त 1910 ई॰ को युगोस्लाविया के स्पोजे नगर में हुआ था । उनके बचपन का नाम एग्नेस गोंज़ा बोजाक्यू था । माँ का नाम ड्रानाफिल तथा पिता का नाम निकोलस था ।

बचपन से ही उनके मन में सेवा का भाव था । इसी कारण उन्होंने 'नन' बनने का निश्चय किया । 1928 ई॰ में वे दार्जिलिंग के लोरैटो कान्वेंट में शिक्षिका बनकर भारत आईं। 1929 ई॰ में उन्होंने कोलकाता के सेंट मेरी हाईस्कूल में पढ़ाना शुरू किया। बाद में वे इसी विद्यालय की प्रधान शिक्षिका बन गईं ।

गरीबों, असहायों, रोगियों को देखकर, इनका दिल सेवा के लिए मचलता रहता था। आखिरकार 1948 ई॰ में उन्हें विद्यालय छोड़ने की अनुमति मिल गई । अब उन्होंने अपना जीवन दुखियों, गरीबों, कुष्ठ रोगियों आदि की सेवा में लगा दिया । अब पूरी दुनिया में उनकी पहचान 'मदर टेरेसा' के रूप में हुई । उन्होंने नीली किनारी वाली सफेद साड़ी पहनना शुरू कर दिया । बाद में यह पहनावा सेवा भाव रखने वाली नर्सों की पहचान बन गया।

नर्स की ट्रेनिंग लेने के बाद उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र एक बार फिर कोलकाता

बनाया। एक बार की बात है मदर टेरेसा एक ऐसी बुढ़िया को अस्पताल ले गईं जिसका शरीर चूहों और चींटों ने कुतर डाला था । वह अंतिम साँसें ले रही थीं । डॉक्टरों ने उसका इलाज करने से मना कर दिया । मदर उसे अपनी वाँहों में उठाकर दूसरे अस्पताल की ओर दौड़ीं, लेकिन उस वुढ़िया ने उनकी वाँहों में ही दम तोड़ दिया।

इसके बाद मदर ने प्रण किया कि अब ऐसे मरणासन्न अनाथों के लिए कहीं घर की व्यवस्था करनी होगी। इसीलिए कोलकाता में ही उन्होंने "निर्मल हृदय" नामक घर की स्थापना की । यह घर क्या था, एक जीर्ण-शीर्ण कमरा था, जिसमें दो पलंग रखे गए थे । जब कभी भी उन्हें कोई असहाय, लावारिस और बीमार व्यक्ति दिखता था, वे उसे 'निर्मल हृदय' संस्थान में ले आतीं । यहाँ स्नेह, सहानुभूति एवं प्यार के साथ उसकी सेवा और उपचार करतीं। कार्य एवं सेवा के विस्तार के साथ उन्हें खूब प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वर्ष 1950 ई० में उनकी संस्था को 'मिशनरीज़ ऑफ चैरिटीज़' की मान्यता मिल गई ।

मदर टेरेसा ने शिशु सदन, प्रेम घर और शांति नगर की भी स्थापना की ।

मदर टेरेसा अपने कार्यों को खुद करती थीं । रोगियों का मल-मूत्र या घावों की सफाई भी वे खुद करती थीं । ये काम उन्हें काफी आनंद देता था । इनके कार्यों से प्रभावित होकर भारत सरकार ने उन्हें **भारत रत्न** से सम्मानित किया । **नोबेल पुरस्कार** जो दुनिया का प्रसिद्ध पुरस्कार है, वह भी उन्हें प्राप्त हुआ ।

सेवा, शांति, भाईचारा, परोपकार आदि की रौशनी मदर टेरेसा 5 सितंबर 1997

को हमें छोड़कर स्वर्गवासी हो गईं। आज 'माँ' हमारे बीच नहीं हैं। मगर उनकी यह उक्ति हम सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है कि आपको विश्व में जहाँ कहीं भी दुखी, रोगी, बेसहारा, असहाय आदि लोग मिलें वे आपका प्यार पाने के हकदार हैं। उन्हें आपकी मदद चाहिए ।

पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

असहाय	–	जिसका कोई सहायता करने वाला नहीं है
जीर्ण-शीर्ण	–	टूटा-फूटा
प्रण करना	–	प्रतिज्ञा करना
नन	–	सेवा भाव रखनेवाली अविवाहित स्त्री

अभ्यास

आपकी कलम से

1. मदर टेरेसा के बारे में बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।
2. अनेक ऐसी महिलाएँ हैं जिन्होंने अपने कार्यों से काफी प्रसिद्धि पाई है। आप ऐसी किसी एक महिला के बारे में कक्षा में बताएँ। यह महिला आपकी माँ, दादी, नानी, मौसी भी हो सकती हैं।
3. मदर टेरेसा के जीवन से जुड़ी कुछ रोचक घटनाओं के बारे में पता कीजिए और लिखिए।

सही या गलत

पाठ के आधार पर (✓) या (X) निशान लगाइए–

- मदर टेरेसा का बचपन का नाम मरिया था। ☐
- वे सेवा-भाव के कारण नन बनना चाहती थीं। ☐
- उन्होंने नर्स की ट्रेनिंग ली थी। ☐
- उनका कार्यक्षेत्र कोलकाता था। ☐

- वे कहती थीं – दुखी, रोगी आदि आपकी दया के हकदार हैं। ☐
- 'शिशु-मदन' और 'प्रेमघर' उनकी संस्थाएँ थीं। ☐

2. **सही शब्दों से वाक्यों को पूरा कीजिए–**

(क) मेरी ----------- बहुत अच्छा पढ़ाती हैं। (शिक्षक/ शिक्षिका)

(ख) ----------- पौधे लगा रहा था। (माली/मालिन)

(ग) मदर को एक ----------- महिला मिली। (बूढ़ा/वूढ़ी)

(घ) मदर टेरेसा ने खूब प्रसिद्धि ----------- । (पाया/ पाई)

(ङ) सभा में अनेक ----------- बैठी थीं। (विद्वान/विदुषियाँ)

पाठ से बताइए

(क) मदर टेरेसा का जन्म कब और कहाँ हुआ था?

(ख) मदर टेरेसा के अनुसार जीवन का मूल मंत्र क्या है?

(ग) किस दृश्य ने मदर टेरेसा का मन मोड़ दिया?

(घ) पीड़ितों के लिए मदर टेरेसा ने किन-किन संस्थाओं की स्थापना कीं?

आपकी समझ से

(क) यदि आपको कहीं घायल व्यक्ति मिले तो आप क्या करेंगे?

(ख) किसी भूखे व्यक्ति को खाना खिलाकर आपको किस प्रकार की अनुभूति होगी?

भाषा की बात

1. **"वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित था।"** इस वाक्य को वर्तमान काल में इस रूप में लिखा जा सकता है–
"वहाँ अपार जन-समूह एकत्रित है।" निम्नलिखित वाक्यों को वर्तमान काल में लिखें।

(क) उनके शरीर पर कोई आभूषण नहीं था।

(ख) वह महिला कौन थी?

(ग) एक स्त्री सड़क पर लेटी हुई थी।

(घ) वह दर्द से कराह रही थी।

----

2 . निम्नलिखित वाक्यों में 'का', 'के', 'की' भरिए –

(क) यह मेरे जीवन भर ---------------- कमाई है।

(ख) बचपन से ही उनके मन में सेवा ---------------- भाव था।

(ग) प्रशिक्षण ---------------- बाद उन्हें कोलकाता भेजा गया।

(घ) उन्होंने वृद्ध व्यक्तियों ---------------- ध्यान रखा।

(ङ) उन्होंने एक नई संस्था ---------------- स्थापना की।

3 . 'उनका वास्तविक नाम एग्नेस गोज़्ा बोजाक्यू था।' यहाँ 'वास्तविक' शब्द 'वास्तव' में 'इक' लगाकर बनाया गया है। इस प्रकार 'इक' लगे हुए कुछ शब्द लिखिए –

देह + इक = ----------

देव + इक = ----------

शरीर + इक = ----------

नगर + इक = ----------

कुछ करने को

1. एक दिन उन्होंने ऐसा भयानक दृश्य देखा जिसने उनके जीवन की दिशा को नया मोड़ दे दिया। क्या आपको कभी ऐसा दृश्य देखने को मिला है जिसने आपको सोचने के लिए विवश किया हो? बताइए।
2. 'मदर टेरेसा' के अतिरिक्त किसी अन्य समाज सेवक/सेविका के बारे में अपने अध्यापक / अध्यापिका से जानिए।
3. 'मानव-सेवा सबसे बड़ा धर्म है।'' इस विषय पर अपने विचार बताइए।

कुछ करने के लिए

नीचे दिए गए अक्षर जाल में से विशेषण शब्द चुनकर लिखिए-

र	मी	ठा	चा	ला	क
सी	वी	र	ठं	डा	ई
ला	ल	रं	गी	न	मा
ग	र्म	नु	ला	स	न
न	म	की	न	फे	दा
घ	ना	ला	सुं	द	र

....

10. आया बादल

उमड़-घुमड़कर आसमान में,
वह देखो मँडराया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

देखो-देखो, भालू काला,
हाथी मोटा दाँतों वाला;
कितने रूप बनाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

आज संदेशा किसका लाया,
किस मुंडेर पर आया-छाया;
प्यारा-सा मनभाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

वन-उपवन सब गाँव-नगर भी,
नदी-पोखर, ताल-नहर भी;
सबको ही नहलाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

पूरे सावन कजरी गाता,
रिमझिम-रिमझिम गीत सुनाता;
लो पानी बरसाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

दादुर - मोर - पपीहा बोले,
खेतों के मन हरसे डोले;
जैसे ही लहराया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

नीली चादर एक टाँगकर,
किरणों से कुछ रंग माँगकर;
इंद्रधनुष रच लाया बादल।
आया बादल, आया बादल।।

–अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी

शब्दार्थ

संदेशा	–	समाचार
मुंडेर	–	छत के चारों ओर उठे हुए दीवार का ऊपरी भाग
उपवन	–	वगीचा
पपीहा	–	एक पक्षी का नाम
दादुर	–	मेढक का एक प्रकार

अभ्यास

1. बादलों के बरसने के बाद आपके आस-पास क्या बदलाव नज़र आता है? उस दृश्य का एक चित्र बनाकर रंग भरिए–

2. आपने भी बादलों को गौर से देखा होगा। आपको उनमें किसकी आकृति नज़र आती है? चित्र बनाइए।
3. बारिश आने वाली है। इस बात का अनुमान आप कैसे लगाते हैं?
4. 'बादल' के साथ आप किन-किन चीजों को जोड़ना चाहेंगे? उनके नाम लिखिए–

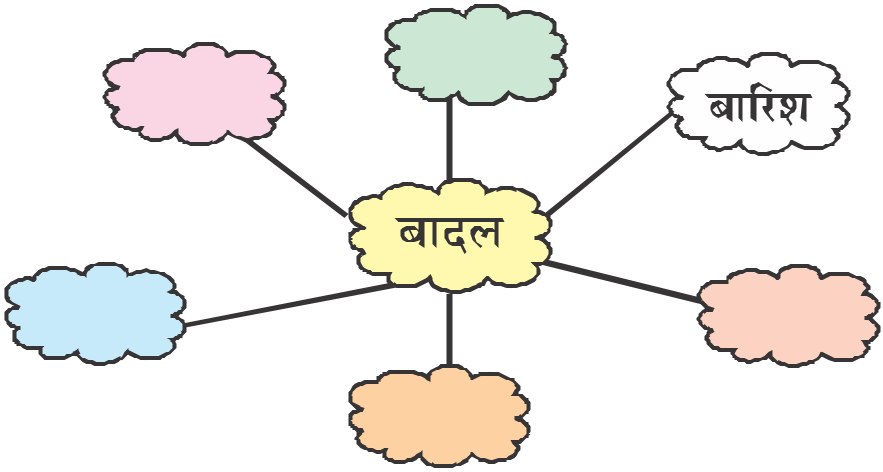

6. 'बादल' से जुड़ी नीचे लिखी कविताओं को पढ़िए। इनमें 'बादल' के लिए अलग-अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है। उन्हें छाँटकर लिखिए।

मेघ बन ठन कर आए
साथ बारिश की बूँदें लाए।

आज आए घन घनघोर,
उन्हें देख नाचने लगे मोर।

काले बदरा काले बदरा,
पानी तो बरसाओ।

क्या आप जानते हैं कि –

- सभी बादलों से बारिश नहीं होती।
- बादलों के आधार पर उनके अलग-अलग नाम होते हैं।
- इनमें से तीन प्रकार के बादल सबसे खास होते हैं-

★ **रेशेदार बादल** घने रेशे जैसे दिखाई पड़ते हैं।
ये खुद तो बारिश नहीं करते लेकिन बताते हैं कि कहीं तेज़ आँधी-तूफ़ान चल रहा है।

★ **कपासी बादल** कपास के ढेरों की तरह दिखते हैं।
इनकी तली गहरे रंग की और सपाट होती है। जबकि ऊपरी हिस्सा गोल सुंदर आकार का और चमकदार, सफेद होता है। कभी-कभी ये हवा के कारण बहकर एक-दूसरे से मिल जाते हैं और फिर बारिश लाने वाले घने होकर गरजने-चमकने वाले बादलों का रूप ले लेते हैं।

★ **फैले हुए बादल** तब बनते हैं जब ढेर सारे कपासी बादल मिलकर एक निरंतर परत बना लेते हैं। ये ज्यादा घने और काले होते हैं और अक्सर बूँदाबाँदी लाते हैं।

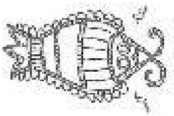

11. एक पत्र की आत्मकथा

मैं एक पत्र हूँ। मैं उम्र में बहुत बड़ा नहीं हूँ। हाल ही में मेरा जन्म 03 अगस्त 2011को हुआ। मेरा जन्म स्थल गया जिले का धरमपुर गाँव है। धरमपुर में एक लड़की रहती है। उसका नाम शांति है। शांति पाँचवीं की छात्रा है। शांति का एक चचेरा भाई है, रमेश। रमेश रहता है दिल्ली में।

03 अगस्त की शाम शांति ने एक सुन्दर-सी राखी बनाई। उसने रमेश को एक पत्र लिखा और एक लिफाफे में पत्र एवं राखी को बंद कर दिया । इस तरह मेरा जन्म हुआ। शांति की माँ दूसरे दिन पास के कस्बा बिशनपुर जाने वाली थी। शांति ने माँ से कहा कि ज़रा रमेश भाई की चिट्ठी बिशनपुर की पत्र-पेटी में डाल दीजिएगा। अगले दिन मैं माँ के साथ बिशनपुर पहुँचा। वहाँ बहुत चहल-पहल थी। मैं इसका मज़ा ले ही रहा था कि ढप! मैं एक काली-सी गुफा में जा कर गिर पड़ा। यह पत्र-पेटी थी। मैं पत्रों के ढेर पर जा गिरा। अरे! ये तो मेरे जैसे थे। बस फिर क्या था? हो गयी दोस्ती!

मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। पर मेरे कुछ दोस्त फीके-नीले रंग के थे, कुछ एक पीले कार्ड थे, कुछ सफेद या खाकी लिफाफे पहने हुए थे, कुछ लंबे थे, तो कुछ चौड़े। वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे।

अब मुझे चिंता होने लगी कि मैं दिल्ली में रमेश के घर तक कैसे पहुँचूँगा। कहीं और पहुँच गया तो? किसी को कैसे पता चलेगा कि मुझे कहाँ जाना है?

एक सफ़ेद लिफाफा जिस पर लाल व नीली धारियाँ बनी थीं, सबसे बातें करने लगा। कहने लगा, "पता है, मुझे अमरीका देश जाना है। रास्ते में बहुत बड़ा समुद्र

है, इसलिए मैं रेल या बस से नहीं, हवाई जहाज से अमरीका पहुँचूँगा। सुना है जब हवाई जहाज नहीं बने थे, तब समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाज से पत्र भेजे जाते थे।''

खटाक! ताला खुलने की-सी आवाज़ आई। पेटी में उजाला हुआ। किसी का हाथ अंदर आया और हम सब पत्रों को निकाल-निकाल कर एक थैले में डालने लगा। थैले में बंद होने से पहले मैंने देख लिया कि यह खाकी वर्दी पहने हुए डाकिया है। उसने पेटी में ताला डाला और हमारे बोरे को साइकिल पर रखकर चल पड़ा। जल्दी ही हम बिशनपुर डाक घर पहुँच गए। डाकिए ने हमारे बोरे को डाकघर की मेज़ पर उलट दिया। फिर वह एक भारी ठप्पे से हम पर लगे टिकट पर सील लगाने लगा- ठप-ठपा-ठप, ठप-ठपा-ठप! ठप! उसके हाथ बड़ी तेज़ी से चल रहे थे। सील लगाना खत्म करके उसने हमें इकट्ठा किया और एक दूसरी मेज़ पर पटक दिया।

मैंने सोचा, "अब कुछ देर चैन की साँस लेकर सुस्ता लूँ।" पर वहाँ डाकघर के दो लोग आए और उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। इस तरह पत्रों के एक ढेर के बजाय दो ढेरियाँ बन गईं। एक गया जिले की और एक जिले के बाहर की।

तब तक डाकघर की एक महिला दो खाकी बोरे लेकर मेज़ के पास आईं और बोलीं, "जिले के बाहर वाली डाक आर.एम.एस. के बोरे में डाल दो और जिले वाली डाक गया डाकघर के बोरे में।

डाकिए ने वैसा ही किया। मुझे आर.एम.एस. के बोरे में डाला गया। मेरा दिल बैठा जा रहा था "मुझे गया क्यों ले जा रहे हैं? मुझे तो दिल्ली जाना है और ये आर.एम.एस क्या वला है?" न जाने कैसे उस बोरे ने मेरे मन की बात सुन ली। मुझे सहलाते हुए बोलने लगा "दिल्ली बहुत दूर है। वहाँ तुम रेलगाड़ी से जाओगे। दिल्ली जाने वाली रेलगाड़ी गया स्टेशन पर रुकती है, इसलिए मैं तुम्हें गया आर.एम.एस. ले जा रहा हूँ। आर.एम.एस. का अर्थ है–'रेलवे मेल सर्विस'। हर बड़े स्टेशन पर इसका कार्यालय है। यहाँ पर आसपास की डाक इकट्ठी की जाती है और दिशावार छाँटी जाती है। फिर उन्हें ट्रेन से भेज दिया जाता है।" मुझे बोरे की बात से तसल्ली हुई। हम कब गया पहुँचे मुझे पता ही नहीं चला।

एकाएक से किसी ने बोरे का मुँह खोला और बाहर की रोशनी से मेरी आँखें चौंधिया गईं। एक डाकिए ने सारे पत्र बाहर मेज़ पर उलट दिए। चार–पाँच लोग फुर्ती से आए और फिर शुरू हुई छँटाई। मैं ढेर के ऊपर की ओर था। मैंने जल्दी से अपने आस–पास नज़र दौड़ाई एक बहुत बड़े कमरे में खूब सारे लोग थे। अलग–अलग मेज़ों पर छँटाई चल रही थी। लेकिन यह क्या? दीवार में खूब सारे छोटे–छोटे खानों वाली खुली आलमारियाँ थीं। ऐसे ही कुछ खाने आड़े में भी बने थे। हर खाने के ऊपर कुछ लिखा था। हमारे अलावा और बहुत सारे पत्र थे, बहुत सारे बंद बोरे भी।

एक मैडम कुछ पत्र लेतीं और उन पर लिखा पता पढ़–पढ़ कर अलग–अलग खानों में डाल देती। मेरी बारी अब आई यह सोचकर मेरे दिल की धड़कन तेज़ हो गई। तभी मैडम ने मुझे एक अंधेरे–से खाने में डाल दिया। उसके ऊपर लिखा था–**दिल्ली।** वहाँ और भी कई सारे पत्र थे। उन सभी पर दिल्ली के पते लिखे थे। थोड़ी देर बाद एक डाकिए ने हमें निकाल कर एक बोरे में डाल कर बन्द कर दिया। बोरे में पड़े–पड़े मुझे नींद लग गई। हर थोड़ी देर में झटका पड़ता मानो बोरे को उठा कर कोई कहीं पटक रहा हो। जब मेरी नींद खुली तो ज़मीन हिल रही थी और रह–रहकर सीटी की आवाज़ आ रही थी। मैं समझ गया कि मुझे गया जंक्शन से दिल्ली की रेलगाड़ी में चढ़ा दिया गया है।

पूरे 18 घंटे चलने के बाद हम दिल्ली स्टेशन पहुँचे। गाड़ी से निकाल कर हमें एक लाल रंग की छोटी बस में लाद दिया गया। इस तरह मैं दिल्ली के बड़े डाकघर में पहुँचा। वहाँ के डाकिए ने मुझे अपनी थैली में डाल दिया और हम साइकिल पर निकल पड़े। हर ज़गह मेरी मुलाकात नए पत्र मित्रों से होती और मेरे पुराने साथी छुटते रहते। डाकिये ने मुझे किसी के घर के दरवाजे के नीचे से अंदर सरका दिया। थोड़ी देर बाद रमेश की माँ बाहर से घर आई तो उन्होंने मुझे उठाकर मेज़ पर रख दिया। शाम को जब रमेश घर लौटा तो मुझे पाकर वह बहुत खुश हुआ। राखी के दिन रमेश ने वही राखी बाँधी और मुझे उठाकर और पत्रों के साथ एक आलमारी में रख दिया। यहीं अब मैं एक आराम की ज़िन्दगी बिता रहा हूँ।

शब्दार्थ

बौछार	–	भरमार
विविध	–	अनेक
पत्र-पेटी	–	लेटर-बॉक्स
वर्दी	–	पोशाक
आर.एम.एस.	–	रेलवे मेल सर्विस (रेल मेल सेवा)
तसल्ली	–	ढाढ़स

अभ्यास

बातचीत के लिए

(क) डाकिया चिट्ठी के अलावा और क्या-क्या बाँटता है?

(ख) यदि आपको पत्र लिखने का मौका मिले तो, आप किसे पत्र लिखना चाहेंगे और क्यों?

(ग) आप उस पत्र में क्या-क्या लिखेंगे?

(घ) जिसको पत्र लिखा जा रहा है, उस तक पत्र पहुँच जाए इसके लिए पत्र पर क्या लिखना होगा?

पाठ से

(क) एक पत्र की आत्मकथा कौन कह रहा है और किसके बारे में कह रहा है?
(ख) हवाई जहाज से भेजे जाने वाले पत्र को आप कैसे पहचानेंगे?
(ग) आर. एम. एस. का क्या अर्थ होता है?
(घ) आर. एम. एस. कार्यालय में पत्रों के साथ क्या-क्या होता है?
(ङ) डाक से भेजे जाने वाले पत्र पर डाक टिकट क्यों लगाते हैं?
(च) पत्र पर लगे डाक टिकट पर सील क्यों लगाया जाता है?
(छ) भेजे जाने के दौरान विभिन्न स्थानों पर पत्रों की छँटाई की जाती है, क्यों?

भाषा के नियम

(1) नीचे दिए गए शब्द-जोड़ों से वाक्य बनाइए -

भीड़-भाड़ - ....
चहल-पहल - ....
आस-पास - ....
अलग-थलग - ....

(2) नीचे दिए गए वाक्यों में एक शब्द किसी दूसरे की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द को 'विशेषण' कहते हैं। वाक्यों में विशेषण शब्दों पर घेरा लगाइए –

(क) शांति ने सुन्दर-सी राखी बनाई।
(ख) मैं एक काली-सी गुफा में जाकर गिर पड़ा।
(ग) मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था।
(घ) डाकिया खाकी वर्दी पहने हुए था।
(ङ) पहले समुद्र में चलने वाले बड़े-बड़े जहाजों से पत्र भेजे जाते थे।
(च) तुम डरो नहीं, हम तुम्हें सही ठिकाने पर पहुँचा देंगे।

3. **बताइए, रेखांकित सर्वनाम शब्द किसके लिए आए हैं–**

(क) वे सब अलग-अलग जगह जा रहे थे। --------------------

(ख) मैं तो एक पीले लिफाफे में बंद था। --------------------

(ग) उसने पेटी में ताला डाला । --------------------

(घ) उन्होंने हमें बाँटना शुरू किया। --------------------

(ङ) उसने रमेश को एक पत्र लिखा। --------------------

अनुमान लगाइए

(i) शांति ने 03 अगस्त 2011 को पत्र लिखा। रमेश तक वह पत्र कब पहुँचा होगा?

(ii) शांति का पत्र कहाँ-कहाँ से गुजरते हुए रमेश तक पहुँचा?

माँ —> थैली —> ☐ —> ☐ —> ☐ —> ☐ —> रमेश

पता कीजिए

हमलोग पत्र लिखने अथवा भेजने के लिए डाकघरों से क्या-क्या खरीदते हैं? आजकल इनके क्या मूल्य हैं?

नाम	मूल्य

पत्र लिखिए

अपनी पाठ्यपुस्तक में से सबसे मज़ेदार कहानी के बारे में अपनी मामीजी को पत्र लिखिए ।

संवाद

1. पत्र जब पेटी में बाकी पत्रों से मिला तो उनके बीच क्या बातचीत हुई होगी? कल्पना कीजिए और उनके संवाद बोलिए।
2. भारी ठप्पे से पत्रों पर सील लगाने पर उन्हें कैसा लगा होगा? उन्होंने डाकिए से क्या कहा होगा? कल्पना कीजिए और संवाद बोलिए।

कुछ इस तरह

इस पाठ में पत्र ने अपनी आत्मकथा बताई है।

1. आप भी अपने बारे में बताते हुए अपनी आत्मकथा लिखिए।

बूझो तो जानें

दो रुपए का एक लिफाफा,
मिलता था अगर पहले,
आज डाकघर के लिफाफे
दो मिलते ले दहले ।।
बारह रुपए दे मुनिया ने,
माँगे पाँच लिफाफे,
कितने शेष और फिर देकर,
मुनिया गहे लिफाफे।

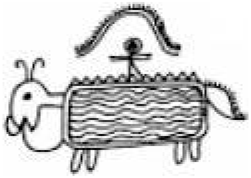

12. कविता का कमाल

बहुत पुरानी बात है। मदन नाम का एक लड़का अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था।

माँ - बेटा बहुत गरीब थे और उनके पास कमाई का कोई साधन नहीं था। फिर भी मदन दिनभर खेल-कूद में ही समय बिता देता था।

तंग आकर एक दिन उसकी माँ ने कहा, "अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।"

मदन घर से निकल पड़ा। वह गहरी सोच में डूबा था कि क्या करे? कैसे कमाए पैसे? अचानक उसे डुगडुगी पीटने की आवाज़ सुनाई दी।

"सुनो, सुनो, सुनो! राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेंगी।"

मदन चौकन्ना हो गया। 'सौ अशर्फ़ियाँ!' यह तो बना बनाया मौका था। मदन राजमहल की ओर चल पड़ा। चलते-चलते वह सोच रहा था कि उसने कभी कविता तो रची न थी। क्या सुनाएगा वहाँ पहुँचकर? लेकिन वह मस्त स्वभाव का था इसीलिए

अपनी गर्दन झटकते हुए उसने सोचा कि रास्ते में कुछ न कुछ सूझ ही जाएगा।

थोड़ी दूर पहुँचा तो एक कुत्ता दिखाई दिया। कुत्ता पंजों से ज़मीन खोदने में लगा था। मदन ने सोचा कि क्यों न अभी अपनी कविता शुरू की जाए।

बोला, "खुदुर-खुदुर का खोदत है?" यह पंक्ति उसे इतनी पसंद आई कि उसे दोहराते हुए चलता गया। वह एक तालाब के पास पहुँचा। वहाँ एक भैंस पानी पी रही थी।

मदन बोल पड़ा, "सुरुर-सुरुर का पीबत है?" मुस्कराते हुए वह आगे बढ़ा। इतने में एक पेड़ की डाल पर चिड़िया बैठी दिखाई पड़ी। वह पत्तियों के बीच से सिर निकालकर इधर-उधर झाँक रही थी।

देखते ही मदन के मुँह से निकल पड़ा, "ताक-झाँक का खोजत है?" तीनों पंक्तियों को रटते वह चलता गया। रटते-रटते उसे अपने आप एक और पंक्ति सूझ गई।

"हम जानत, का ढूँढ़त है!" अब तो सचमुच उसके मन में लड्डू फूटने लगे। कितने आराम से वह कविता रचता चला जा रहा था। तभी, 'सर्र' की आवाज़ सुनाई पड़ी। मदन ने चौंककर देखा कि एक साँप रेंगता जा रहा था।

तुरंत ही उसने आगे की पंक्तियाँ भी तैयार कर ली, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है!"

अब सिर्फ़ एक पंक्ति बाकी रह गई थी। पर मदन निश्चिंत था कि वह पंक्ति भी चलते-चलते सूझ जाएगी।

राजधानी पहुँचा तो राजमहल का रास्ता ढूँढ़ने की समस्या खड़ी हुई। पास में खड़े एक आदमी से मदन ने पूछा, "भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?"

"क्यों नहीं, क्यों नहीं, मुझे नहीं तो और किसे मालूम होगा?" उस आदमी ने उत्तर दिया।

मदन ने सोचा कि ज़रूर यह राजमहल का ही कोई कर्मचारी होगा। उसने पूछा, "आप कौन हैं, साहब?"

उत्तर मिला, "धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह।"

मदन के दिमाग में एकाएक बिजली कौंधी। 'धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!' क्या बढ़िया शब्द थे। उसने इन्हीं शब्दों से अपनी कविता की अंतिम पंक्ति बना डाली।

वह खुशी-खुशी राजमहल पहुँचा। अंदर घुसने से पहले उसने अपनी कविता फिर दोहराई,

खुदुर-खुदुर का खोदत है?
सुरुर-सुरुर का पीबत है?
ताक-झाँक का खोजत है?
हम जानत, का ढूँढ़त है!
सरक-सरक कहाँ भागत है?
जानत हो, हम देखत है।
हमसे ना बच सकत है!
धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!

राजमहल में कवि-सम्मेलन शुरू हो चुका था। एक-एक करके कवि अपनी कविता सुना रहे थे।

बारी आने पर मदन ने भी अपनी कविता सुनाई। सुनने वाले एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। क्या अर्थ होगा इस विचित्र कविता का? पर किसी ने भी यह नहीं दिखाया कि उसे कविता समझ में नहीं आई। राजा के सामने वे मूर्ख नहीं दिखना चाहते थे।

उस रात राजा साहब की भी नींद गायब हो गई। मदन की कविता उनको सता रही थी। छज्जे पर खड़े होकर वे कविता दोहराने लगे। सोचा कि शायद इसी तरह इस पहेली को बूझ पाएँ।

संयोग से उसी समय कुछ चोर राजा के खज़ाने में सेंध लगा रहे थे। उनमें से

एक चोर वही धन्नूशाह था जिसने आज दिन में मदन को राजमहल का रास्ता बताया था।

ऊँची आवाज़ में राजा साहब बोलते जा रहे थे, "खदुरु-खदुरु का खोदत है?"

चोरों ने सुना तो चौंककर रुक गए। क्या किसी ने देख लिया था उन्हें ? डर के मारे चोरों का गला सूखने लगा। अपने साथ ज़मीन को मुलायम करने के लिए पानी लाए थे। धन्नूशाह ने उठकर एक-आध घूँट निगला।

तभी राजा साहब बोले, "सुरुर-सुरुर का पीवत है?"

चोरों को काटो तो खून नहीं। सहमकर इधर-उधर झाँकने लगे कि कोई पकड़ने तो नहीं आ रहा है?

राजा ने फिर कहा, "ताक-झाँक का खोजत है? हम जानत, का ढूँढ़त है!"

यह सुनकर चोरों ने सोचा कि किसी तरह जान बचाकर भागा जाए। वे दबे पाँव बाहर सरकने लगे।

पर राजा की आवाज़ आई, "सरक-सरक कहाँ भागत है? जानत हो, हम देखत है? हमसे ना बच सकत है! धन्नूशाह, भाई भन्नूशाह!

धन्नूशाह की तो साँस वहीं रुक गई। उसने सोचा, 'अब कोई चारा नहीं। बस राजा साहब से दया की भीख माँग सकता हूँ।' दौड़कर उसने राजा साहब के पैर पकड़ लिए और विनती करने लगा, "क्षमा कर दीजिए महाराज! अब भूलकर भी ऐसा

काम नहीं करूँगा। वैसे हमने कुछ लिया ही नहीं। आपका खज़ाना सही सलामत है।"

राजा साहब हक्के-बक्के रह गए। उन्होंने तुरंत सिपाहियों को बुलाकर छानबीन करवाई तो पता चला कि उनका खज़ाना लुटते-लुटते बचा था।

मदन को बुलवाया गया। राजा ने शाबाशी देकर कहा, "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है।"

मदन को सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया गया। वह खुशी-खुशी अपने गाँव लौट आया। अब उसके पास अपने और अपनी माँ के रहने के लिए काफ़ी धन था।

शब्दार्थ

डुगडुगी पीटना	=	(ढोल-बाजे के साथ) प्रचार करना, सूचना देना
निश्चिंत	=	चिंता से मुक्त
मन में लड्डू फूटना	=	मन ही मन खुश होना।
मालामाल कर देना	=	काफी धन देना
हक्का-बक्का हो जाना	=	हैरान रह जाना
अशर्फ़ियाँ	=	पुराने जमाने में प्रचलित सोने-चाँदी के सिक्के
चौकन्ना	=	सावधान

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. राजमहल क्या है? इसमें कौन-कौन लोग रहते होंगे?
2. सुखी रहने के लिए मदन एवं उसकी माँ ने सोने-चाँदी से क्या-क्या खरीदा होगा?
3. राजा का खजाना लुटने से बच गया, कैसे?
4. किन-किन अवसरों पर डुगडुगी पीटी जाती होगी, इनकी सूची बनाइए।
5. आप किन-किन कामों के लिए डुगडुगी पीटेंगे? इनकी भी सूची बनाइए।
6. किसी बात को लोगों तक पहुँचाने के और कौन-से तरीके हो सकते हैं?

पाठ से

1. माँ ने तंग आकर मदन से क्या कहा?
2. मदन को कविता रचने की प्रेरणा किन-किन चीजों से मिली?
3. धन्नूशाह को महल का रास्ता इतनी अच्छी तरह क्यों मालूम था?
4. मदन को कविता रचने की आवश्यकता क्यों पड़ी?
5. राजा ने मदन को शाबासी व इनाम क्यों दिया?

6. किसने, किससे कहा?

(क) अब मैं तुझे बैठाकर नहीं खिला सकती। जा, कुछ पैसे कमाकर ला।

(ख) राजदरबार में कवि सम्मेलन हो रहा है। सबसे अच्छी कविता सुनाने वाले को सौ अशर्फ़ियाँ इनाम में मिलेगी।

(ग) भैया, आपको राजमहल का रास्ता मालूम है?

(घ) "क्षमा कर दीजिए महाराज!"

(ङ) "यह सब तुम्हारी कविता का कमाल है"।

----

(7) पाठ के आधार पर सही (✓) और गलत (X) का निशान लगाइए।

(क) मदन अपनी विधवा माँ के साथ गाँव में रहता था। ☐

(ख) राजमहल में एक संगीत प्रतियोगिता का आयोजन हो रहा था। ☐

(ग) मदन चलते-चलते एक नदी के पास पहुँचा। ☐

(घ) मदन को राजा ने सोने-चाँदी से मालामाल कर दिया। ☐

आपकी समझ से

1. (क) ज्यादा टी॰ वी॰ देखने के कारण तंग आ कर आपकी माँ या पिताजी आपको क्या कहते हैं?

   (ख) मदन की कविता को सभी लोग विचित्र क्यों मान रहे थे?

2. अशर्फ़ियाँ क्या होती हैं? अगर कोई आपको सौ अशर्फ़ियाँ दे तो आप उनका क्या करेंगे?

भाषा के नियम

1. 'रटते-रटते' उसे अपने आप एक पंक्ति सूझ गई। इस वाक्य में 'रटते' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है। इस तरह के अन्य शब्द पाठ से ढूँढ़कर लिखिए –

   -------------- --------------- -------------- -------------- --------------

2. **इन मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करते हुए अर्थ बताइए–**

   (क) काटो तो ख़ून नहीं –

   (ख) हक्का-बक्का रह जाना–

   (ग) दया की भीख माँगना–

   (घ) मालामाल कर देना–

   (ङ) मन में लड्डू फूटना–

   (च) काम तमाम कर देना–

3. पाठ में से वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल वाले तीन-तीन वाक्य छाँटकर लिखिए –

वर्तमानकाल

(i) --

(ii) --

(iii) --

भूतकाल

(i) --

(ii) --

(iii) --

भविष्यत्काल

(i) --

(ii) --

(iii) --

4. पाठ में कविता को 'विचित्र' कहा गया है। आप कविता के लिए किन विशेषण शब्दों का प्रयोग करेंगे?

....

5. इनके लिए भी दो-दो विशेषण शब्द सुझाइए–

(i) माँ – ---------------- ----------------

(ii) महल – ---------------- ----------------

(iii) मदन – ---------------- ----------------

विराम-चिह्न

नीचे दिए गए वाक्यों में सही विराम-चिह्न लगाइए –

(क) मदन ने कहा महाराज मैंने बहुत अच्छी कविता बनाई है

(ख) चोरों ने सारा धन चुरा लिया

(ग) कहाँ चल दिए

(घ) बाप रे इतना पैसा कहाँ से आया

(ङ) क्या सुरुर सुरुर बोल रहे हो

संवाद और अभिनय

1. 'कविता का कमाल' कहानी का कक्षा या विद्यालय में मंचन कीजिए।
2. आप इस नाटक में किस पात्र की भूमिका निभाना चाहेंगे और क्यों?
3. मंचन के लिए आपको किन-किन पात्रों और सामानों की ज़रूरत पड़ेगी? एक सूची बनाइए।

आपकी कल्पना और कलम

1. अगर मदन यह कहानी सुनाता तो कैसे सुनाता ? मदन की जगह स्वयं को रखते हुए 'कविता का कमाल' कहानी सुनाइए और लिखिए।
2. कहानी का यह शीर्षक किस आधार पर रखा गया होगा?
3. आप कहानी के लिए कोई दो मज़ेदार शीर्षक सुझाइए। साथ में यह भी बताइए कि आपने ये शीर्षक क्यों रखे?
4. **पाठ में से कोई तीन सवाल बनाइए–**

(क) जिनके उत्तर हाँ / नहीं में होगा ।

(ख) जिनमें क्यों का जवाब देना होगा ।

(ग) जिनमें क्या का जवाब देना होगा ।

बूझो तो जाने

दीदी की शादी में आए,
सजधज सोलह बाराती,
बाराती जन जो भी आए,
उनको गुझिया ही भाती।।
चार-चार तो बड़ों-बड़ों को
मुनिया को दो दी जातीं।
आठ बड़े तब शेष लड़कियाँ,
कुल कितनी गुझिया खातीं।।

13. कदम्ब का पेड़

यह कदम्ब का पेड़ अगर माँ,
होता यमुना तीरे।
मैं भी उस पर बैठ कन्हैया,
बनता धीरे-धीरे।
ले देतीं यदि मुझे बाँसुरी,
तुम दो पैसे वाली।
किसी तरह नीची हो जाती,
यह कदम्ब की डाली।
तुम्हें नहीं कुछ कहता पर मैं–
चुपके-चुपके आता।
उस नीची डाली से अम्मा–
ऊँचे पर चढ़ जाता।
वहीं बैठ फिर बड़े मज़े से,
मैं बाँसुरी बजाता।
अम्माँ-अम्माँ कह वंशी के–
स्वर में तुम्हें बुलाता।
सुन मेरी वंशी को माँ तुम,
इतनी खुश हो जातीं।
मुझे देखने काम छोड़ कर–
तुम बाहर तक आतीं।
तुमको आता देख बाँसुरी रख–
मैं चुप हो जाता।
एक बार माँ कह पत्तों में,
धीरे से छिप जाता।
तुम हो चकित देखतीं चारों–
ओर न मुझको पातीं ।
तब व्याकुल-सी हो कदम्ब के–
नीचे तक आ जातीं।
पत्तों का मर-मर स्वर सुन जब,
ऊपर आँख उठातीं।
मुझे देख ऊपर डाली पर–
कितना घबरा जातीं।
गुस्सा होकर मुझे डाँटतीं,
कहतीं 'नीचे आ जा'।
पर जब मैं न उतरता हँस कर–
कहतीं मुन्ना राजा।
नीचे उतरो मेरे भैया,
तुम्हें मिठाई दूँगी।
नए खिलौने माखन मिश्री,
दूध मलाई दूँगी।
मैं हँस कर सबसे ऊपर की–टहनी
पर चढ़ जाता।
पत्तों में छिप-कर धीरे से,
फिर बाँसुरी बजाता।
बहुत बुलाने पर भी माँ जब–
मैं न उतर कर आता।
तब माँ, माँ का हृदय तुम्हारा–
बहुत विकल हो जाता।
तुम आँचल पसार कर अम्माँ,
वहीं पेड़ के नीचे।

ईश्वर से कुछ विनती करतीं,
बैठी आँखें मीचे।
तुम्हें ध्यान में लगी देख मैं,
धीरे-धीरे आता।
और तुम्हारे फैले आँचल
के नीचे छिप जाता।
तुम घबरा कर आँख खोलतीं,

पर माँ, खुश हो जातीं,
जब अपने मुन्ना राजा को-
गोदी में ही पातीं।
इसी तरह कुछ खेला करते-
हम तुम धीरे-धीरे
यह कदंब का पेड़ अगर,
माँ होता यमुना तीरे ।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

शब्दार्थ

चकित होना	–	हैरान होना
व्याकुल	–	बेचैन
स्वर	–	आवाज़
विनती करना	–	प्रार्थना करना

अभ्यास

कविता में से

1. बालक कन्हैया क्यों बनना चाहता है?
2. माँ का हृदय व्याकुल क्यों हो जाता है?
3. माँ ईश्वर से क्यों विनती करती?
4. बच्चे को नीचे उतारने के लिए किन-किन प्रलोभनों की बात की गई है?
5. बालक किसके साथ और कौन-सा खेल खेलना चाहता है?

आपके अनुभव

1. इस कविता की कौन-कौन सी पंक्तियाँ आपको सबसे अच्छी लगी और क्यों ?
2. अपनी माँ को खुश करने के लिए आप कौन-कौन से काम करते हैं?
3. पेड़ पर चढ़ने का अपना कोई किस्सा या अनुभव सुनाइए ।
4. **नीचे लिखे वाक्यों को अपने अनुभव के आधार पर पूरा कीजिए -**

- मेरी माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं, क्योंकि ------------------------------------

  ----

- मेरी माँ चाहती हैं कि --

- मैं चाहता हूँ कि मेरी माँ --

कैसे पता चला ?

कविता में से उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनसे पता चलता है कि -

1. उसका बच्चा पेड़ पर बैठा है।
2. किसी कठिनाई में हम ईश्वर को याद करते हैं।

शब्दों की दुनिया

1. **'कल'** शब्द में **'वि'** जोड़ने से शब्द बनता है–**'विकल'**।
'कल' का अर्थ होता है–चैन, आज के पहले का दिन, आज के बाद आने वाला दिन, मशीन। **'वि'** लगने से अर्थ बदल जाता है। **'विकल'** का अर्थ है **'बेचैन'**।
आप भी नीचे दिए गए शब्दों में **'वि'** लगाकर नए शब्द बनाइए–

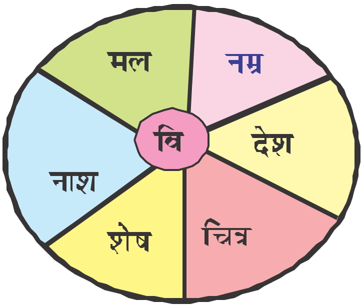

------------------- ------------------- -------------------

------------------- ------------------- -------------------

2. सही शब्दों से पत्र को पूरा कीजिए –

पक्षी, झाड़ियाँ, गेट, फूल, फव्वारा, नीला, पेड़, बगीचे

प्रिय मित्र अली,

इस पत्र में मैं तुम्हें अपने ----------- के बारे में लिख रहा हूँ। मेरे बगीचे में रंग-बिरंगे ----------- खिले हैं। वहाँ आम के बड़े-बड़े पाँच ----------- हैं। पानी का एक ----------- भी है। वहाँ सुंदर ----------- उगी है। ऊपर ----------- आसमान दिखाई देता है। आसमान में ----------- उड़ते रहते हैं। बगीचे के अंदर जाने के लिए एक बड़ा ----------- है। अगली बार आओगे तो तुम्हें बगीचा दिखाऊँगा।

तुम्हारा मित्र
ननकू

3. **वचन के सही रूप से खाली स्थान को भरें –**

- वहन ----------- में छिप गया। (पत्ता)
- पेड़ की ----------- नीचे आ गई थी। (डाली)
- कन्हैया के पास एक ----------- है। (बाँसुरी)
- चिड़िया ने ----------- पर घोंसला बनाया। (पेड़)
- हमारे बगीचे में आम के ----------- की कतारें हैं। (पेड़)
- मामाजी नया ----------- लाए। (खिलौना)
- उसने मेरे ----------- सँभालकर रखे थे। (खिलौना)
- माँ की ----------- भर आईं। (आँख)

4. **इस कविता में अनेक क्रिया शब्द आए हैं, जैसे – बुलाना, देखना, चढ़ना, बजाना आदि।**

कविता में से कोई पाँच पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए जिनमें क्रिया शब्द आए हैं। उन पंक्तियों में क्रिया शब्दों पर घेरा लगाइए।

- --
- --
- --
- --
- --

5. **कविता में माँ बालक को कई नामों से पुकारती है – मुन्ना, राजा, भैया। आपकी माँ आपको क्या-क्या कहकर पुकारती हैं ?**

---------------------   -----------------------   ------------------

6. **नीचे दी गई पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए –**

- **एक बार माँ कह पत्तों में, <u>धीरे से</u> छिप जाता ।**
- **इसी तरह कुछ खेला करते, हम तुम <u>धीरे-धीरे</u> ।**

दोनों वाक्यों में 'धीरे' शब्द का प्रयोग हुआ है ।

1. दोनों वाक्यों में धीरे' शब्द के अर्थ में क्या अंतर है?

पहले वाक्य में 'धीरे से' शब्द का अर्थ है-

- चुपचाप
- बिना आहट के
- किसी को पता न चले

जबकि दूसरे वाक्य में धीरे-धीरे का अर्थ है –

- आराम से
- तसल्ली से

वाक्यों के रेखांकित अंशों का अर्थ समझाइए –

- <u>टप्</u>! पेड़ से आम टपका ।
- <u>टप् - टप् - टप्</u> ! पेड़ से आम टपकने लगे ।

2. **नीचे दी गई वर्ग पहेली में खाने की आठ चीज़ों के नाम दिए गए हैं। खोजकर लिखिए–**

चा	ज	चा	व	ल
ट	ले	ह	ल	वा
च	बी	दा	खी	र
ट	प	ल	पू	री
नी	क	खि	च	ड़ी

------------------------- ------------------------- -------------------------

------------------------- ------------------------- -------------------------

कुछ करने के लिए

1. आपके आस-पास कौन-कौन से पेड़ हैं? उनके नाम लिखिए।
2. पेड़ों से होने वाले फायदों के बारे में बताइए।
3. अपने बुजुर्गों से बात करके पता कीजिए कि उनके समय में गाँव में पेड़ों की संख्या अधिक थी या आज अधिक है। यदि पेड़ों की संख्या कम हुई है तो उसके क्या कारण हैं? पेड़ों की संख्या बढ़ाने के उपाय खोजिए।
4. इस कविता को कहानी के रूप में सुनाइए और लिखिए।
5. श्री कृष्ण बचपन में क्या-क्या शरारतें करते थे? पता कीजिए, पढ़िए और कक्षा में सुनाइए।

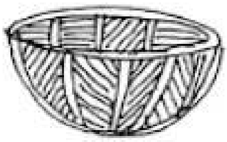

14. दोहे

का बरपा जब कृपि सुखाने।
समय चूकि पुनि का पछिताने।।

तुलसी इह संसार में भाँति-भाँति के लोग।
सबसों हिल-मिल चलिए, नदी-नाव संजोग।।

परहित सरिस धरम नहीं भाई।
पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

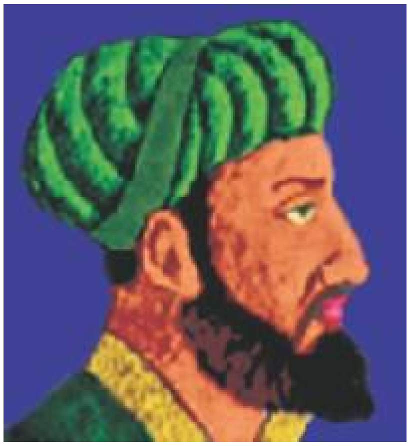

रहिमन विपदा हूँ भली, जो थोड़े दिन होय।
हित अनहित या जगत में, जानि परत सब कोय।।

बड़े बड़ाई न करे, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख टका मो मोल।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाई।
रहिमन सींचे मूल को, फुलई फलई अघाइ।।

अति का भला न बरसना, अति की भली न धूप।
अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप।।

करत-करत अभ्यास ते, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।।
पंथी को छाया नहीं, फल लागे अति दूर।।

– तुलसी, रहीम, कबीर

शब्दार्थ

सरिस	–	समान, बराबर
सम	–	समान, बराबर
अधमाई	–	पाप
विपदा	–	संकट, मुसीबत
अघाना	–	पेट भर खाना
साधना	–	अभ्यास करना, प्रयास करना
जड़मति	–	मूर्ख
सुजान	–	चतुर
सिल	–	पत्थर
संजोग	–	मेल

बातचीत के लिए

1. आप संकट में सहायता के लिए किनके-किनके पास जाते हैं?
2. कोई काम आपको अच्छी तरह आ जाए इसके लिए आप क्या करते हैं?
3. एक साथ कई काम करने पर काम सही ढंग से नहीं हो पाता है। काम सही हो इसके लिए क्या करना चाहिए?
4. हमारा सच्चा मित्र या शुभचिंतक कौन है, इसका पता कब चलता है?
5. किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने समय पर काम नहीं किया और आपको नुकसान हुआ हो।

पाठ में से

1. वर्षा के बहुत ज्यादा या कम होने से क्या-क्या नुकसान होता है?
2. किसे सबसे अच्छा कार्य कहा गया है?
3. विपत्ति से हमें क्या पता चलता है?

आपकी समझ से

1. आप अपने इन मित्रों को कौन-सा दोहा सुनाकर समझाएँगे-

(क) जो झगड़ते रहते हैं।

(ख) जो अपनी बड़ाई खुद करते हैं।

(ग) जो घमंड करते हैं।

2. पाठ के अनुसार सूची बनाइए –

(क) जो काम हमें करने चाहिए।

(ख) जो काम हमें नहीं करने चाहिए।

3. 'दोहावली' पाठ में तुलसी, रहीम और कबीर के तीन-तीन दोहे दिए गए हैं। इनमें से रहीम के दोहे पहचानकर लिखिए। यह भी बताइए कि आपने इन्हें कैसे पहचाना।

भाषा के नियम

1. दिए गए वाक्यों में रेखांकित शब्द के विपरीत अर्थ वाले शब्द से वाक्य को पूरा कीजिए –

(क) हमें न तो बहुत <u>अधिक</u> बोलना चाहिए न ही बहुत ----------------।

(ख) हम सबको <u>दोस्त</u> बनाएँ न कि ----------------।

(ग) विपत्ति में <u>अपने</u> और ---------------- की पहचान हो जाती है।

(घ) हमें एक समय में <u>एक</u> ही काम पर ध्यान देना चाहिए न कि ---------------- कामों पर।

(ङ) बार-बार अभ्यास करने से <u>मूर्ख</u> भी ---------------- बन सकता है।

(च) दूसरों को कष्ट पहुँचाना <u>पाप</u> है जबकि दूसरों की सहायता करना ----------------।

2. दिए गए शब्दों का वाक्यो में प्रयोग कीजिए –

- संसार – --
- पछताना – --
- विपदा – --
- अभ्यास – --

3. नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए –

- बरषा – ----------------
- सरिस – ----------------
- अधमाई – ----------------
- जड़मति – ----------------
- रसरी – ----------------
- पंछी – ----------------

शब्दों की दुनिया

1. नीचे कृषि और वर्षा से जुड़े शब्दों को लिखें–

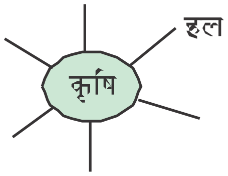

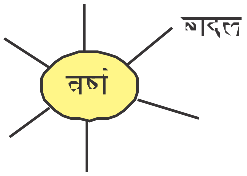

यह भी बताइए कि क्या कृषि और वर्षा में कोई जुड़ाव हो सकता है? कैसे ?

2. **नीचे दिए गए शब्दों से दो-दो नए शब्द बनाइए –**

- हित – ....
- बड़ा – ....
- सम – ....

कुछ करने के लिए

1. पाठ में दिए गए दोहों के अलावा कुछ दोहे ढूँढ़िए और अपनी कक्षा में सुनाइए।

आपकी कल्पना

1. चित्र में आदमी ने क्या कहा होगा?

15. चिट्ठी आई है

भगवानपुरहाट
08/11/11

प्रिय सहेली बेबी,
नमस्ते ।

आज तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि तुम बिहार में होने वाले छठ पर्व के बारे में जानना चाहती हो।

हमारे बिहार में छठ पर्व का बड़ा ही महत्व है। यहाँ गाँव या शहर हर क्षेत्र में छठ व्रत धूम-धाम से मनाया जाता है। यह व्रत कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है। लगभग हर घर में छठ पूजा की जाती है। लोग कई तरह की मन्नतें छठी मइया से माँगते हैं तथा पूरी होने पर व्रत रखते हैं।

कार्तिक महीने के प्रारंभ से ही लोग इस पावन पर्व की तैयारियों में लग जाते हैं। इस अवसर पर लोग घरों एवं गलियों की सफ़ाई करते हैं। घाटों एवं घाट तक जाने वाले रास्ते की भी साफ़-सफ़ाई की जाती है। चारों ओर छठ के गीत सुनाई देने लगते हैं। लगभग सभी परदेशी गाँव आ जाते हैं। यह व्रत चार दिनों तक चलता है, जिसमें सभी वर्ग के स्त्री-पुरुष व्रत रखते हैं। इस व्रत में जात-पात का भेद-भाव बिल्कुल नहीं रह जाता है।

यह व्रत नहाय-खाय से प्रारंभ होता है। नहाय-खाय के दूसरे दिन खरना होता है। इस दिन व्रती दिनभर उपवास रखने के बाद रात्रि में रोटी और खीर से खरना करते हैं तथा प्रसाद बाँटते हैं। फिर षष्ठी के दिन लोग नहा-धोकर नए कपड़े पहन छठ करने के लिए घाट पर जाते हैं। यहाँ व्रती नदी या तालाब के तट पर डूबते हुए सूर्य को फल तथा पकवान से अर्घ्य देकर पूजन करते हैं।

वापस घर आकर शाम को आँगन में ईख तथा ठेकुआ से कोसी भर कर छठ का गीत गाकर आरती करते हैं।

सुबह
हैं। यह अर्घ
ग्रहण करते
इस प्र
छठ पर्व की
ज़रूर करना
तुम्हा

हर्षोल
अर्घ
अर्घ्य
षष्ठी
पारण
व्रती
प्रयास

सुबह होने पर लोग पुनः घाट पर जाकर उगते हुए सूर्य का पूजन कर अर्घ देते हैं। यह अर्घ गाय के कच्चे दूध तथा घी से दिया जाता है। घर आकर सभी व्रती प्रसाद ग्रहण करते हैं तथा प्रसाद बाँटकर पारण करते हैं।

इस प्रकार हमारे बिहार में छठ पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया जाता है। मैं तुम्हें छठ पर्व की कुछ फोटो भेज रही हूँ। अगले छठ में तुम हमारे गाँव आने का प्रयास ज़रूर करना।

तुम्हारी सहेली

सलोनी

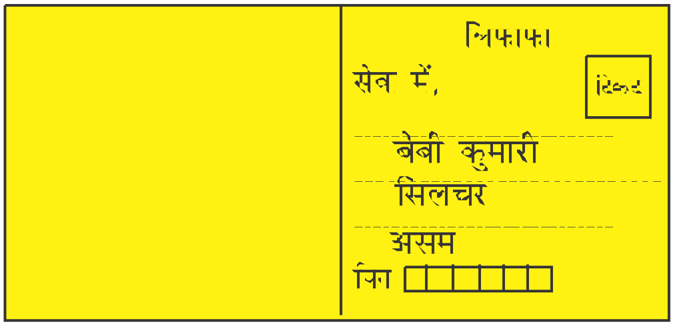

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

शब्दार्थ

हर्षोल्लास	–	खुशी-खुशी से, हर्ष और उल्लास के साथ
अर्घ	–	पूजन के लिए दूध और जल अर्पित करना
अर्घ्य	–	अर्पित की जाने वाली सामग्री
षष्ठी	–	छठा
पारण	–	उपवास के समाप्त होते अन्न ग्रहण कर व्रत तोड़ना
व्रती	–	व्रत करने वाला या वाली
प्रयास	–	कोशिश करना

अभ्यास

बातें यहाँ-वहाँ की

1. सलोनी ने बेबी को चिट्ठी लिखकर छठ पर्व के बारे में बताया। किसी दूर बैठे व्यक्ति तक अपनी बात पहुँचाने के और कौन-कौन से साधन हो सकते हैं?
2. टेलीफोन/मोबाइल और चिट्ठी के द्वारा अपनी बात बताने में क्या अंतर होगा?
3. आप छठ पर्व कैसे मनाते हैं?
4. केरवा ऽऽऽ जे फरे ऽऽऽ ला घवद से ऽऽ ....। (छठ पर गाए जाने वाले इस गीत को आप सभी ने सुना होगा। छठ पर्व पर गाए जाने वाले अन्य गीत सुनाइए।)
5. क्या आपने कभी अपने मित्र को पत्र लिखा है? उसमें क्या-क्या लिखा था?

बात चिट्ठी की

1. छठ कब और क्यों मनाया जाता है?
2. छठ पर्व कितने दिनों का होता है? उन दिनों क्या-क्या किया जाता है?
3. घाट पर जाने से पहले क्या-क्या तैयारियाँ की जाती हैं?
4. छठ पर्व पर प्रसाद में कौन-कौन सी चीज़ें होती हैं? उनकी एक सूची बनाइए।

आपकी बातें

1. आपको कौन-सा त्योहार अच्छा लगता है और क्यों?
2. छठ पर्व की कौन-सी बात आपको सबसे अच्छी लगती है और क्यों?
3. भारत के अन्य किन्हीं तीन राज्यों के प्रसिद्ध त्योहारों की सूची बनाइए और बताइए कि इस अवसर पर क्या-क्या होता है और कौन-कौन से पकवान बनाए जाते हैं?

राज्यों के नाम	प्रसिद्ध त्योहार	क्या करते हैं	मुख्य पकवान/व्यंजन
------------------	------------------	------------------	------------------------------
------------------	------------------	------------------	------------------------------

चिट्ठी-पत्री

1. पता कीजिए कि संदेश भेजने के लिए पहले किन-किन साधनों का प्रयोग किया जाता था?
2. हरकारों (पत्र ले जानेवाले) को किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ता होगा?
3. चिट्ठी के लिफाफे या पोस्टकार्ड पर क्या-क्या लिखा जाता है और क्यों?
4. आप भी नीचे दिए गए लिफाफे के आगे-पीछे पाने वाले और भेजने वाले से जुड़ी जानकारी लिखिए –
   मान लीजिए कि चिट्ठी भेजने वाले आप हैं और चिट्ठी पाने वाला आपका मित्र!

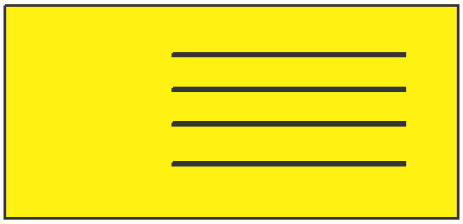

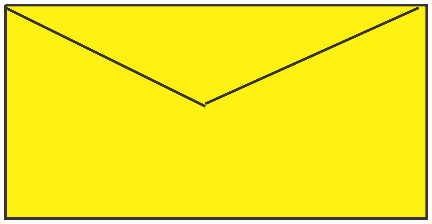

5. **आप अपने घर में कोई पुरानी चिट्ठी ढूँढ़िए। उसे देखिए और नीचे दिए गए सवालों के जवाब लिखिए–**
   (क) पत्र किसने लिखा?
   (ख) किसे लिखा ?
   (ग) किस तारीख को लिखा?
   (घ) यह पत्र किस डाकखाने में और किस तारीख को पहुँचा?
   (ङ) यह उत्तर आपको कैसे पता चला?
6. **चिट्ठी भेजने के लिए आमतौर पर पोस्टकार्ड, अंतर्देशीय पत्र या लिफाफा इस्तेमाल किया जाता है। इनका मूल्य पता करके लिखिए –**
   - पोस्टकार्ड ------------------
   - अंतर्देशीय पत्र ------------------
   - लिफाफा ------------------

बात पते की

1. 'पिन'(PIN) भारत में शब्द पोस्टल इंडेक्स नंबर का छोटा रूप है। किसी भी जगह का पिनकोड 6 अंकों का होता है। हर अंक का एक खास मतलब होता है, जैसे–
   - पहला अंक बताता है कि यह पिनकोड किस राज्य का है–बिहार, दिल्ली, उड़ीसा या फिर किसी और राज्य का।
   - दूसरे दो अंक यह बताते हैं कि राज्य के किस उपक्षेत्र का कोड है।
   - अगले तीन अंक बताते हैं कि यह ऐसे डाकघर का कोड है जहाँ से डाक बाँटी जाती है।
2. आप जहाँ रहते हैं वहाँ का पिन कोड क्या है?
3. आपके स्कूल का पिन कोड क्या है?
4. अपने किसी रिश्तेदार का पता पिन कोड के साथ लिखिए–

....

....

भाषा के नियम

1. **सही कारक-चिह्नों से वाक्य पूरे कीजिए –**

   का, में, ने, को, के लिए, से, पर

   (क) हमारे बिहार --------------- छठ पर्व ------------ बड़ा महत्व है।
   (ख) मौसी जी --------------- प्रसाद ले आओ।
   (ग) मुन्ना ने सूप --------------- चावल फटका।
   (घ) सलोनी --------------- बेबी --------------- चिट्ठी लिखी।
   (ङ) सभी बच्चे छत --------------- बैठ गए।

2. **नीचे दिए गए वाक्यों में क्रिया शब्दों पर घेरा लगाइए–**

   (क) लगभग हर घर में पूजा की जाती है।
   (ख) लगभग सभी परदेसी गाँव आ जाते हैं।
   (ग) इसमें प्रसाद भी वितरित करते हैं।
   (घ) चिट्ठी का जवाब जरूर लिखना।

3. हर्ष
(क)
(ख)
(ग)
(घ)
4. इनके
5. सही
(क)
(ख)
(ग)
(घ)
(ङ)
कुछ करने
1. छठ
साथि
2. माँ
कौन-

3. **हर्ष** + **उल्लास** से **'हर्षोल्लास'** शब्द बना है । आप भी नए शब्द बनाइए –

(क) महा + उत्सव : ------------------------

(ख) आनंद + उत्सव : ------------------------

(ग) सूर्य + उदय : ------------------------

(घ) चंद्र + उदय : ------------------------

4. इनके मतलब समझाइए –

- शुक्ल पक्ष – --
- षष्ठी तिथि – --
- अर्घ्य देना – --
- व्रती – --
- कार्तिक महीना – --
- परदेसी – --
- मन्नत – --

5. सही उत्तर पर (✓) लगाइए –

(क) 'प्रसन्नता' का अर्थ है	–	मजा,	खुशी,	दुख
(ख) 'तैयारी' का बहुवचन रूप है	–	तैयारीं,	तैयारे,	तैयारियाँ
(ग) 'पुरुष' का बहुवचन रूप है	–	पुरुषें,	पुरुष,	पुरुषों
(घ) 'घर में' का बहुवचन रूप है	–	घर में,	घर,	घरों में
(ङ) 'रात्रि' का विलोम शब्द है	–	रात,	दिवस,	उजाला

कुछ करने के लिए

1. छठ पर्व पर गाए जाने वाले कुछ गीतों को इकट्ठा करके लिखिए और अपने साथियों के साथ गाइए ।
2. माँ जब बच्चे को सुलाती है या जब धान की फसल कटती है तो अक्सर कौन-से गीत गाए जाते हैं? पता करके लिखिए और गाइए ।

***

16. मरता क्या न करता

केरल के एक गाँव में विष्णु पोट्टि रहते थे। विष्णु पोट्टि थे तो बहुत गरीब लेकिन उन्हें दानी कहलाने का शौक था। वे रोज़ दो-एक लोगों को अपने घर खाना खिलाने ले आते। चाहे घर में खाने को पर्याप्त हो या नहीं; दूसरों को खाना खिलाना वे अपना धर्म समझते थे। उनकी पत्नी लक्ष्मी को उनकी यह आदत पसंद नहीं थी। पर वह किसी न किसी तरह घर चलाया करती थी। पड़ोसियों से कभी चावल उधार लाती तो कभी सब्ज़ी। एक दिन उसने सोचा कि इस तरह कब तक काम चलेगा? पड़ोसी भी उससे नाराज़ होते। उन्हें विश्वास ही नहीं होता था कि वह सचमुच इतनी गरीब है, क्योंकि वे रोज़ मेहमानों को आते और खाते देखते थे। बेचारी की मदद करनेवाला कोई नहीं था। कितनी ही बार तो वह कई-कई दिनों तक भूखी रह जाती। जब उससे और नहीं सहा गया तो उसने पति से बात करने का फैसला किया। उसने

विष्णु से कहा, "आप हर रोज़ किसी न किसी को ले आते हैं। अपने भोजन में से दूसरों को खिलाना अच्छी बात है। पर आपने कभी यह भी पूछा कि खाना पूरा भी पड़ेगा या नहीं? हम ठहरे गरीब! जो रुखा-सूखा जुटता भी है, वह हम दोनों के पेट भरने को काफ़ी नहीं होता। फिर दूसरों के लिए रोज़-रोज़ कहाँ से आएगा? मैं अपना हिस्सा उनको खिला देती हूँ, और खुद भूखी रह जाती हूँ। मुझसे अब और नहीं सहा जाता। अब लोगों को घर बुलाना बंद कर दें।"

लेकिन विष्णु पर कोई असर नहीं हुआ। अगले दिन रोज़ की तरह वे दोपहर को दो अजनबियों के साथ भोजन के लिए घर पहुँचे। लक्ष्मी ने उन्हें दूर से आते देखा तो घबरा गई। उसने सोचा कि आज फिर वह भूखी रह जाएगी। लेकिन अचानक उसे एक उपाय सूझा।

विष्णु ने मेहमानों से हाथ जोड़कर कहा, "आप बैठिए, मैं अभी मुँह-हाथ धोकर आता हूँ।"

उनके जाने के बाद लक्ष्मी धान कूटने का मूसल उठा लाई और उसे दीवार के सहारे टिका दिया। उसके बाद उसने दीप जलाकर मूसल के आगे रख दिया। मूसल के चारों ओर दो-चार फूल भी डाल दिए और उसके सामने हाथ जोड़कर बैठ गई। वह ऐसी जगह बैठी जहाँ से अतिथि उसे देख सकें। अतिथियों ने उसे देखा तो हैरान रह गए। मूसल की पूजा करते उन्होंने आज तक किसी को नहीं देखा था।

दोनों आकर लक्ष्मी के पास खड़े हो गए। वह ध्यानमग्न बैठी थी। उसने अपनी आँखें खोलीं और सिर घुमाया तो उन दोनों को खड़ा पाया। एक ने पूछा, "आप मूसल की पूजा क्यों कर रही हैं?"

लक्ष्मी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "मैं आपको कैसे बताऊँ? लेकिन आपको तो बताना ही पड़ेगा, क्योंकि इसका संबंध भी आप ही से है।"

अब तो वे दोनों भेद जानने के लिए लक्ष्मी के पीछे पड़ गए। लक्ष्मी ने कहा, "पहले आप वादा कीजिए कि मेरे पति को कुछ नहीं बताएँगे।" उन दोनों ने वायदा किया।

लक्ष्मी ने कहा, "मेरे पति दानी आदमी हैं। वे मेहमानों को घर बुलाकर खाना खिलाते हैं और खिलाने के बाद उन्हें इसी मूसल से खूब पीटते हैं। कहते हैं, यही उनका धर्म है। मैं खाना तो बनाती हूँ। लेकिन मारने-पीटने से मेरा कोई संबंध नहीं। मैं मूसल की पूजा इसलिए कर रही हूँ कि मुझे पाप न लगे।"

अब तो अतिथि बहुत चकराए। उन्होंने एक-दूसरे की ओर देखा और इशारों ही इशारों में कहा कि यहाँ से चुपचाप खिसक जाने में ही भलाई है। दोनों पीछे के दरवाज़े से निकल भागे। तभी विष्णु पोट्टि अंदर आया। उसने लक्ष्मी से पूछा कि मेहमान कहाँ चले गए? लक्ष्मी ने दुख से कहा, "वे मुझसे यह मूसल माँग रहे थे। मैंने कहा, "मेरे घर में एक ही मूसल है, मैं नहीं दूँगी। बस, वे नाराज़ होकर चले गए।"

पोट्टि गुस्से से चिल्लाया, "तुमने मेरे मेहमानों का अपमान कर दिया। लाओ मूसल, मैं उन्हें दे आता हूँ।"

पत्नी के हाथ से मूसल छीनकर वह अतिथियों के पीछे दौड़ा। दोनों काफ़ी आगे निकल गए थे। उन्होंने विष्णु पोट्टि को गुस्से में मूसल उठाए पीछे आते देखा तो बोले, "देखो, वह आ रहा है हमें मारने।" दोनों अपनी जान बचाकर भागे। विष्णु पोट्टि उन्हें पकड़ नहीं सका तो लौट गया।

गाँववालों ने उसे मेहमानों के पीछे मूसल उठाए भागते देखा तो चारों ओर यह बात फैला दी कि विष्णु पोट्टि अपने मेहमानों को घर ले जाकर उन्हें मूसल से मारता है। उसके बाद कोई भी खाने के लिए उसके घर जाने को तैयार न होता।

विष्णु पोट्टि को पता नहीं चला कि यह लक्ष्मी की चाल थी।

लक्ष्मी को भी फिर कभी भूखा नहीं रहना पड़ा।

—के॰ शिव कुमार

लाकर खाना
हते हैं, यही
संबंध नहीं।

र इशारों ही
के दरवाज़े
मेहमान कहाँ
कहा, "मेरे
"

या, "तुमने
दिया। लाओ

ल छीनकर
दोनों काफ़ी
विष्णु पोट्टि
आते देखा
रहा है हमें
वाकर भागे।
हीं सका तो

रों और यह
ल से मारता
ता।

शिव कुमार

अभ्यास

लोक कथाओं की दुनिया

'मरता क्या न करता' शीर्षक कहानी केरल की लोक कथा है। लोक कथाएँ सामान्य जीवन में कही गई या प्रचलित कहानियाँ होती हैं।

आप बिहार की लोककथाएँ 'टिपटिपवा' और 'उपकार का बदला' पढ़ चुके हैं।

1. तीनों लोककथाओं में से आपको कौन-सी लोककथा सबसे ज़्यादा पसंद आई और क्यों?
2. तीनों लोक कथाओं में से एक-एक घटना के बारे में लिखिए जो आपको बहुत मज़ेदार लगी हो।

मज़ेदार घटना

टिपटिपवा	उपकार का बदला	मरता क्या न करता

कथा में से

1. लक्ष्मी को विष्णु पोट्टि की कौन-सी आदत पसंद नहीं थी?
2. लक्ष्मी के पड़ोसी उससे क्यों नाराज़ रहते थे?
3. लक्ष्मी ने विष्णु पोट्टि को क्या समझाया?
4. दोपहर को दो अजनबियों को देख लक्ष्मी ने क्या किया?
5. लक्ष्मी ने अतिथियों से ऐसा क्या कहा कि वे भाग खड़े हुए?

सोच समझकर

1. सवालों को पढ़िए और सोच समझकर सही जवाब पर ✓ लगाइए –

(क) लक्ष्मी दो अजनबियों को देख घबरा गई, क्योंकि–

- वह उन्हें नहीं जानती थी। ☐
- वे खतरनाक थे। ☐
- उसने सोचा कि आज फिर उन्हें खाना खिलाना पड़ेगा। ☐
- उसके घर अनाज का एक दाना न था। ☐

(ख) विष्णु पोटि्ट ने ऐसा क्यों कहा कि उसके मेहमानों का अपमान हुआ है।

- लक्ष्मी ने उन्हें मूसल नहीं दिया। ☐
- मेहमान बिना खाए चले गए । ☐
- लक्ष्मी मेहमानों पर नाराज हो गई थीं। ☐
- मेहमान की खातिरदारी अच्छी तरह नहीं हुई थी। ☐

(ग) लक्ष्मी को फिर कभी भूखा नहीं रहना पड़ा, क्योंकि -

- गाँव वाले जान गए थे कि लक्ष्मी गरीब है। ☐
- यह खबर फैल गई थी कि विष्णु पोटि्ट मेहमानों को मूसल से मारता है। ☐
- लक्ष्मी के घर अब अनाज की कमी नहीं थी। ☐
- लक्ष्मी ने अतिथियों को भगाना शुरू कर दिया था। ☐

(घ) घर चलाने का मतलब है -

- घर बनाना ☐
- घर की सफ़ाई करना ☐
- रोटी, कपड़ा और मकान का उचित प्रबंध करना ☐
- घर को सजाना ☐

2. अगर आप लक्ष्मी की जगह होते तो क्या उपाय करते?
3. आप अपने अतिथियों के स्वागत में अपने माता-पिता की मदद कैसे करते हैं?
4. दानी बनने के लिए विष्णु पोटि्ट क्या करता था? क्या उसका यह तरीका ठीक था? कारण बताइए।

दाल-भात में मूसल

'अरे जाओ, अपना काम करो। क्यों दाल-भात में मूसल वन रहे हो?' इस वाक्य में दाल-भात में मूसल बनना एक मुहावरा है जिसका अर्थ है-बिना मतलब दूसरों के कामों या बातों में दखल देना।

मूसल की तरह रसोईघर से जुड़ी ऐसी कई चीज़ें हैं जिनसे मुहावरे / लोकोक्तियाँ बनी हैं।

जैसे –

- थाली का बैंगन
- बिन पेंदे का लोटा
- जले पर नमक छिड़कना
- पाँचों अँगुलियाँ घी में होना
- आटे–दाल का भाव मालूम होना
- जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना

इन मुहावरों एवं लोकोक्तियों का प्रयोग वाक्यों में करते हुए अर्थ समझाइए।

2. मूसल का प्रयोग धान कूटने के लिए किया जाता है। बताइए, इन कामों के लिए किस चीज़ का प्रयोग किया जाता है –

- चारा काटने के लिए ....
- खेत में बीज बोने के बाद ज़मीन समतल करने के लिए ....
- घास काटने के लिए ....
- सुपारी काटने के लिए ....
- पानी उलीचने के लिए ....

आदतों की दुनिया

1. विष्णु पोट्टि की यह आदत थी कि वह रोज़ दो–एक लोगों को अपने घर खाना खिलाने ले आते थे।

किन्हीं तीन व्यक्तियों के नाम, आदत लिखकर बताएँ कि वह आदत आपको पसंद है या नहीं –

व्यक्ति का नाम	आदत	पसंद है/नहीं है

2. आपकी भी कुछ आदतें होंगी। अपनी आदतों पर ✓ लगाइए –

- हाथ धोकर खाना खाना ☐
- नहाते समय गाना गाना ☐
- बस में दौड़ते हुए चढ़ना ☐
- देर रात तक जागना ☐
- सुबह उठने में आना-कानी करना ☐
- नाक में अँगुली डालना ☐
- अँगूठा चूसना ☐
- खेलने से पहले पढ़ाई करना ☐
- रास्ते में पड़ी हुई चीज़ पर ठोकर मारना ☐
- धूल उड़ाना ☐
- फलों को धोकर खाना ☐
- पेड़ों की पत्तियाँ और फूल तोड़ना ☐

3. आप ऊपर की किन आदतों को अच्छा और किन आदतों को खराब मानते हैं? क्यों?

भाषा के रंग

1. नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए और सही शब्द से वाक्य पूरे कीजिए –

विष्णु पोट्टि, छुट्टी, लिट्टी, इकट्ठा, चिट्ठी, लट्ठ, गड्ढा, गट्ठर

- भोला ने अपना ------------ उठाया।
- स्कूल की ------------ हो गई।
- आगे एक गहरा ------------ है।
- ------------------ को दानी कहलाने का शौक था।
- लक्ष्मी ने ------------------ -चोखा बनाना सीखा।
- डाकिया ------------------ लाया था।
- उसने घास का ------------------ उठाया।
- सभी लोग गाँधी मैदान में ------------------ हो गए।

2. **वाक्य में मोटे शब्दों की जगह ऐसे शब्द का प्रयोग करके वाक्य को दुबारा लिखिए जिससे अर्थ न बदले –**

(i) दोपहर को दो **अजनबी** आए।

(ii) बस वे **नाराज़** होकर चले गए।

(iii) वह ऐसी जगह बैठ गई जहाँ से **अतिथि** उसे देख सकें।

(iv) अब तो अतिथि बहुत **चकराए**।

(v) इसका **संबंध** भी आप ही से है।

----

3. **नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए–**

दोपहर, तिराहा, चारपाई, चौगुना, चौराहा

क्या आपको इन शब्दों में कोई खास बात नज़र आती है? इन सभी शब्दों का पहला अक्षर संख्या की ओर संकेत करता है। यानी शब्द संख्यावाची है। आप भी ऐसे कोई दो नए शब्द लिखिए और इन शब्दों में छिपी संख्या बताइए –

- दोपहर, दोबारा, दोपहिया
- तिराहा, -------------, ------------
- चौराहा, -------------, ------------
- चारपाई, -------------, ------------
- चौगुना, -------------, ------------
- छमाही, -------------, ------------

आपके सवाल

नीचे दिए गए अनुच्छेद को पढ़िए और कोई पाँच सवाल बनाइए–

विष्णु पोद्दार गुस्से से चिल्लाया, "तुमने मेरे मेहमानों का अपमान कर दिया। लाओ मूसल, मैं उन्हें दे आता हूँ" पत्नी के हाथ से मूसल छीनकर वह

अतिथियों के पीछे दौड़े। दोनों काफ़ी आगे निकल गए थे। उन्होंने विष्णु पोट्टि को गुस्से में मूसल उठाए पीछे आते देखा तो बोले, "देखो, वह आ रहा है हमें मारने!" दोनों अपनी जान बचाकर भागे।

सवाल

1. --
2. --
3. --
4. --
5. --

कुछ करने के लिए

1. 'गरता क्या न करता' शीर्षक कहानी की जो घटना आपको सबसे मज़ेदार लगी हो, उसका एक चित्र बनाइए।

2. इस कहानी का मंचन कीजिए।
3. लक्ष्मी की चतुराई के बारे में बताते हुए अपनी मौसी जी को पत्र लिखिए।

4. आप जानते हैं कि 'मरता क्या न करता' केरल की लोककथा है। केरल राज्य भारत के दक्षिण में है। नीचे दिए गए मानचित्र में 'केरल' राज्य को मनपसंद रंग से भरिए और अपने शिक्षक या किसी अन्य व्यक्ति की सहायता से केरल के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए तालिका में लिखिए–

केरल के बारे में	
राजधानी	----------------------------
भाषा	----------------------------
खास व्यंजन	----------------------------
खास फसल	----------------------------
खास पेड़-पौधे	----------------------------
खास दर्शनीय स्थल	----------------------------

17. बिना जड़ का पेड़

राजा के दरबार में एक व्यापारी संदूक के साथ पहुँचा। उसने गर्व से कहा, "महाराज, मैं व्यापारी हूँ और बिना बीज एवं पानी के पेड़ लगाता हूँ। आपके लिए मैं एक अद्भुत उपहार लाया हूँ। आपके दरबार में एक-से-एक ज्ञानी-ध्यानी हैं। इसलिए पहले मुझे कोई यह बताए कि इस संदूक में क्या है। अगर बता देगा तो आपके यहाँ चाकरी करने को तैयार हूँ।"

सभासद पंडितों, पुरोहितों और ज्योतिषियों की ओर देखने लगे, लेकिन उन लोगों ने सिर झुका लिए।

सभा में गोनू झा भी उपस्थित थे। उन्हें उसकी चुनौती स्वीकार करना आवश्यक लगा अन्यथा दरबार की जग-हँसाई होती। गोनू झा ने विश्वासपूर्वक कहा, "मैं बता सकता हूँ कि संदूक में क्या है, लेकिन इसके लिए मुझे रात भर का समय चाहिए और व्यापारी को संदूक के साथ मेरे यहाँ ठहरना होगा। संदूक बदला न जाए, इसकी निगरानी के लिए हम रातभर जगे रहेंगे और व्यापारी चाहे तो पहरेदार भी रखवा सकते हैं।" सभी मान गए और व्यापारी गोनू झा के यहाँ चला गया।

रातभर दोनों संदूक की रखवाली करते रहे। रात काटनी थी, इसलिए किस्सा-कहानी भी चलती रही। बातचीत के क्रम में गोनू झा ने कहा, "भाई, कुछ दिन पूर्व मुझे एक

व्यापारी मिला था, उसने भी यही कहा था कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगाता हूँ। पेड़ों में भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, वह भी रात में। क्या आप भी रात में पेड़ उगाकर भाँति-भाँति के फूल खिला सकते हैं?"

उसने अहंकार से कहा, "क्यों नहीं! मेरे पेड़ रात में ही अच्छे लगते हैं और उनके रंग-बिरंगे फूल देखते ही बनते हैं।" यह सुनते ही गोनू झा की आँखों में चमक आ गई और वे निश्चिंत हो गए।

दूसरे दिन दोनों दरबार में उपस्थित हुए। गोनू झा ने जेब से कुछ आतिशबाजी निकालकर छोड़ी।

सभासद झुंझला गए। महाराज की भी आँखें लाल-पीली हो गईं और कहा, "गोनू झा, यह क्या बेवक्त की शहनाई बजा दी। सभा का सामान्य शिष्टाचार भी भूल गए?"

गोनू झा ने वातावरण को सहज करते हुए कहा, "महाराज, सर्वप्रथम धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ, लेकिन यह मेरी मजबूरी थी । इसी में व्यापारी भाई के रहस्यमय प्रश्न का उत्तर है। इसमें ही बिना जड़ के भाँति-भाँति के रंगों में फूल खिलते हैं।"

व्यापारी अवाक् रह गया । उसने सहमते हुए कहा, "महाराज, इन्होंने मेरे गूढ़ प्रश्न का उत्तर दे दिया।"

फिर उसने विस्मयपूर्वक गोनू झा से पूछा, "आपने कैसे जाना कि इसमें आतिशबाजी ही है?"

गोनू झा ने सहजता से कहा, "व्यापारी, जब आपने यह कहा कि बिना बीज-पानी के पेड़ उगते हैं और उनमें भाँति-भाँति के फूल खिलते हैं, तब तक तो मुझे संदेह रहा, परंतु मेरे पूछने पर यह कहा कि रात ही में आपकी यह फसल अच्छी लगती है, तब जरा भी संशय नहीं रहा कि इसमें आतिशबाजी छोड़ अन्य सामान होगा।"

व्यापारी मायूस हो गया। राजा ने कहा, "व्यापारी, आपको दुखी होने की ज़रूरत नहीं है। आप यहाँ रहने के लिए स्वतंत्र हैं, पर अपना कमाल रात में दिखाकर लोगों का मनोरंजन कीजिएगा। अगर प्रदर्शन प्रशंसनीय रहा तो पुरस्कार भी पाइएगा, पर अभी पुरस्कार के हकदार गोनू झा ही हैं।"

–वीरेन्द्र झा

आएँ सीखें गुलाब के फूल बनाना

गुलाब के फूल तो आप सबने देखे ही हैं। कई रंगों और कई आकार के सुन्दर गुलाब किसे अच्छे नहीं लगते? इस बार हम यहाँ गुलाब के फूल बनाने के बारे में बता रहे हैं। इसके लिए रंगीन कागज़, परकार, पेंसिल, गोंद, कैंची, थोड़ा पतला और थोड़ा मोटा तार, आलपिन इत्यादि का जुगाड़ कर लीजिए।

होंने मेरे गूढ़

ा कि इसमें

ा कि बिना
तब तक तो
सल अच्छी
अन्य सामान

की ज़रूरत
खाकर लोगों
ा, पर अभी

द्र झा

1. सबसे पहले कागज़ पर एक गोला बनाकर उसे काट लीजिए। अलग-अलग आकार के ऐसे तीन-चार गोले काट लें।

जैसे-एक ढाई इंच व्यास का, दूसरा दो इंच व्यास का, तीसरा डेढ़ इंच व्यास का और चौथा एक इंच व्यास का।

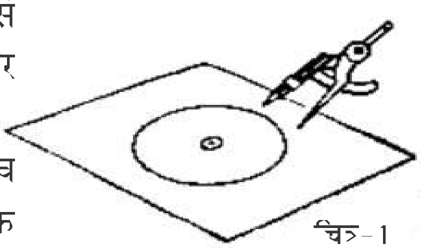
चित्र-1

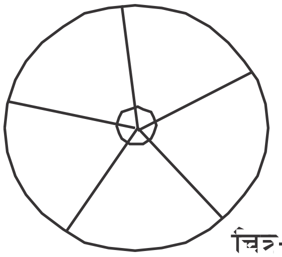
चित्र-2

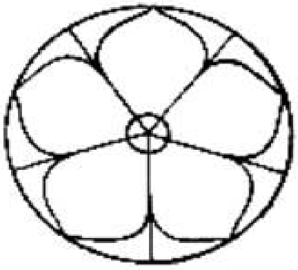
चित्र-3

2. काटे हुए गोलों को पेंसिल से पाँच बराबर भागों में बाँट लें।

3. अब चित्र तीन की तरह गोले पर पँखुड़ियों की डिज़ाइन बना लें। इसी तरह सभी गोलों पर डिज़ाइन बना लें।

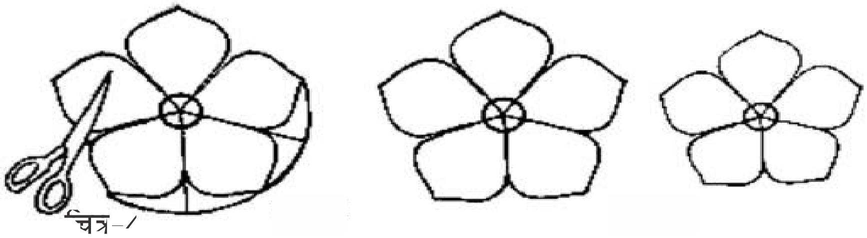
चित्र-4

4. इन गोलों में से पँखुड़ियों के ऊपर का हिस्सा काटकर अलग कर दें। इस बात का ध्यान रखें कि बीच के छोटे गोले से थोड़ी दूर तक पँखुड़ियाँ जुड़ी रहनी चाहिए।

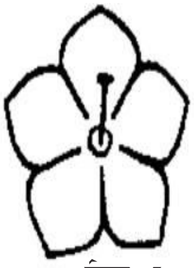
चित्र-5

5. इसी तरह से सभी पँखुड़ियों को काट लें। फिर सभी अलग-अलग आकार की पँखुड़ियों को एक के ऊपर एक रख लें। सबसे छोटी पँखुड़ी सबसे ऊपर और सबसे बड़ी सबसे नीचे रखें। बीच वाले छोटे गोले में एक तार का टुकड़ा या आलपिन पिरो लें।

6. इस तरह फूल तो बन जाएगा अब बनाना है पत्तियाँ। चित्र-6 में दिखाई गई पत्तियों की डिज़ाइन की तरह पत्तियाँ कागज़ से काट लें।

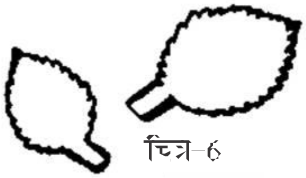
चित्र-6

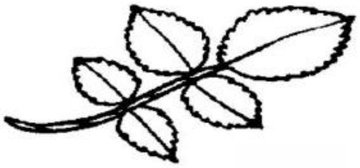
चित्र-7

7. पाँच-पाँच पत्तियों को एक तार में चिपका लें।

8. फूल तो पहले बना ही लिया था। फूल के बीचोंबीच जो तार पिरोया था उसे एक थोड़े मोटे तार के साथ लपेटकर अच्छे से कस दें। फिर इसी तार से पत्तियों को भी लपेट दें। अंत में इस तार पर हरे रंग का कागज़ गोंद लगाकर चिपका दें।

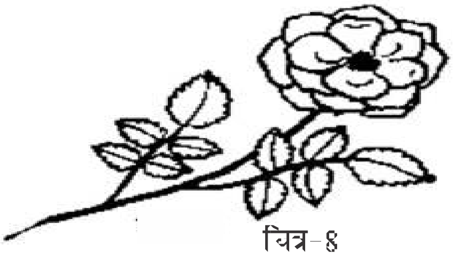
चित्र-8

आपकी कल्पना

गोनू झा ने आतिशबाज़ी को पेड़ कहा है। आप इनको क्या कह सकते हैं:

उदाहरण–
तारों का <u>फूल</u>

- काले बादलों को ....
- सूरज को ....
- तेज चलने वाले आदमी को ....
- धीमे चलने वाले आदमी को ....

किस्से कहानियाँ

1. गोनू झा की चतुराई भरी कहानी आपने पढ़ी। आप बीरबल, तेनालीराम के चतुराई भरे किस्से पढ़िए और अपने वर्ग में सुनाइए।

2. 'बिना जड़ का पेड़' कहानी को अपने शब्दों में सुनाइए।

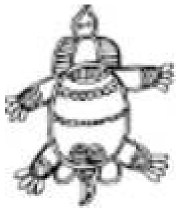

18. आजादी में जीवन

मैना- सुग्गा पिंजरे में
हों बंद, दुखी हो जाते,
सुख-सुविधा, मनचाहा भोजन
फिर भी चहक न पाते।

चिड़ियाघर में कैद शेर
हरदम दहाड़ गुर्राता,
वहाँ गुलामी का वह जीवन
उसको रास न आता।

मछली जल में मचला करती
जल प्राणों से प्यारा,
जल से बाहर रहकर जीना
उसको नहीं गवारा।

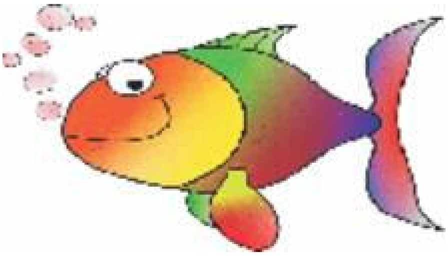

मुसकाती कलियों को है
फूलों की डाली प्यारी,
अगर तोड़ लेता कोई
तो मुरझाती बेचारी।

सबको अपना घर प्यारा है
आजादी है प्यारी,
आजादी में जीवन है
जीवन की खुशियाँ सारी।

—भगवती प्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ		
हरदम	–	हमेशा
मनचाहा	–	मन जैसा चाहे
रास न आना	–	अच्छा नहीं लगना।
गवारा	–	स्वीकार

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. चिड़ियाघर में कौन-कौन से पशु-पक्षियों को रखा जाता है ?
2. चिड़ियाघर में पशु-पक्षियों के रहने एवं खाने-पीने की व्यवस्था कैसे की जाती है?
3. पालतू पशुओं को जंगल में एवं जंगली पशुओं को घर में रखा जाए तो क्या होगा?
4. जलीय जंतुओं को यदि स्थल पर रखा जाय तो उन्हें क्या-क्या कठिनाइयाँ आ सकती हैं?
5. हम किन-किन पक्षियों को पालते हैं और क्यों ?

आपकी समझ से

1. प्रत्येक पशु-पक्षी आज़ाद रहना चाहता है लेकिन इंसान कई पशु-पक्षियों को कैद करके रखते हैं? आपके अनुसार क्या यह उचित है?
2. आपको अपना घर क्यों प्यारा लगता है?
3. मनचाहा भोजन, कपड़े, खिलौने आदि न मिलने पर आप क्या करते हैं?
4. पशु-पक्षी स्वतंत्रतापूर्वक रह सकें इसके लिए हमें क्या करना चाहिए?

आज़ादी की बातें

1. आपके लिए आज़ादी के क्या-क्या मतलब हैं ? (✓) लगाइए -

- अपनी बात जो मनकर कहना। ☐
- किसी को कुछ भी कहना ☐
- छुट्टी का दिन । ☐
- लड्डू खाने का दिन । ☐
- मनपसंद कहानी पढ़ना । ☐

2. बताइए, आज़ादी का क्या मतलब होगा ?

- चिड़िया के लिए..
- शेर के लिए..
- मछली के लिए..
- आपकी बहन के लिए..
- आपके भाई के लिए..

3. आपने अपने आस-पास ऐसा ज़रूर देखा होगा -

- रंग-बिरंगी चिड़ियां को पिंजरे में कैद करके उन्हें बेचना।
- घरों में तोते एवं मछलियों को पालना ।

(क) क्या आपको यह सही लगता है ? क्यों ?

(ख) पशु-पक्षी कैद में रहते हुए कैसा महसूस करते होंगे ?

(ग) अगर आपको कोई कैद करके रखे तो आपको कैसा लगेगा ?

कविता में से

1. कलियाँ कब मुस्काती और कब मुरझा जाती हैं ?
2. तोता-मैना पिंजरे में मनचाहा भोजन मिलने के बाद भी खुश क्यों नहीं रह पाते ?
3. शेर चिड़ियाघर में क्यों नहीं रहना चाहता?
4. **कविता के दिए गए अंश के आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के सही विकल्प के आगे सही चिह्न (✓) लगाइए -**

मैना-सुग्गा पिंजरे में
हो बंद, दुखी हो जाते,
सुख-सुविधा, मनचाहा भोजन
फिर भी चहक न पाते ।
चिड़ियाघर में कैद शेर
हरदम दहाड़ गुर्राता,
वहाँ गुलामी का वह जीवन।
उसको रास न आता ।

(क) चिड़ियाघर को गुलामी का जीवन कहा गया है, क्योंकि
- वहाँ काम करना पड़ता है । ☐
- वहाँ खाने को नहीं मिलता । ☐
- वहाँ अपनी मर्ज़ी से घूम-फिर नहीं सकते । ☐

(ख) चिड़ियाघर में कैद शेर क्या करता है ?
- पिंजरे को तोड़ता है । ☐
- दहाड़ते-गुर्राते हुए कैद से आज़ाद होना चाहता है । ☐
- सारा दिन परेशान करता है । ☐

(ग) मैना-तोता पिंजरे में दुखी हो जाते हैं, क्योंकि -
- वे आकाश में उड़ना चाहते हैं । ☐
- उन्हें पिंजरे में अच्छा भोजन नहीं मिलता । ☐
- वे पिंजरे में चहक नहीं सकते । ☐

(घ) प्राणियों को सबसे ज्यादा क्या अच्छा लगता है ?

- मनचाहा भोजन ☐
- आज़ादी ☐
- सुख-सुविधाएँ ☐

(ङ) कवि कहना चाहता है कि –

- चिड़ियाघर खराब जगह है । ☐
- पशु-पक्षियों को सुख से रखना चाहिए । ☐
- आज़ादी में खुशी होती है । ☐

5. दी गई पंक्तियों को पढ़ें एवं बताएँ कि वे पंक्तियाँ किनके लिए कही गई हैं –

(क) सुख-सुविधा मनचाहा भोजन फिर भी चहक न पाते।

(ख) वहाँ गुलामी का वह जीवन उसको रास न आता।

(ग) जल से बाहर रहकर जीना, उसको नहीं गवारा।

(घ) फूलों की डाली प्यारी।

6. नीचे कुछ चित्र दिए गए हैं इनके लिए कविता में से उपयुक्त पंक्तियाँ छाँटकर लिखिए –

शीर्षक की बात

1. कविता के दो अन्य शीर्षक बताइए ।

(क) ----------------   (ख) ----------------

2. यह भी बताइए कि आप ये शीर्षक क्यों चुने ?

भाषा के नियम

1. इनका मतलब समझाइए-

(क) रास न आना

(ख) गवारा न होना

(ग) चहक न पाना

2. नीचे दिए गए वाक्यों के वचन बदलकर उन्हें दुबारा लिखिए -

(क) तोता पिंजरे में कैद था ।

....

(ख) मछली जल में मचलती है ।

....

(ग) शेर हरदम गुर्राता-दहाड़ता है ।

....

(घ) फूल को मत तोड़ो ।

....

3. जीवन शब्द से कई नए शब्द बन सकते हैं, जैसे –

जीवनी, जैव, जैविक, जीवनदान इत्यादि ।

आप नीचे दिए गए शब्दों से नए शब्द बनाइए –

(क) दिन – --

(ख) धन – --

रंगों की दुनिया

कविता में जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा हो उसका एक चित्र बनाइए और उसमें रंग भरिए। आप चाहें तो अपनी एक छोटी-सी कविता भी लिख सकते हैं-

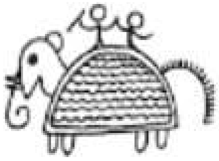

19. अँधेर नगरी

पात्र

महंत, शिष्य गोवर्धनदास, शिष्य नारायणदास, राजा, कुंजड़िन, हलवाई, फ़रियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला, भिश्ती, कसाई, गड़ेरिया, कोतवाल, कुछ सिपाही

स्थान–शहर से बाहर सड़क

। महंतजी और दो चेले बातें कर रहे हैं।

महंत : बच्चा नारायणदास! यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है। देख कुछ भिक्षा मिले तो बहुत अच्छा है।

नारायणदास : गुरुजी महाराज! नगर तो सचमुच बहुत ही सुंदर है। बहुत अच्छा है।

महंत : बच्चा गोवर्धनदास! तू पश्चिम की ओर जा और नारायणदास पूर्व की ओर जाएगा।

[गोवर्धनदास जाता है]

गोवर्धनदास : (कुंजड़िन से) क्यों, भाजी क्या भाव?

कुंजड़िन : बाबाजी! टके सेर।

गोवर्धनदास : सब भाजी टके सेर। वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। यहाँ सभी चीज़ें टके सेर। (हलवाई के पास जाकर) क्यों भाई हलवाई! मिठाई क्या भाव?

हलवाई : सब टके सेर।

गोवर्धनदास: वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। सब टके सेर। क्यों बच्चा! इस नगरी का नाम क्या है?

हलवाई : अँधेर नगरी।

गोवर्धनदास : और राजा का नाम क्या है?

हलवाई : चौपट राजा।

गोवर्धनदास : वाह ! वाह !

अँधेर नगरी चौपट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

हलवाई : तो बाबाजी! कुछ लेना हो तो बोलो?

गोवर्धनदास : बच्चा, भिक्षा मांगकर सात पैसे लाया हूँ, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

[महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है]

महंत : बच्चा गोवर्धनदास! कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोवर्धनदास : गुरुजी महाराज! सात पैसे भिक्षा में मिले थे। उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा! नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सभी चीज़ें टके सेर मिलती हैं, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा यह कौन-सी नगरी है और इसका कौन-सा राजा है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है?

गोवर्धनदास : अँधेर नगरी चौपट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

महंत : तो बच्चा! ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहाँ टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो नगर में अब पल भर भी नहीं रहूँगा। देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूँ, पर इतना

कहे जाता हूँ कि कभी संकट पड़े तो याद करना।

[राजा और मंत्री यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' की आवाज़ आती है।]

राजा : कौन चिल्लाता है? उसे बुलाओ तो।

[दो सिपाही एक फ़रियादी को लाते हैं]

फ़रियादी : दुहाई महाराज, दुहाई !

राजा : बोलो, क्या हुआ?

फ़रियादी : महाराज! कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा : अच्छा, कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

[सिपाही दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं]

राजा : क्यों रे बनिए! इसकी बकरी क्यों दबकर मर गई ?

कल्लू : महाराज! मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई कि गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ।

[कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं]

राजा : क्यों रे कारीगर! इसकी बकरी कैसे मर गई?

कारीगर : महाराज! चूने वाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी।

राजा : अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ।

[कारीगर निकाला जाता है। चूने वाला पकड़कर लाया जाता है]

राजा : क्यों रे चूने वाले! इसकी बकरी कैसे मर गई?

चूनेवाला : महाराज! भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमज़ोर हो गया।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो।

[भिश्ती लाया जाता है]

राजा : क्यों रे भिश्ती! इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई?

भिश्ती : महाराज! गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया।

राजा : अच्छा! कसाई को लाओ, भिश्ती को निकालो।

[लोग भिश्ती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं]

राजा : क्यों रे कसाई! तूने ऐसी मसक क्यों बनाई?

कसाई : महाराज! गड़ेरिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मसक बड़ी बन गई।

राजा : अच्छा! कसाई को निकालो, गड़ेरिए को लाओ।

[कसाई निकाला जाता है। गड़ेरिया लाया जाता है]

राजा : क्यों रे गड़ेरिए! ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची?

गड़ेरिया : महाराज! उधर से कोतवाल की सवारी आई, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का ख्याल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं।

राजा : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ।

[कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है]

राजा : क्यों रे कोतवाल! तूने सवारी इतनी धूम से क्यों निकाली कि गड़ेरिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी?

कोतवाल : महाराज! मैंने कोई कसूर नहीं किया।

राजा : कुछ नहीं महाराज! ले जाओ, कोतवाल को अभी फाँसी दे दो।

[सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं]

स्थान-जंगी

[गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है]

गोवर्धनदास : गुरुजी ने हमको नाहक यहाँ रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या?

[चार सिपाही चारों ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं]

पहला सिपाही : चल बे चल! मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मज़ा मिलेगा।

गोवर्धनदास : (घबड़ाकर) हैं! यह आफ़त कहाँ से आई? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ते हो?

दूसरा सिपाही : आप बड़े मोटे हैं, इसलिए फाँसी लगेगी।

गोवर्धनदास : मोटा होने से फाँसी ! यह कहाँ का न्याय है? अरे, फकीरों से मज़ाक नहीं किया जाता।

पहला सिपाही : जब सूली पर चढ़ जाओगे तब मालूम पड़ेगा कि फाँसी या मज़ाक। सीधी तरह चलते हो या घसीटकर ले चलें?

गोवर्धनदास : तब भी बात क्या है, कि एक फकीर आदमी को नाहक फाँसी देते हो?

पहला सिपाही : बात यह है कल कोतवाल को फाँसी का हुक्म हुआ था। जब फाँसी देने को उसे ले गए तो फाँसी का फंदा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हमलोगों ने महाराज से विनती की। इस पर हुक्म हुआ किसी मोटे आदमी को फाँसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सजा होना जरूरी है, नहीं तो न्याय नहीं होगा।

गोवर्धनदास : दुहाई परमेश्वर की! मैं नाहक मारा जाता हूँ। यह बड़ा ही अँधेर है। गुरुजी महाराज का कहा मैंने न माना, उसका फल मुझे

भोगना पड़ा। गुरुजी, तुम कहाँ हो? आओ, मेरे प्राण बचाओ! मैं बे-अपराध मारा जाता हूँ। गुरुजी!

[गोवर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं]

गोवर्धनदास : हाय बाप रे! मुझे बेकसूर ही फाँसी देते हैं। अरे भाइयो, कुछ तो धर्म का ख्याल करो। अरे मुझे छोड़ दो। हाय! हाय!

पहला सिपाही : अबे, चुप रह! राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है? यह तेरा आखिरी दम है, राम का नाम ले, बेकार क्यों शोर करता है?

गोवर्धनदास : हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी कहाँ हो? बचाओ, गुरुजी! गुरुजी!!

महंत : अरे बच्चा गोवर्धनदास! तेरी यह क्या दशा है?

गोवर्धनदास : (गुरुजी को हाथ जोड़कर) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फाँसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ?

महंत : कोई चिंता नहीं गोवर्धनदास! सब समर्थ है। (भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से) सुनो, मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो? तुम लोग जरा किनारे हो जाओ। देखो मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही : नहीं महाराज! हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश दीजिए। (सिपाही हट जाते हैं। गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं उसके बाद गुरु और चेला दोनों फाँसी पर चढ़ने के लिए झगड़ने लगते हैं।)

गोवर्धनदास : तब तो गुरुजी, हम अभी फाँसी चढ़ेंगे।

महंत : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।

गोवर्धनदास : स्वर्ग जाने में बूढ़ा-जवान क्या? आप सिद्ध हैं। आपको गति-अगति से क्या? मैं फाँसी चढ़ूँगा।

[इसी प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही हैरान होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं]

राजा : यह क्या गोल-माल है?

सिपाही : महाराज, चेला कहता है मैं फाँसी चढ़ूँगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूँगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है।

राजा : (गुरुजी से) बाबाजी बोलो। आप फाँसी क्यों चढ़ना चाहते हैं?

महंत : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी है कि जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री : तब तो हम ही फाँसी चढ़ेंगे।

गोवर्धनदास : नहीं, हम। हमको हुक्म है।

कोतवाल : हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फाँसी चढ़ाओ, जल्दी-जल्दी।

/ राजा को लोग फाँसी पर लटका देते हैं /

-भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

शब्दार्थ

टका	–	ताँबे/चाँदी का पुराना सिक्का जो दो पैसे के बराबर होता था।
कसूर	–	दोष, गलती
नाहक	–	बिना कारण
विनती	–	निवेदन, प्रार्थना
हुज्जत	–	बहस, झगड़ा
सबब	–	कारण
मसक	–	चमड़े का बना एक थैला-सा जिसे कमर पर लादकर भिश्ती घरों में पानी पहुँचाता है।
भिश्ती	–	मसक द्वारा पानी ढोने वाला व्यक्ति
फरियादी	–	शिकायत करने वाला

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. आपके पड़ोस में लगने वाले बाज़ार में क्या-क्या बिकता है?
2. आप कभी बाज़ार में खरीदारी करने गए हैं? यदि हाँ, तो क्या-क्या खरीदा और कितने रुपये में ?
3. घर पर आप अपनी कौन-कौन-सी शिकायत माँ से और कौन-कौन-सी शिकायत पिताजी से करते हैं?

पाठ में से

1. **एकांकी में जो घटनाएँ घटी उन पर (✓) लगाइए और जो नहीं घटी उनपर (X) लगाइए ।**

- महंत जी ने अँधेर नगरी छोड़ने के लिए कहा । ☐
- कल्लू किसान की दीवार गिर पड़ी थी । ☐
- कारीगर ने भिश्ती पर आरोप लगाया । ☐
- नगर में सारी चीज़ें टके सेर मिलती थीं । ☐
- सिपाहियों ने फाँसी लगाने के लिए महंत को पकड़ लिया । ☐
- महंत ने गोवर्धनदास को फाँसी से बचाया। ☐
- लोग राजा को फाँसी पर लटका देते हैं । ☐

2. **महंत ने नगरी को छोड़ने की बात की। क्योंकि -**

- नगरी सुंदर नहीं थी।
- नगरी में खाजा टके सेर मिलता था ।
- नगरी में सभी चीज़ें एक ही दाम पर मिलती थीं जो बताता है कि वहाँ कोई नियम नहीं था ।
- उन्हें मालूम था कि यहाँ सिपाही गलत आरोप में फँसा सकते हैं ।

3. कल्लू ने किसकी और क्या गलती बताई ?
4. फ़रियादी ने राजा से क्या फ़रियाद की ?
5. राजा ने कोतवाल को फाँसी की सज़ा क्यों सुनाई ?
6. राजा ने स्वयं फाँसी पर चढ़ने के लिए क्यों कहा ?

समझ की बात

1. अँधेर नगरी में सभी ने नुकसान का कारण दूसरे को ही क्यों बताया ?
2. नगर को अँधेर नगरी क्यों कहा गया है ?

अनुमान और कल्पना

1. राजा के फाँसी चढ़ने के बाद उस नगर में क्या हुआ होगा ?
2. अगर आप अँधेर नगरी के राजा होते तो किस प्रकार न्याय करते ?

टके सेर

1. आपके बाज़ार में ये चीज़ें किस दाम में मिलती है ? पता करके लिखिए -

- एक किलो आटा ------------
- एक किलो आलू ------------
- दो दर्जन केले ------------
- एक दर्जन पेंसिल ------------
- एक लीटर दूध ------------

हाट-बाज़ार

1. आपके घर के आस-पास लगने वाले बाज़ार में क्या-क्या बिकता है ? तालिका में लिखिए -

सामान	बिकने वाली चीज़ें
खाने-पीने का	----------------------------------
पहनने का	----------------------------------
ओढ़ने का	----------------------------------
नहाने-धोने का	----------------------------------
पढ़ने का	----------------------------------
लिखने का	----------------------------------

2. बाज़ार में आपने कई चीज़ों के विज्ञापन वाले पोस्टर देखे होंगे। विज्ञापन वाले पोस्टरों में क्या-क्या होता है?

आप 'लिट्टी-चोखा' के लिए एक विज्ञापन बनाइए।

भाषा के नियम

1. **नीचे दिए गए शब्द के समान अर्थ वाले शब्द लिखिए–**

हुक्म

दुबला

सजा

परमेश्वर

ज़रूरी

2. **'कसूर' के आगे 'बे' जोड़कर 'बेकसूर' शब्द बना है। 'बे' उपसर्ग है जो शब्द के पहले जुड़ता है। 'बे' उपसर्ग नए शब्द बनाइए–**

(क) बे + ईमान --------------- (ग) -----+ ताज़ ---------------

(ख) -----+ सहारा --------------- (घ) -----+ परवाह ---------------

3. **नीचे दिए गए शब्दों को पढ़िए और बोलने के अंतर को समझिए–**

- दीवार - दी + वा + र
- स्वर्ग स् + व + र् + ग
- ट्रक - ट् + र + क
- प्रकांड - प् + र + कां + ड

अब नीचे दिए गए शब्दों को बोलकर पढ़िए–

गोवर्धन बकरी कारीगर ड्रामा वर्षा कर्म

ट्रेन प्रकाश गजा विनम्र राष्ट्र क्रम

4. **नीचे दिए गए वाक्यों को पढ़िए –**

- यह उसका फल है ।
- आज यही फल मिले ।

क्या दोनों वाक्यों में 'फल' का मतलब एक ही है ? पहले वाक्य में 'फल' का मतलब है – नतीजा, परिणाम । दूसरे वाक्य में 'फल' का अर्थ खाने वाले फलों से है जैसे- केला, अमरूद आदि ।

अब आप नीचे दिए वाक्यों को पढ़िए और मोटे शब्दों के मतलब लिखिए –

(क)

- कजरी बोली, "अब मुझे **सोना** है ।" -------------------
- तुषार ने तिजोरी में सारा **सोना** रख दिया। -------------------

(ख)

- नदिया के **तीर** सैर को चलो। -------------------
- **तीर** निशाने पर लगा। -------------------

(ग)

- महंत ने **उत्तर** दिया। -------------------
- **उत्तर** की तरफ देखो। -------------------

5. भेड़–बकरी आदि पशुओं को चराने वाले को गड़ेरिया कहते हैं । मशक से पानी डालने वाले को भिश्ती कहते हैं । बताइए इन्हें क्या कहते हैं–

- दूर की दृष्टि रखने वाला ....
- जो पढ़ाता है ....
- जो गहने बनाता है ....
- अभिनय करने वाला ....
- अभिनय करने वाली ....

पढ़ने का मज़ा

नीचे एकांकी का एक अंश दिया गया है। साथ ही उसी घटना से मिलती–जुलती एक कविता की कुछ पंक्तियां भी दी गई है । दोनों को पढ़कर बताइए कि आपको किसे पढ़ने में ज्यादा मज़ा आया और क्यों ?

एकांकी का अंश

(सिपाही हट जाता है । गुरुजी चेले के कान में कुछ समझाते हैं । उसके बाद गुरु और चेला दोनों फाँसी पर चढ़ने के लिए झगड़ने लगते हैं।)

गोवर्धनदासः तब तो गुरुजी! हम अभी फाँसी पर चढ़ेंगे।

महंतः नहीं बच्चा! हम बूढ़े हुए। हमको चढ़ने दे।

कविता की पंक्तियाँ

गुरुजी ने चेले को आकर बुलाया,
तुरत कान में मंत्र कुछ गुनगुनाया।

झगड़ने लगे फिर गुरु और चेला,
भया उनमें धक्का बड़ा रेल-पेला ।

गुरु ने कहा-फाँसी पर मैं चढ़ूँगा,
कहा चेले ने - फाँसी पर मैं मरूँगा ।

आपकी कलम से

'अँधेर नगरी' एकांकी में आपको जो घटना सबसे अच्छी लगी हो उसे कहानी के रूप में लिखिए।

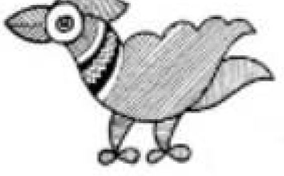

20. क्यों

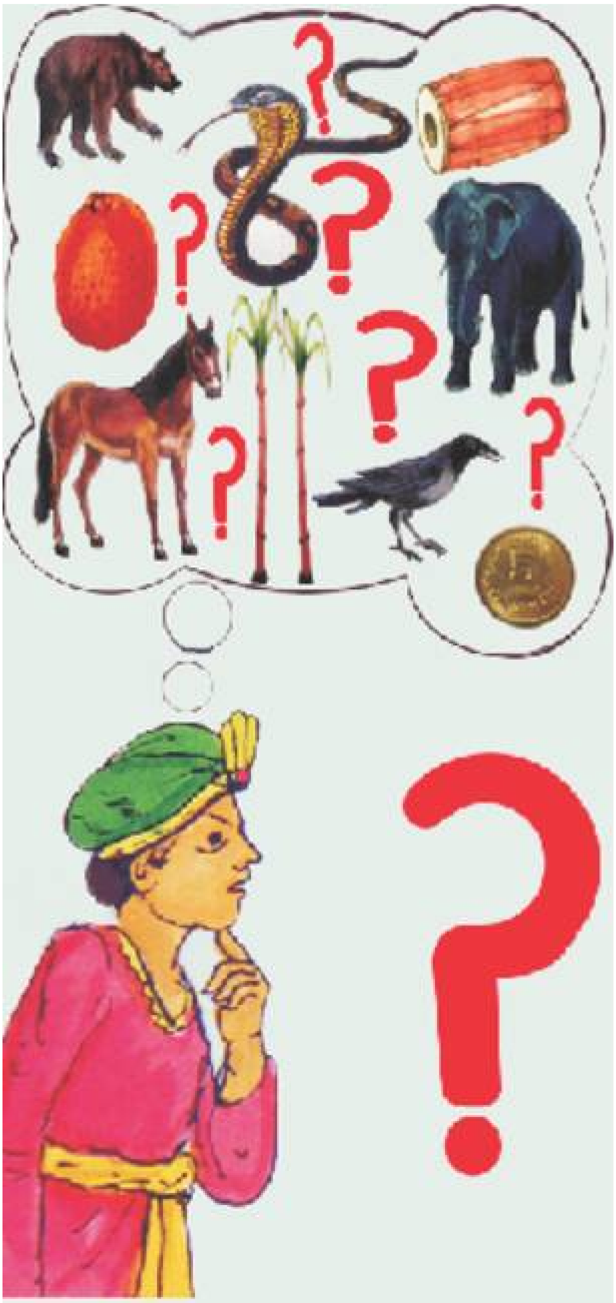

पूछूँ तुमसे एक सवाल
झट-पट उत्तर दो गोपाल
मुन्ना के क्यों गोरे गाल?
पहलवान क्यों ठोके ताल?
भालू के क्यों इतने बाल?
चले साँप क्यों तिरछी चाल?
नारंगी क्यों होती लाल?
घोड़े के क्यों-लगती नाल?
झरना क्यों बहता दिन-रात?
जाड़े में क्यों काँपे गात?
हफ्ते में क्यों दिन हैं सात?
बुड्ढों के क्यों टूटे दाँत?
ढम ढम ढम क्यों बोले ढोल?
पैसा क्यों होता है गोल?
मीठा क्यों होता है गन्ना?
क्यों चम चम चमकीला पन्ना?
बालक क्यों डरते सुन हौआ?
काँव काँव क्यों करता कौआ?
नानी को क्यों कहते नानी?
पानी को क्यों कहते पानी?
हाथी क्यों होता है काला?
दादी फेर रही क्यों माला?
पक कर फल क्यों होता पीला?
आसमान क्यों नीला-नीला?
आँख मूँद क्यों सोते हो तुम?
पिटने पर क्यों रोते हो तुम?

—श्री नाथ सिंह

बूझो तो जानें

1. पककर फल क्यों होता पीला ?

आम, केला आदि पकने के बाद पीले हो जाते हैं।

किसी ऐसे फल का नाम बताइए जो–

(क) पकने के बाद लाल हो जाता है ------------

(ख) पकने के बाद भी अपना रंग नहीं बदलता ------------

(ग) पकने के बाद जामुनी हो जाता है ------------

2. नानी को क्यों कहते नानी ?

बताइए, इन्हें क्या कहते हैं –

(क) माँ की माँ के बेटे को ------------

(ख) पिता के भाई के पिता को ------------

(ग) मौसी की बहन की माँ को ------------

3. मीठा क्यों होता है गन्ना ?

बताइए, इनका स्वाद कैसा होता है –

(क) नींबू ------------------

(ख) केला ------------------

(ग) करेला ------------------

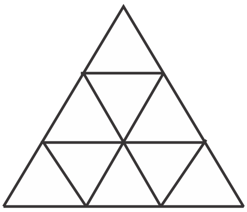

4. बताइए, इस आकृति में कितने त्रिभुज हैं–

आपके सवाल

आपके मन में भी कई सवाल उठते होंगे कि ऐसा क्यों होता है। आप भी क्यों वाले कोई पाँच सवाल लिखिए –

- --
- --
- --
- --
- --

21. ईद

रमज़ान का महीना शुरू हो गया था । लोग रोज़े रखने लगे थे। दस साल का नन्हा असलम भी रोज़ा रखने की ज़िद करने लगा। उसकी अम्मी ने उसे बहुत समझाया, ''बेटा अभी तुम बहुत छोटे हो। रोज़े में दिन भर कुछ भी नहीं खाया जाता। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है? जब तुम बड़े हो जाओगे, तब रोज़े रख लेना।''

इतना समझाने पर भी असलम नहीं माना । उसने तय कर लिया कि वह रोज़े ज़रूर रखेगा। उसने तो अपने लिए नए कपड़े पसंद भी कर लिए थे। रहीम चाचा की दुकान पर टँगा कुर्ता-पायजामा उसे बहुत पसंद था और उसके ऊपर टँगी ज़री की कढ़ाई वाली सदरी तो उसे अपनी तरफ खींचने लगती थी।

असलम अपनी अम्मी के साथ रहता था। उसके अब्बा का इंतकाल हो चुका था। उसके और कोई भाई-बहन नहीं थे। असलम की अम्मी दिन भर चिकन कपड़ों पर कढ़ाई करती थीं। उससे जो थोड़े-बहुत पैसे मिलते, उससे किसी तरह रूखी-सूखी रोटी और असलम की पढ़ाई चल रही थी।

असलम की अम्मी हमेशा सोचती कि असलम जब पढ़-लिख जाएगा और बड़ा होकर कमाने लगेगा, तो उनकी सारी परेशानियाँ दूर हो जाएँगी। इसीलिए वे घर की हालत ठीक न होने के बावजूद मेहनत करके असलम को पढ़ा रही थीं। असलम ने रोज़े रखने शुरू कर दिए थे। वह सुबह चार बजे अपनी अम्मी के साथ उठ जाता । जो कुछ थोड़ा बहुत अम्मी बना देतीं चुपचाप खा लेता। फिर दिन भर वह कुछ भी

नहीं खाता, पानी तक नहीं पीता। इसी बीच वह स्कूल भी जाता। यह देखकर उसकी अम्मी को चिंता होने लगती। वे असलम को समझातीं कि बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा–बहुत खाने की छूट होती है, पर वह नहीं मानता और शाम को अपनी अम्मी के साथ ही रोज़ा खोलता।

असलम ने अपनी अम्मी को बता दिया था कि वह इस बार ईद पर नए कपड़े ज़रूर लेगा। उसकी अम्मी भी चाहतीं थीं कि उनका बेटा ईद पर नए कपड़े पहने। पर, कहाँ से आए नए कपड़े? कैसे खरीदेंगे? उनकी हालत ऐसी नहीं थी।

एक दिन अपनी अम्मी के साथ बाज़ार जाते समय असलम ने रहीम चाचा की दुकान पर टँगे कपड़े अम्मी को दिखाए और ईद पर यही कपड़े लेने की ज़िद की। फिर वह अपनी अम्मी को खींचकर रहीम चाचा की दुकान पर ले गया। उसकी अम्मी ने डरते–डरते रहीम चाचा से कपड़ों के दाम पूछे । दो सौ रुपए सुनकर उनका कलेजा धक् से रह गया। वे चुपचाप असलम को लेकर घर वापस लौट आईं। रास्ते भर असलम उन कपड़ों की तारीफ करता रहा।

असलम की इच्छा और उन कपड़ों के प्रति उसका मोह देखकर असलम की अम्मी सोच में पड़ गईं। वे अपने बेटे का दिल तोड़ना नहीं चाहती थीं, पर दो सौ रुपए के कपड़े खरीदना उनके वश में नहीं था। आखिर उन्होंने बहुत सोच–विचारकर तय किया कि दो सौ रुपए नहीं तो कम से कम एक सौ रुपए का जुगाड़ करके वे असलम को ईद में नए कपड़े ज़रूर लेकर पहना देंगी।

अब असलम की अम्मी ने और अधिक काम करना शुरू कर दिया। वे सुबह जल्दी उठकर कढ़ाई का काम शुरू कर देतीं। दिन भर और फिर रात देर तक कढ़ाई करती रहतीं। एक तो रोज़ा, ऊपर से दुगुनी मेहनत, इसका असर उनकी सेहत पर पड़ने लगा। पर उन्हें तो ईद से पहले नए कपड़े खरीदने के लिए रुपए इकट्ठे करने की धुन सवार थी।

आज असलम बहुत खुश था । ईद में केवल एक दिन बाकी था और उसके हाथ में पूरे दो सौ रुपए थे। उसकी अम्मी ने दिन-रात एक करके पूरे दो सौ रुपए इकट्ठे कर लिए थे। उसकी अम्मी की तबीयत कुछ ठीक नहीं थी, इसलिए उन्होंने रुपये देकर असलम को रहीम चाचा की दुकान से नहीं कपड़े लेने भेज दिया।

रुपए लेकर असलम रहीम चाचा की दुकान की तरफ तेजी से बढ़ा चला जा रहा था। उसके मन में खुशी के लड्डू फूट रहे थे । वह तरह-तरह की कल्पनाओं में खोया हुआ था । वह सोचता जा रहा था कि कल सुबह वह नए कपड़े पहनकर ईदगाह जाएगा। अपने दोस्तों से ईद मिलेगा। उसके इतने अच्छे कपड़े देखकर सभी दोस्त दंग रह जाएँगे। इतने अच्छे कपड़े तो और किसी दोस्त के नहीं होंगे। वह सभी दोस्तों को बताएगा कि ये कपड़े उसे उसकी अम्मी ने दिलवाए हैं। इन्हीं ख्यालों में डूबा असलम रुपए लेकर तेज़ कदमों से चला जा रहा था।

अचानक असलम की चाल धीमी हो गई। वह कुछ उदास-सा हो गया। वह सोच में डूब गया। उसके सामने कल स्कूल में घटी घटना घूम गई। कल स्कूल में मोहन कितना रो रहा था। मोहन असलम की ही कक्षा में पढ़ता था। वह पढ़ने में बहुत तेज़ था। मोहन असलम का पक्का दोस्त था। दोनों कक्षा में एक ही साथ बैठते। मोहन बहुत गरीब घर का लड़का था। उसके पिता मज़दूरी करके किसी तरह घर का खर्च चलाते थे। मोहन की माँ नहीं थी और न ही कोई भाई-बहन। पिछले दो महीने से मोहन के पिता बहुत बीमार चल रहे थे, जिससे वे काम पर नहीं जा पाते थे। घर में दवा के लिए पैसे भी नहीं थे। और अब तो खाने के लिए भी घर में कुछ नहीं बचा था। अब उन बेचारों का क्या होगा?

असलम सोचने लगा कि कितनी मेहनत से रात-दिन एक करके उसकी अम्मी ने रुपए इकट्ठे किए हैं और वह इन्हें नए कपड़े खरीदकर एक दिन की खुशी के लिए खर्च कर देगा। अगर वह ये रुपए मोहन को दे दे तो उसके पिता की जान बच सकती है। वह अनाथ होने से बच जाएगा। वह पढ़ाई भी कर पाएगा। एक अच्छा दोस्त बिछुड़ने से बच जाएगा और अम्मी की मेहनत भी सफल हो जाएगी। ईद में अगर नए कपड़े नहीं पहने तो इससे क्या फ़र्क पड़ेगा। यह सब सोचकर असलम तेज़ी से मोहन

के घर की तरफ चल दिया। मोहन रुआँसा-सा चारपाई के पास बैठा था। उसके पिता चारपाई पर लेटे हुए थे। असलम को देखकर मोहन की आँखें फिर भर आईं।

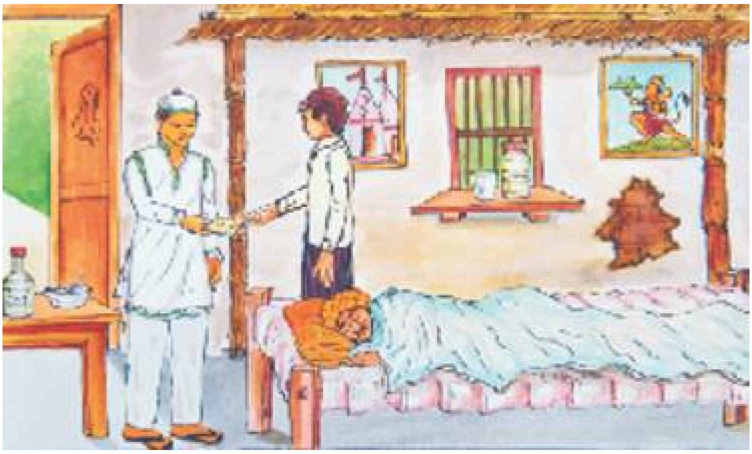

असलम ने मोहन को ढाँढ़स बँधाया और उसे रुपए देते हुए बोला, "दोस्त, इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ। असलम के पास इतने रुपए देखकर मोहन अवाक् रह गया। असलम ने उसे समझाते हुए कहा, "मोहन, ये रुपये बहुत ही मेहनत के हैं। मेरी अम्मी ने मुझे नए कपड़े खरीदने के लिए दिए थे। लेकिन इन रुपयों का इससे अच्छा दूसरा कोई उपयोग नहीं हो सकता।"

मोहन ने बहुत इनकार किया पर असलम नहीं माना। उसने ज़बरदस्ती रुपए मोहन की जेब में रख दिए। मोहन अपने आपको रोक नहीं सका। वह असलम से लिपटकर रोने लगा। उसे ऐसा लग रहा था, जैसे असलम के रूप में भगवान स्वयं उसकी मदद के लिए आए हों।

असलम जब वापस अपने घर पहुँचा तो उसकी अम्मी उसे खाली हाथ आया देखकर हैरान रह गईं। असलम ने जब पूरी बात अपनी अम्मी को बताई तो उनकी आँखें छलछला आईं। उन्होंने असलम को अपने सीने से लगा लिया। उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। उन्हें अपने इस नन्हें, लेकिन विचारों से बहुत बड़े, बेटे पर नाज़ होने लगा। वे बार-बार असलम का मुँह चूमने लगीं। असलम को भी अपनी ऐसी अम्मी पर नाज़ था।

उस रात असलम ने एक सपना देखा। अल्लाह उससे कह रहे हैं, ''असलम, तुम एक नेक इंसान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई।''

–श्री मुरलीधर

शब्दार्थ

इंतकाल	–	मृत्यु
उत्साह	–	जोश
उपयोग	–	व्यवहार, काम में लाना
सदरी	–	बिना बाँह का कुर्ता
तंगहाली	–	रुपये-पैसे की कमी।
अवाक्	–	स्तब्ध, हैरानी से चुप
नाज़	–	अभिमान, गर्व

अभ्यास

बातचीत के लिए

1. ईद क्यों मनाई जाती है? उस दिन क्या-क्या होता है?
2. क्या आपने असलम की तरह कभी अपने दोस्त की मदद की है या दोस्त से मदद ली है? बताएँ।
3. लोग कितने दिनों तक रोज़े रखते हैं एवं रोज़े में क्या करते हैं?
4. आप त्योहार पर अपने माता-पिता से क्या खरीदने के लिए कहते हैं?
5. रोज़े के दौरान असलम और उसकी अम्मी की दिनचर्या बताएँ।

पाठ से

1. असलम रोज़ा क्यों रखना चाहता था? रोज़ा न रखने के वास्ते उसकी अम्मी ने क्या दलीलें दीं?
2. असलम ने ईद पर पहनने के लिए कौन-से कपड़े कहाँ पसंद किए? उस कपड़े का कितना दाम था?
3. अम्मी के द्वारा दिए गए रुपयों का असलम ने क्या किया?
4. असलम ने मोहन की मदद क्यों की?

किसने, किससे कहा?

1. "बच्चों के लिए पानी पीने और थोड़ा-बहुत खाने की छूट होती है।"
   ------------------------------ ने ------------------------------ से कहा।
2. "इन रुपयों से अपने पिता का इलाज करवाओ।"
   ------------------------------ ने ------------------------------ से कहा।
3. असलम तुम एक नेक इन्सान हो, तुम मेरे बेटे हो, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। सच्ची ईद तुम्हीं ने मनाई है।"
   ------------------------------ ने ------------------------------से कहा।

पाठ से आगे

(1) असलम के स्थान पर आप होते तो अम्मी के दिए रुपयों का क्या करते? लिखिए।

(2) मुसलमानों का धार्मिक ग्रंथ कौन-सा है और मुसलमान हज करने के लिए कहाँ जाते हैं? पता कीजिए।

आपकी अम्मी

असलम की अम्मी ने उसे ईद पर नए कपड़े दिलवाने के लिए दिन-रात मेहनत की।

1. क्या आपकी माँ आप की बात पूरी करने के लिए बहुत मेहनत करती हैं? बताइए।
2. आपकी माँ दिन भर क्या-क्या काम करती है? उनके कामों की एक सूची बनाइए।

भाषा के नियम

1. **रेखांकित शब्द का विलोम (उल्टा) शब्द रिक्त स्थान में भरें–**

(क) असलम सबसे ज्यादा <u>प्रसन्न</u> था, न कि ....।

(ख) उसका दोस्त <u>गरीब</u> था, न कि ....।

(ग) चलते-चलते बाज़ार <u>निकट</u> आ गया और गाँव .... हो गया।

(घ) कभी <u>आसमान</u> पर जाते मालूम होते हो तो कभी .... पर गिरते हुए।

2. **कभी-कभी शब्दों का प्रयोग जोड़े के रूप में किया जाता है, जैसे देवी-देवता, टूटी-फूटी, धीरे-धीरे आदि। यहाँ पर दोनों शब्दों के अर्थ हैं, परंतु कुछ निरर्थक शब्दों के साथ भी जोड़े बनते हैं, जैसे- चाय-वाय।**

इस प्रकार के तीन जोड़े बनाइए–

....

३. नाज-नाज़

- गोदाम में **नाज** भरा हुआ था।
- अम्मी को असलम पर **नाज़** था।

पहले वाक्य में 'नाज' शब्द का मतलब है- अनाज। दूसरे वाक्य में 'नाज़' का मतलब है-गर्व होना। दोनों शब्दों में केवल नुक्ता (.) का अंतर है। इससे शब्द का मतलब बदल जाता है।

(क) नीचे दिए गए शब्दों को बोल-बोलकर पढ़िए और इनके बीच के अंतर को समझिए–

- तेज – तेज़
- राज – राज़
- जरा – ज़रा
- जंग – ज़ंग
- जमाना – ज़माना
- सजा – सज़ा
- गज – गज़

(ख) सही शब्द से वाक्य पूरा कीजिए –

(i) असलम ने अम्मी को ------------ की बात बताई। (राज/राज़)

(ii) अम्मी कढ़ाई के ------------ में माहिर थीं। (फन/फ़न)

(iii) ईद पर पूरा बाज़ार ------------ हुआ था। (सजा/सज़ा)

(iv) पुराने ------------ में हरकारा चिट्ठी पहुँचाता था। (जमाने/ज़माने)

(v) दोनों राजाओं में ------------ छिड़ गई (जंग/ज़ंग)

(vi) घोड़ा बहुत ------------ दौड़ने लगा। (तेज/तेज़)

करके देखें

1. विभिन्न पर्व त्योहारों से संबंधित चित्र/लेख ढूँढ़ें एवं कक्षा में प्रदर्शित करें।
2. प्रेमचंद की प्रसिद्ध कहानी 'ईदगाह' पढ़िए। बताइए कि दोनों में क्या समानता और अन्तर है?

आपकी कहानी

दिए गए चित्र के आधार पर एक कहानी लिखिए-

Developed by: www.absol.in

22. परीक्षा

आचार्य चरक आयुर्वेद के महान जानकार थे। घने जंगल में उनका आश्रम था। हर साल बहुत सारे विद्यार्थी उनके आश्रम में आयुर्वेद व जड़ी-बूटियों का ज्ञान प्राप्त करने आते थे।

वे प्रत्येक दिन शिष्यों को वनस्पतियों के बारे में जानकारी देते थे। हर पूर्णिमा की रात वे अपने शिष्यों को लेकर जंगल में निकल पड़ते, क्योंकि कुछ बूटियाँ चाँदनी रात में ही पहचानी जा सकती थीं।

ऐसे में जंगली जानवरों का भय भी होता था। एक तो रात, ऊपर से तरह-तरह की डरावनी आवाज़ें- ये सब मिलकर भय का वातावरण बनाती थीं। कुछ विद्यार्थी तो डर के मारे बीच में ही पढ़ाई छोड़कर भाग जाते थे। आचार्य चरक कहते –"अच्छा हुआ कि डरपोकों ने मेरा समय नष्ट नहीं किया। जो मौत से डर गए वे वैद्य क्या बनेंगे? वैद्य का तो काम ही मौत से लड़ना है। मृत्यु पर विजय पाना है।"

वे परीक्षा भी इतनी कड़ी लेते कि सैकड़ों में कुछ ही विद्यार्थी उत्तीर्ण होते । जो उत्तीर्ण होते वे चारों ओर उनका यश फैलाते। लोगों को विभिन्न रोगों से मुक्ति दिलाते।

आचार्य चरक ने एक बार की परीक्षा में अपने विद्यार्थियों से कहा–"मैं तुम्हें 30 दिन का समय देता हूँ। इन 30 दिनों में तुम्हें सारे जंगल छान मारने होंगे और उन जड़ी–बूटियों को लाना होगा, जिनका आयुर्वेद में कोई उपयोग नहीं होता।"

सभी विद्यार्थी चारों दिशाओं की ओर दौड़ पड़े। कुछ विद्यार्थियों को घास–फूस और कँटीली झाड़ियाँ व्यर्थ लगीं। वे उन्हें झोली में भरकर ले आए। कुछ ने वृक्षों की छालें व पत्तियाँ आदि इकट्ठी कीं, जिनकी कोई दवा नहीं बनती थी। कुछ विद्यार्थियों ने ज़्यादा छानबीन की और ज़हरीले फल और तने लाए, जिन्हें खाने से जीवों की मृत्यु होती थी। कुछ अधिक परिश्रमी शिष्यों ने जड़ें भी खोदकर इकट्ठी कर लीं।

बीस दिन के बाद सभी शिष्यों ने अपनी-अपनी जमा की गई जड़ी-बूटियाँ दिखाईं। चरक ने सभी की लाई चीज़ें देखीं। पर वे संतुष्ट नहीं हुए।

उनतीसवें दिन तक केवल एक को छोड़कर सभी शिष्य लौट आए। सभी कुछ न कुछ बीनकर लाए थे। अंतिम शिष्य तीसवें दिन लौटा, वह भी खाली हाथ। वह एक भी वनस्पति नहीं ला पाया था। उसे देख सारे शिष्य हँस पड़े । चरक ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उस शिष्य को देखा। वह बोला–"गुरुदेव मुझे सारे जंगल में एक भी ऐसी वनस्पति नहीं मिली जो आयुर्वेद के काम न आती हो या बेकार हो।"

चरक ने घोषणा की – "इस वर्ष यही विद्यार्थी उत्तीर्ण हुआ है। सचमुच जंगल में ऐसी कोई वनस्पति नहीं है, जो बेकार हो। अगर हम किसी वनस्पति का उपयोग नहीं कर पा रहे हैं, तो उसका अर्थ यही है कि हम उसके गुणों को अभी पहचान नहीं पाए हैं। हमारा ज्ञान उसके बारे में अधूरा है।"

शब्दार्थ

आयुर्वेद	–	एक तरह की चिकित्सा पद्धति
आश्रम	–	जहाँ रहकर शिष्य विद्या अध्ययन करते थे
वैद्य	–	चिकित्सा करने वाले
शिष्य	–	छात्र
वनस्पति	–	पेड़–पौधे

अभ्यास

परीक्षा के बहाने

1. परीक्षा शब्द सुनते ही आपको कैसा लगता है?
2. परीक्षा के दिनों में आपकी दिनचर्या में क्या बदलाव आता है?
3. परीक्षा क्यों ली जाती है?
4. अगर आपको परीक्षा में बदलाव लाने का अवसर दिया जाए तो आप उसमें क्या–क्या बदलाव लाएँगे और क्यों?
5. अपना परीक्षा–परिणाम आप सबसे पहले किसे बताते हैं और क्यों?

पाठ में से

1. गुरु जी का क्या नाम था? वे किस विषय के जानकार थे?
2. गुरु जी पूर्णिमा की रात शिष्यों को जंगल में क्यों ले जाते थे?

3. कुछ शिष्य बीच में ही पढ़ाई छोड़कर क्यों भाग जाते थे? सही उत्तर पर (✓) लगाएँ।

(क) पढ़ाई कठिन थी। ☐

(ख) गुरु जी डाँटते थे। ☐

(ग) रात में सोने को नहीं मिलता था। ☐

(घ) रात को जंगल में डर लगता था। ☐

4. गुरु जी ने शिष्यों को परीक्षा के लिए 30 दिनों का समय क्यों दिया होगा?
5. परीक्षा में शिष्यों को क्या करना था?
6. परीक्षा में केवल एक ही शिष्य उत्तीर्ण हुआ। क्यों?

सोच-समझकर

1. गुरु जी ने शिष्यों को परीक्षा के लिए 30 दिन दिए। आपको परीक्षा के लिए कितने दिन मिलते हैं? क्या उतने दिन काफ़ी हैं? सोचकर बताएँ।
2. गुरु जी परीक्षा के माध्यम से शिष्यों को क्या समझाना चाहते थे?
3. आयुर्वेद में किस विषय के बारे में बात की जाती है?
4. इस पाठ का शीर्षक परीक्षा क्यों रखा गया होगा?
5. आप इस कहानी के लिए कौन-सा शीर्षक रखेंगे? कोई दो शीर्षक बताइए। साथ ही यह भी बताइए कि आपने ये शीर्षक क्यों चुने।

   मेरा शीर्षक- ....

समझ की बात

1. पढ़ाई छोड़कर जाने वाले शिष्यों के लिए गुरु जी ऐसा क्यों कहते थे-" अच्छा हुआ कि डरपोकों ने मेरा समय नष्ट नहीं किया।"

Developed by: ABSOL www.absol.in

2. **आपको कब-कब लगता है कि आपका समय नष्ट हो रहा है? (✓) का निशान लगाइए -**

(क)	खेलने में	☐
(ख)	पढ़ाई करने में	☐
(ग)	टी.वी. देखने में	☐
(घ)	स्कूल आने-जाने में	☐
(ङ)	घर के लिए सामान खरीदने में	☐
(च)	घर का काम करने में	☐
(छ)	सोने में	☐
(ज)	दोस्तों के साथ घूमने-फिरने में	☐
(झ)	पानी भरने में	☐
(ट)	पेंसिल ढूँढ़ने में	☐

3. **आपके घर में कौन, कितने समय काम और कितने समय आराम करता है? तालिका में लिखिए -(समय घंटे, मिनट में लिखिए)**

व्यक्ति	काम करना	आराम करना
मैं		
माँ		
पिताजी		
भाई		
बहन		
मित्र		

4. **आपके बुजुर्ग अक्सर आपसे कहते होंगे -**

- पढ़ लो, समय बर्बाद मत करो, बीता हुआ समय फिर वापस नहीं आता ।
- समय की कद्र करना सीखो। यूँ इधर-उधर समय क्यों गँवा रहे हो? आदि।

(क) क्या उनका ऐसा कहना ठीक है? क्यों?

(ख) जब वे ऐसा कहते हैं तो आपको कैसा लगता है?

(ग) किसी ऐसी घटना के बारे में बताइए जब आपने समय का ध्यान नहीं रखा और आपको कोई परेशानी उठानी पड़ी हो।

अनुमान और कल्पना

ऐसे में जंगली जानवरों का भय भी होता था।

1. जंगल में कौन-कौन से जानवर होते होंगे?
2. चाँदनी रात में पहचानी जा सकने वाली जड़ी-बूटियों में कौन-सी खास बात होती होगी?
3. चरक ने अंतिम शिष्य को प्रश्नसूचक दृष्टि से क्यों देखा होगा?

आस-पास

1. क्या आपके आस-पास ऐसा कोई पेड़-पौधा है जो किसी तरह का नुकसान पहुँचाता है?

2. नीचे दिए गए पेड़-पौधे के लाभ बताइए –

(i) नीम

(ii) तुलसी

(iii) चिरैता

(iv) अर्जुन

3. आयुर्वेद रोगों के इलाज की एक पद्धति है। इसके बारे में शिक्षक या अन्य बड़े व्यक्तियों से पता कीजिए और कक्षा में बताइए।

शब्दों की दुनिया

1. नीचे दिए गए शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए –

- वृक्ष – ------------ ------------
- जंगल – ------------ ------------
- शिष्य – ------------ ------------

- रात – ------------ ------------
- गुरु – ------------ ------------

2. **'सभी कुछ-न-कुछ बीनकर लाए थे।'** यहाँ 'बीनना' का क्या अर्थ है?

(i) इन शब्दों के प्रयोग में क्या अंतर है?
उठाना, लाना, बीनना, छाँटना

(ii) नीचे दिए गए वाक्यों में इन शब्दों का सही रूप के साथ प्रयोग कीजिए-
(क) मैंने आलू ------------ अलग कर दिया।
(ख) पिताजी चावल ------------ रहे थे।
(ग) शीला ने चादर ------------ ------------।
(घ) नंदू क्या ------------ है?
(ङ) गाँववाले जलावन के लिए सूखी लकड़ियाँ ------------ गए हैं।
(च) सामान में से सब्जी और दालें ------------ अलग कर दो।

भाषा के नियम

1. **नीचे दिए गए वाक्यों में कौन-सा काल आया है। लिखिए-**

भूतकाल, वर्तमानकाल, भविष्यत्काल
(क) मैं तुम्हें 30 दिन का समय देता हूँ। ------------
(ख) वैद्य का तो कार्य ही मौत से लड़ना है। ------------
(ग) आचार्य चरक आयुर्वेद के महान जानकार थे। ------------
(घ) तुम्हें सारे जंगल छान मारने होंगे। ------------
(ङ) सभी कुछ-न-कुछ बीनकर लाए थे। ------------

2. **'यश'** शब्द में **'सु'** या **'अप'** जोड़ने से नए शब्द बनते हैं- **'सुयश'**, **'अपयश।'** **नीचे दिए गए शब्दों को जोड़ते हुए नए शब्द बनाइए-**
(क) सु कन्या ------------
(ख) सु पुत्र – ------------
(ग) अन + देखा – ------------

(घ) अन – पढ़ = ------------------------

(ङ) प्र + काश – ------------------------

(च) प्र – देश – ------------------------

(छ) अ शांति ------------------------

(ज) अ । न्याय ------------------------

3. नीचे दिए गए शब्द-समूह में से सही शब्द पर घेरा लगाइए–

(क) आर्युवेद	आयुर्वेद	आयुवेर्द
(ख) पूणिमा	पूर्णिमा	पूणिर्मा
(ग) उर्त्तीण	उत्तीर्ण	उत्तीण

4. नीचे दिए गए शब्दों को अलग-अलग समूह में छाँटकर लिखिए–
हर समूह में एक-एक शब्द अपनी ओर से भी लिखिए–

परीक्षा	विद्यालय	उत्तीर्ण	मृत्यु	पद्य
मृग	क्षण	परिश्रम	आयुर्वेद	प्रकृति
वर्ष	आश्रम	क्षमा	श्रमिक	उद्योग

शब्द-समूह				
क्ष	द्य	श्र	ऋ	(र्‍)/र्

कुछ करने के लिए

1. क्या परीक्षा में पुस्तक खोलकर देखने की अनुमति होनी चाहिए। अपने विचार बताइए।
2. 'परीक्षा' पाठ में से ऐसे प्रश्न लिखिए जो आपसे परीक्षा में पूछे जाने चाहिए।

23. मिथिला-चित्रकला

मिथिला या मधुबनी चित्रकला मिथिलांचल क्षेत्र जैसे-बिहार के दरभंगा, मधुबनी एवं नेपाल के कुछ क्षेत्रों की प्रमुख चित्रकला है। प्रारंभ में रंगोली के रूप में रहने के बाद यह कला धीरे-धीरे आधुनिक रूप में कपड़ों, दीवारों एवं कागज़ पर उतर आई है। मिथिला की औरतों द्वारा शुरू की गई इस घरेलू चित्रकला को पुरुषों ने भी अपना लिया है।

माना जाता है कि इस चित्रकला को राजा जनक ने राम-सीता के विवाह के दौरान महिला कलाकारों से बनवाई थी। आज मिथिलांचल के कई गाँवों की महिलाएँ इस कला में दक्ष हैं। अपने असली रूप में तो ये चित्रकला गाँवों की मिट्टी से लीपी गई झोंपड़ियों में देखने को मिलती थी, लेकिन इसे अब कपड़े या फिर कागज़ पर खूब बनाया जाता है।

इस चित्रकला में ख़ास तौर पर हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरें, प्राकृतिक नज़ारे जैसे-सूर्य व चंद्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे, जैसे-तुलसी और विवाह के दृश्य देखने को मिलेंगे। मधुबनी चित्रकला दो तरह की होती हैं- भित्ति चित्र और अरिपन या अल्पना।

भित्ति चित्र को मिट्टी से पुती दीवारों पर बनाया जाता है। इसे घर की तीन खास जगहों पर ही बनाने की परंपरा है, जैसे-भगवान व विवाहितों के कमरे में और शादी या किसी खास उत्सव पर घर की बाहरी दीवारों पर। मधुबनी चित्रकला में जिन

देवी-देवताओं को दिखाया जाता है, वे हैं-माँ दुर्गा, काली, सीता-राम, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती, गौरी-गणेश और विष्णु के दस अवतार। इन तस्वीरों के अलावा कई प्राकृतिक और रम्य नज़ारों का भी चित्र बनाया जाता है। जानवरों, चिड़ियाँ, फूल-पत्ती को स्वास्तिक की निशानी के साथ सजाया-सँवारा जाता है।

मधुबनी चित्रकला में चटख रंगों का इस्तेमाल खूब किया जाता है, जैसे-गहरा लाल रंग, हरा, नीला और काला। कुछ हल्के रंगों से भी चित्रकला में निखार लाया जाता है, जैसे-पीला, गुलाबी और नींबू रंग। यह जानकर हैरानी होगी कि इन रंगों को घरेलू चीजों से ही बनाया जाता है, जैसे- हल्दी, केले के पत्ते और दूध। भित्ति चित्रों के अलावा अल्पना का भी बिहार में काफी चलन है। इसे बैठक या फिर दरवाज़े के बाहर बनाया जाता है। पहले इसे इसलिए बनाया जाता था ताकि खेतों में फसल की पैदावार अच्छी हो। लेकिन, आजकल इसे घर में शुभ कामों में बनाया जाता है।

सदियों पुरानी कला के इस रूप को देश-विदेश की मुख्यधारा में लाने का श्रेय अनेक विद्वानों और कलाप्रेमियों को जाता है। भारतीय प्रशासनिक सेवा के ब्रिटिश अधिकारी डब्लू. जी. आर्चर 1930 के दशक में तस्वीरों के माध्यम से मिथिला चित्रकला को पहली बार दुनिया के सामने लाए। पच्चीस सालों से मिथिला चित्रकला का प्रचार-प्रसार कर रही संस्था के अध्यक्ष प्रो॰ डेविड सेण्टन कहते हैं, "मिथिला चित्रकला में अपार संभावनाएँ हैं। जरूरत है प्रतिभाओं को पहचान कर उन्हें अनुकूल सुविधाएँ मुहैया कराए जाने की।"

इस संस्था ने सन् 2003 में मधुबनी में मिथिला कला संस्थान की स्थापना की। यह संस्थान हर साल बीस छात्रों को छात्रवृत्ति देकर मिथिला चित्रकला को प्रोत्साहित करता है।

संस्थान के निदेशक चित्रकार संतोष कुमार दास कहते हैं, "गंगा देवी और सीता देवी की राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के बाद जिस तरह से इस कला को प्रोत्साहन मिलना चाहिए था, वह नहीं मिल पाया। शिक्षा और मूलभूत सुविधाओं के अभाव में कलाकार किसी तरह इस पुराने कला के रूप को बचाए हुए हैं। महिलाओं की विशेष उपस्थिति इस चित्रकला की विशेषता रही है। पीढ़ी दर पीढ़ी परंपरा के रूप में इन्होंने इसे बचाए रखा।"

मिथिला चित्रकला में अब प्राकृतिक रंगों के बदले एक्रिलिक रंगों का प्रयोग होने लगा है। इससे चित्रकला के जल्दी बिखरने का खतरा नहीं रहता है। मधुबनी चित्रकला में आज भी मिथिलांचल की मिट्टी की खुशबू अपने आप ही निखरने लगती है।

–पाठ्यपुस्तक विकास समिति

आपकी कलाकारी

अब तक आपने मधुबनी चित्रकला के बारे में बहुत कुछ जान-समझ लिया होगा। आप भी मधुबनी शैली में चित्र बनाइए और रंग भरिए-

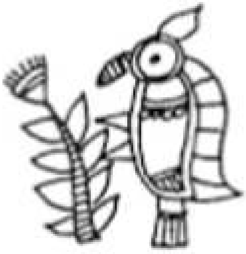

रंगों की दुनिया : वरली शैली

आप बिहार की मधुबनी चित्रकला के बारे में जान चुके हैं। इसी प्रकार वरली चित्रकला महाराष्ट्र में बहुत प्रचलित है। नीचे दिए गए चित्र वरली शैली में हैं। आप इसे भी बनाने का अभ्यास कीजिए –

Developed by: ABSOL www.absol.in